सरल, सुगम, संक्षिप्त

व्याकरण

सुरेश कुमार मिश्रा

सरल, सुगम व संक्षिप्त

व्याकरण

सुरेश कुमार मिश्रा

प्रकाशक

बापूजी ग्राफिक्स, तेनाली

ISBN : 978-93-5268-532-5

मूल्य : रु.

Copy Rights Reserved To : सुरेश कुमार मिश्रा

पहला संस्करण : वर्ष 2015

प्रकाशक : बापूजी ग्राफिक्स, तेनाली

SARAL, SUGAM VA SANKSHIPTA VYAKARAN
Written by Suresh Kumar Mishra

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में, पुनरत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

दो शब्द

दक्षिण भारत के राज्यों में हिंदी भाषा का अध्यापन कठिन कार्य है। विशेषकर जिनकी मातृभाषाएँ तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम या कुछ और हो। ऐसी स्थिति में यहाँ हिंदी का अध्यापकन करना उतना आसान नहीं होता। इसीलिए इन राज्यों में हिंदी अध्यापन को सरल बनाने के लिए सरल, सुगम, संक्षिप्त व्याकरण शीर्षकीय पुस्तक की रचना को मैंने महत्वपूर्ण समझा। इस पुस्तक में पाठशाला स्तर पर छात्रों और अध्यापकों की स्थिति को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक के अभ्यास से हिंदी बोलने व थोड़ा-बहुत पढ़ने-लिखने की जानकारी रखने वाले व्यक्ति को भी हिंदी व्याकरण आसानी से आएगा। इस पुस्तक की सहायता से अध्यापक अपने छात्रों को शत प्रतिशत पूरे अंक प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही छात्रों को भी पूरा लाभ मिलेगा।

आशा करता हूँ कि जब भी इस पुस्तक से आपको किसी प्रकार की सहायता मिलेगी, आप मुझे अवश्य याद करेंगे।

सुरेश कुमार मिश्रा

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ सं.
1.	**व्याकरण अवश्य पढ़ें**	1
2.	**हिन्दी ध्वनियाँ और वर्णमाला**	3
3.	**लेखन (वर्तनी)**	4
4.	**शब्द-विचार**	7
	अर्थ के आधार पर शब्द	9
	अनेकार्थी शब्द	9
	समानार्थी शब्द	10
	विपरीतार्थी शब्द	12
	भिन्नार्थक शब्द	14
	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	18
	ध्वनिबोधक शब्द	19
5.	**शब्द-रचना**	21
	संधि	21
	समास	32
	उपसर्ग	42
	प्रत्यय	45
	भाववाचक संज्ञाओं की रचना	50
	विशेषणों की रचना	51
6.	**रूप-विचार**	54
	संज्ञा	55
	लिंग	58
	वचन	67
	कारक-विभक्ति (परसर्ग)	71

अध्याय	विषय	पृष्ठ सं.
	सर्वनाम	88
	विशेषण	93
	क्रिया	96
	रचना के आधार पर क्रिया	96
	कर्म के आधार पर क्रिया	96
	क्रिया की पूर्णता-अपूर्णता के आधार पर क्रिया	97
	संयुक्त क्रिया	98
	वाच्य	98
	प्रयोग	100
	प्रेरणार्थक क्रिया	100
	काल	104
	अव्यय	111
	क्रिया - विशेषण	111
	संबंधबोधक अव्यय	113
	समुच्चयबोधक अव्यय	115
	विस्मयादिबोधक अव्यय	115
7.	**वाक्य - विचार**	118
	पदबंध	118
	उपवाक्य	120
	वाक्य के अवयव	122
	रचना की दृष्टि से वाक्य	123
	अर्थ की दृष्टि से वाक्य	125
8.	**विराम चिह्न**	128
9.	**अनुवाद**	134
10.	**निबंध-लेखन**	145
11.	**अपठित पाठ**	147
12.	**मुहावरे और कहावतें**	150

♦

अध्याय - 1

व्याकरण अवश्य पढ़ें

(व्याकरण का सही उपयोग)

हम व्याकरण के नियमों को जानकर ही भाषा का सही प्रयोग कर सकते हैं । इससे बोलने और लिखने में गलती नहीं होगी । इससे हम अपनी बात को अधिक साफ और सरल ढंग से कह सकेंगे । भाषा के तीन अंग हैं – ध्वनि, शब्द या पद, तथा वाक्य । इन सबके बारे में अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लेना जरूरी है ।

हर ध्वनि का उच्चारण कैसे और कहाँ से होता है, यह ठीक-ठीक जान लें ताकि उसका उच्चारण आप शुद्ध रूप से कर सकें ।

इसी प्रकार प्रत्येक वर्ण और अक्षर आप शुद्ध रूप से कर सकें । विशेष रूप से मात्राओं और संयुक्त व्यंजनों को शुद्ध लिखना जरूरी है । आपकी हस्तलिपि सुन्दर हो, इसकी कोशिश करें । चन्द्रबिंदु और अनुस्वार का सही प्रयोग करें । कई शब्दों में अनुस्वार का उपयोग होता है, इसका ख्याल रखें । हिंदी में निम्न ध्वनियों का उच्चारण ठीक से सीखना जरूरी है –

ऋ, ऐ, औ, ज, य, ब, व, ल, श, ष, स, क्ष, ज्ञ आदि ।

खास बात यह है कि अनेक ध्वनियों का उच्चारण ओड़िआ उच्चारण से भिन्न है । इसे ठीक से समझ लेना चाहिए । ऐसा प्रयत्न करें कि हमारी बोली और लिखित भाषा स्वाभाविक लगे ।

निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें –

(१) ह्रस्व स्वर और उनकी मात्रा का लघु उच्चारण करें । लेकिन दीर्घस्वर और उनकी मात्राओं का उच्चारण लम्बा करें अथवा बल लगाकर करें ।

(२) लिखते समय शब्दों के रूप को ठीक से देखें, उसे याद रखें और सही मात्रा लगाकर लिखें । ऊपरी नजर से शब्द की वर्तनी को देखने से भूलें होती हैं । अत: सावधान रहें ।

(३) हिंदी में 'ऋ' का उच्चारण 'रि' होता है, ओड़िआ की तरह 'रु' नहीं होता । ऐ और औ का उच्चारण मूल स्वर की तरह होता है, 'अइ' औ 'अउ' की तरह संयुक्त स्वर की तरह नहीं ।

(४) हिंदी में ज और य (इअ) दो ध्वनियाँ हैं । इनका उच्चारण सीखें । ओड़िआ की तरह हिंदी में एक और य ध्वनि नहीं है ।

(५) हिंदी में कहाँ पर 'ब' और कहाँ पर 'व' का प्रयोग होता है, देख लें । व्यवहार करते समय सावधानी बरतें ।

(६) हिंदी में ओड़िया वाली 'ळ' ध्वनि नहीं है । सब 'ल' है ।

(७) यह जान लें कि हिंदी में 'श' तालव्य है और 'स' वत्स्र्य ।

(८) हिंदी में शब्द के अन्त का 'अ' उच्चारण नहीं होता, हलन्त उच्चारण होता है । जैसे – कमल्, कलम् ।

(९) प्रत्येक भाषा का अपना एक लहज़ा होता है । यह शब्द और वाक्य दोनों स्तरों पर होता है । रेडियो और टेलिविज़न के कार्यक्रमों से हिंदी बोलने की शैली सीखने का लाभ उठाइए ।

(१०) हिंदी बोलते समय वक्ता या कहनेवाला कभी दीर्घ मात्राओं पर बल देता है तो कभी किसी शब्द पर । इसे बलाघात कहते हैं, जैसे –

– 'राष्ट्रपति' शब्द का उच्चारण करते समय 'रा' पर बल पड़ता है ।

– कभी कर्ता पद पर, कभी कर्म पद पर और कभी क्रिया पद पर बल पड़ता है ।

– पूरे वाक्य को एक लहर में बोला जाता है ।

– वाक्यों को भी बोलने का ढंग होता है, इसे सीखिए ।

– - ● - –

अध्याय - 2

हिन्दी ध्वनियाँ और वर्णमाला

ध्वनियों के लिखित समूह को वर्णमाला कहते हैं। यह हिंदी की वर्णमाला है –

स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

व्यंजन 'क' वर्ग	–	क	ख	ग	घ	ङ
'च' वर्ग	–	च	छ	ज	झ	ञ
'ट' वर्ग	–	ट	ठ	ड	ढ	ण (ड़, ढ़)
'त' वर्ग	–	त	थ	द	ध	न
'प' वर्ग	–	प	फ	ब	भ	म
अन्तस्थ	–	य	र	ल	व	
ऊष्म	–	श	ष	स	ह	
संयुक्त व्यंजन	–	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र	

अयोगवाह : ' ं ' (अनुसार) ' **:** ' (विसर्ग)

(अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर और आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घस्वर हैं।

- हम अन्य संयुक्त व्यंजन तीन प्रकार से लिखते हैं।

  1. पाई वाले वर्ण की पाई हटाकर ; जैसे कच्चा, ग्लानि।
  2. बिना पाई वाले वर्ण में हल मात्रा (्) देकर, दैसे – चिट्‌ठी, हड्‌डी, पाठ्‌य।
  3. हुक वाले वर्ण का हुक हटाकर, जैसे – पक्का, हफ्ता।

- कुछ संयुक्त व्यंजन दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं – ट्ट, ड्ड, द्ध, द्भ, द्द, द्य, ह्व, ह्ल, ह्य, ह्म। इनमें से प्रथम व्यंजन में हल मात्रा (्) देकर लिखने का अभ्यास करें – ट्‌ट, ड्‌ड, द्‌ध, द्‌भ, द्‌द, द्‌य, ह्‌व, ह्‌ल, ह्‌य, ह्‌म

- **अ, ऋ, छ, झ, ण, ध, भ, ल, श, क्ष**

  का प्रयोग न करके अ, ऋ, छ, झ, ण, ध, भ, श, क्ष का प्रयोग करें।

अध्याय - 3

लेखन (वर्तनी)

लिखते समय निम्न बातों पर ध्यान दें :

हिन्दी की ध्वनियाँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं । इन्हें लिखने का एक विशेष तरीका है । इन लिपियों को बाएँ से दाहिने तथा ऊपर से नीचे लिखा जाता है । लिपियों को लिखते समय निम्न कुछ बातों पर ध्यान रखना चाहिए :

1. खड़ी रेखा सीधी होती है और ऊपर से नीचे आती है ।
2. खड़ी रेखा बड़ी और मात्राएँ छोटी होती हैं । मात्राएँ खड़ी रेखा से ऊँचाई में कभी भी बड़ी नहीं होनी चाहिए । मात्राएँ खड़ी रेखा की आधी ही होनी चाहिए ।
3. शिरोरेखा बाएँ से दाहिने की ओर जाती है और एक शब्द के सभी वर्णों को जोड़ती है । किन्तु जिन शब्दों में 'अ, आ, थ, ध, भ, श्र, क्ष और : (विसर्ग) का प्रयोग होता है, वहाँ शिरोरेखा खंडित होती है ।
4. वर्ण को बनानेवाले गोल या अर्द्धगोल का आकार खड़ी रेखा का आधा या उससे कम ही हो सकता है । इस अर्द्धगोल को खड़ी रेखा के मध्य में ही जोड़ा जाना चाहिए ।
5. दो शब्दों की दूरी खड़ी रेखा की ऊँचाई के बराबर होनी चाहिए ।

- **कारक चिह्न लेखन –**

  कारक चिन्हों को सर्वनाम शब्दों के साथ सटाकर और अन्य शब्दों से हटाकर लिखा जाता है ; जैसे - मैंने, उसको, राम ने, नदी में ।

- **हल् चिह्न लेखन –**

  शब्दान्त में 'अ' का लोप हिन्दी की प्रवृत्ति है । हिन्दी में शब्द के अन्त में 'हल्' चिह्न नहीं दिया जाता लेकिन संस्कृत के जो शब्द मूलत: हल् चिह्न युक्त हैं, उनमें यह चिह्न लगाना अनिवार्य है; जैसे – भविष्यत् , पृथक्, विधिवत् , सत् , जगत् , प्राक् आदि ।

- **ड, ढ – ड़, ढ़ का लेखन –**

निम्न स्थितियों में ड, ढ का प्रयोग होता है –

(i) शब्द के आरंभ में, जैसे – डाली, डमरू, ढोल, ढक्कन ।

(ii) संयुक्ताक्षर में, जैसे – लड्डू, उड्डयन, बुड्ढा ।

(iii) उपसर्ग के बाद, जैसे – सुडौल, बेढंगा, निढाल ।

(iv) अंग्रेजी से आए शब्दों में, जैसे – रेडियो, पैड ।

निम्न स्थितियों में ड़ ढ़ का प्रयोग होता है –

(i) शब्द के मध्य में, जैसे – पड़ताल, छोड़ना, कढ़ी, बढ़ना ।

(ii) शब्द के अन्त में, जैसे – जड़, रगड़, बाढ़, अनपढ़ ।

- **'र' का लेखन –**

'र' के चार रूप हैं – र , ्र , र्, ्र

(i) 'र' के पूर्व कोई व्यंजन न हो तो 'र' पूरा लिखा जाता है ।

जैसे – रज, सरस, सार

(ii) 'र' के पूर्व पाईवाला व्यंजन हो तो 'र' का ्र रूप लिखा जाता है ।

जैसे – क्र, ग्र, प्र, ब्र, स्र ।।

(iii) 'र' कं पूर्व 'श' हो तो उसका रूप – श्र हाता है ।

(iv) 'र' के पूर्व बिना पाईवाला व्यंजन हो तो 'र' का ्र रूप लिखा जाता है ।

जैसे – छ्र, ट्र, ड्र ।

(v) 'र' के बाद कोई व्यंजन हो तो 'र' का र् रूप लिखा जाता है ।

जैसे – कोणार्क, आर्य, अर्थात्, स्वर्ग ।

- **ई /यी, ए / ये का लेखन –**

कुछ शब्दों के **दो रूप** मिलते हैं । जैसे –

नयी - नई, गये - गए, खाये - खाए, कीजिये - कीजिए, दिये - दिए आदि ।

ध्यान दीजिए कि यहाँ **कभी** 'य' (श्रुति) का प्रयोग हुआ है और **कभी** नहीं हुआ है । 'नयी' में 'य' है, 'नई' में केवल स्वर ध्वनि है । आजकल स्वरात्मक यानी ई/ए रूप ही प्रयोग में आते हैं । हमें इसे अपनाना चाहिए ।

यह भी ध्यान दीजिए कि कुछ शब्दों के मूल अंश के रूप में 'य' प्रयुक्त होता है । जैसे – स्थायी, दायित्व, अव्ययीभाव आदि । ऐसे स्थानों में 'य' रहता है ।

याद रहे कि गया का गआ, दिया का दिआ रूप नहीं होते ।

- **'स्क' - 'ष्क' का लेखन –**

तत्सम शब्दों में अ और आ के बाद 'स्क' तथा अन्य स्वरों के बाद 'ष्क' लिखे जाते हैं । जैसे –

पुरस्कार, यास्क, भास्कर, अयस्कान्त

परिष्कार, कनिष्क, निष्कर, पुष्कर

- **वाला –**

संज्ञा के साथ योजक प्रत्यय के रूप में आते समय 'वाला' को मिलाकर लिखा जाता है ; जैसे – टोपीवाला, गाँववाला ।

क्रिया के साथ 'वाला' अलग से लिखा जाता है ; जैसे – खाने वाला, पढ़ने वाला, जाने वाला ।

'वाला' निर्देशक के रूप में आते समय अलग लिखा जाता है; जैसे – गाँव वाला मकान, कल वाली बात, पहले वाला गायक ।

- **स्वन लाघव –**

जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनो का संयोग होता है, वहाँ हिन्दी में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो जाता है ।

जैसे – अर्द्ध - अर्ध, कर्त्ता - कर्ता,

परिवर्त्तन - परिवर्तन परिवर्द्धन - परिवर्धन ।

●

अध्याय - 4

शब्द विचार

हिन्दी में शब्द का निर्माण कई तरह से होता है । इनमें मुख्य साधन हैं – उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि, समास और आवृत्ति । इसी प्रकार संज्ञा शब्द से विशेषण, विशेषण से संज्ञा, क्रिया से क्रियार्थक संज्ञा, धातु से संज्ञा और विशेषण की रचना भी संभव होती है । आगे इन पर विचार किया जा रहा है ।

सार्थक ध्वनियों या ध्वनिसमूह को 'शब्द' कहते हैं । स्रोत के आधार पर हिन्दी का शब्द भण्डार चार प्रकार के शब्दों से भरा है – (i) तत्सम (ii) तद्भव (iii) देशज (iv) विदेशी ।

(i) **तत्सम शब्द** : 'तत्सम' का अर्थ है उसके समान अर्थात् संस्कृत के समान । संस्कृत के जो शब्द हिंदी में ज्यों-वे-त्यों प्रयुक्त होते हैं, उन्हें, 'तत्सम शब्द' कहा जाता है । जैसे – अंधकार, अग्नि, अर्द्ध, अष्ट, अश्रु, आश्चर्य, उज्ज्वल, एकत्र, ओष्ठ, कर्ण, काष्ठ, कूप, क्षेत्र, ग्राम, चूर्ण, जिह्वा, ज्येष्ठ, दन्त, दुग्ध, मयूर, रात्रि, वायु, व्याघ्र, सर्प, हस्त आदि ।

(ii) **तद्भव शब्द** : 'तत्' और 'भव' के योग से 'तद्भव' बना है । अर्थात् उससे यानी संस्कृत से उत्पन्न । संस्कृत के जो शब्द पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं से होते हुए कुछ परिवर्तनों के साथ हिंदी में आए हैं, उन्हें 'तद्भव शब्द' कहते हैं । जैसे – अंधेरा, आग, आधा, आठ, आँसू, अचरज, उजला, इकट्ठा, ओंठ, कान, काठ, कुआँ, खेत, गाँव, चूरा, जीभ, जेठ, दाँत, दूध, मोर, रात, बयार, बाघ, साँप, हाथ आदि ।

(iii) **देशज शब्द** : अपने देश के ग्रामीण क्षेत्रों और जनजातियों में व्यवहृत शब्द देशज कहलाते हैं । इनमें आदिवासी भाषाओं, द्रविड़ भाषाओं तथा हिन्दी के अपने ढंग से बनाए गए शब्द होते हैं; जैसे –

(क) कोल, संथाल आदि भाषाओं से आर्य शब्द – कदली (केला), कपास, कोड़ी, गज (हाथी), टींडा, तोरी, ताम्बूल, परबल, बाजरा, भिंडी, मिर्च, सरसों ।

(ख) द्रविड़ भाषाओं से आए शब्द – ऊखल, कज्जल (काजल), काच, कुटी, कुंड, कुदाल, केतकी, कोण, घुण, चिकना, चंदन, चूड़ी, ताला, दंड, नीर, पिंड, बल, माला, मीन, मुकुट, शव ।

(ग) हिंदी के अपने बनाए गए शब्द – अंडबंड, ऊटपटांग, कड़क, किलकारी, खचाखच, खटपट, खर्राटा, खलबली, गड़गड़ाहट, चटपटा, चाट, चिड़चिड़ा, चुटकी, छिछला, झंकार, टुच्चा, धमक, पटाखा, पापड़, भभक, भोंपू, मुस्टंडा, कटकटाना, खटखटाना, खुरचना, घुड़कना, सनसनाना, हिनहिनाना ।

(iv) **विदेशी शब्द** : ये बाहर के देश की भाषाओं के शब्द हैं । ऐसे शब्द विशेष रूप से अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी भाषाओं से हिन्दी में आए हैं । जैसे –

(क) अरबी शब्द – अल्लाह, अदालत, इम्तिहान, इरादा, ईद, औरत, किताब, जिला, तहसील, तारीख, बुनियाद, मजहब, मुकदमा, साफ, सिफारिश हलवाई ।

(ख) फारसी शब्द – अगर, आराम, आफत, आमदनी, आवारा, आसमान, आईना, कारीगर, कुरता, खुश, गंदा, गवाह, चालाक, जलेबी, जुलाहा, जुकाम, तेज़, दफ्तर, दर्ज़ी, बरामदा, बुखार, बुलबुल, बेकार, मकान, मज़दूरी मुश्किल, मेहनत, समोसा, साल ।

(ग) तुर्की शब्द – उर्दू, काबू, कूच, कुली, कैंची, खंजर, गलीचा, चाकू, चेचक, चम्मच, तोप, दरोगा, बहादुर, बारूद, बेगम, लाश, सराय ।

(घ) पुर्त्तगाली शब्द – अनायास, आलमारी, आलपीन, कोको, कमीज, गमला, गोभी, गिरजा, चाभी, तौलिया, नीलाम, पपीता, पावरोटी, पेड़ा, पादरी, फालतू, बाल्टी, मेज ।

(ङ) अंग्रेजी शब्द – अपील, अस्पताल, ऑफीसर, ऑपरेशन, इंजन, कप, कलक्टर, कॉपी, कॉलेज, केक, कोट, कोर्ट, चाकलेट, जग, जज, जंपर, टैक्स, टॉफी, टोस्ट, ट्रेन, डॉक्टर, ड्रेन, नर्स, पेन्शन, पेन, पेंसिल, पेंटर, पैंट, प्लेट, प्लेटफॉर्म, ब्लाउज, बैग, बूट, बिस्कुट, बैटरी, बस, मोटर, माचिस, मजिस्ट्रेट, लाइब्रेरी, लैंप, वोट, वार्ड, स्कूल, स्टेशन, हैट ।

- **अर्थ के आधार पर शब्द –**

हिन्दी का शब्द-भण्डार निम्न प्रकारों का है –

(i) अनेकार्थी शब्द (ii) समानार्थी (पर्यायवाची) शब्द (iii) विलोम या विपरीतार्थक शब्द (iv) भिन्नार्थक शब्द (v) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (vi) सूक्ष्म अर्थ भेदवाले शब्द । इनके कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं –

(i) अनेकार्थी शब्द –

शब्द		अनेक अर्थ	शब्द		अनेक अर्थ
अंग	–	अवयव, भाग	अंबर	–	आकाश, कपड़ा
अक्षर	–	वर्ण, ब्रह्म, नित्य	अकाल	–	दुर्भिक्ष, असमय
अपेक्षा	–	आशा, बनिस्बत	आम	–	एक फल, सामान्य
कर	–	हाथ, किरण, टैक्स	कुल	–	वंश, सब
गुरु	–	आचार्य / शिक्षक, भारी	गोली	–	औषधि, बंदूक की गोली
जड़	–	मूल, मूर्ख, अचेतन	जीवन	–	जल, प्राण
दल	–	मण्डली, पंखुड़ी	पक्ष	–	पंख, पन्द्रह दिन, ओर
पत्र	–	चिट्ठी, पत्ता	पद	–	पैर, उपाधि, कविता का पद
पय	–	दूध, पानी	पृष्ठ	–	पीठ, पन्ना
पानी	–	जल, इज्जत, चमक	भूत	–	भूतकाल, प्रेत, प्राणी
वर्ण	–	अक्षर, जाति, रंग	सर	–	सिर, तालाब
हार	–	फूलों का हार, पराजय	फल	–	पेड़ का फल, नतीजा/परिणाम
हल	–	खेती करने का हल, समाधान			

(ii) समानार्थी (पर्यायवाची) शब्द –

शब्द		**समान अर्थवाले शब्द**
अग्नि	–	आग, पावक, हुताशन, अनल
अंधकार	–	अंधेरा, तिमिर, तम, अंधियारा
अमृत	–	अमिय, सुधा, पीयूष
असुर	–	दनुज, दानव, दैत्य, निशाचर, राक्षस
आँख	–	चक्षु, दृग, नयन, नेत्र, लोचन
आकाश	–	अम्बर, आसमान, गगन, व्योम, नभ, अन्तरिक्ष
कपड़ा	–	चीर, वसन, दुकूल, पट
कमल	–	पंकज, जलज, अरविंद, कमल, पद्म, सरोज
किनारा	–	कगार, तट, तीर
गर्व	–	अभिमान, अहंकार, घमण्ड, दंभ
गणेश	–	गजानन, गणपति, लम्बोदर, विनायक
घर	–	आलय, गृह, भवन, निलय, सदन
घोड़ा	–	अश्व, घोटक, तुरंग, बाजि, हय
चन्द्रमा	–	इंदु, चन्द्र, चाँद, निशाकर, शशांक, शशि, सुधाकर
चतुर	–	कुशल, दक्ष, निपुण, पटु, प्रवीण
जल	–	अम्बु, उदक, तोय, नीर, पानी, वारि, सलिल, पय
दिन	–	दिवस, दिवा, वासर
देह	–	काया, तन, शरीर, वदन
ध्वजा	–	केतु, पताका, झण्डा, निशान
नदी	–	सरिता, तटिनी, तरंगिणी
नाव	–	नौका, तरणी
पक्षी	–	खग, चिड़िया, विहंग, विहग
पत्नी	–	अर्धांगिनी, दारा, भार्या, सहधर्मिणी
पत्थर	–	पाषाण, प्रस्तर, उपल
पवन	–	मरुत, वायु, समीर, हवा

पर्वत	–	गिरि, नग, पहाड़, शैल
पृथ्वी	–	अवनि, धरा, धरती, भू, भूमि, वसुधा, वसुंधरा
बगीचा	–	उद्यान, उपवन, वाटिका, फुलवाड़ी
बन्दर	–	कपि, वानर, मर्कट
बादल	–	घन, जलद, जलधर, नीरद, मेघ, पयोद, वारिद
बिजली	–	चपला, तड़ित, दामिनी, सौदामिनी
भौंरा	–	अलि, भ्रमर, मधुकर, मधुप
मछली	–	मीन, मत्स्य, झस
मनुष्य	–	आदमी, इंसान, मनुज, मानव, व्यक्ति
महादेव	–	त्रिलोचन, महेश्वर, शंकर, शंभु, शिव, हर
मित्र	–	दोस्त, बंधु, सखा, साथी, सुहृद, स्वजन
माता	–	माँ, अम्बा, जननी, धात्री
राजा	–	नरपति, नरेश, नरेन्द्र, नृप, भूप, भूपाल, सम्राट
रात	–	यामिनी, रजनी, रात्रि, विभावरी
वन	–	अरण्य, कानन, जंगल, विपिन
विष्णु	–	हरि, केशव, नारायण, चतुर्भुज
वृक्ष	–	तरु, द्रुम, पादप, पेड़
शत्रु	–	अरि, दुश्मन, रिपु, वैरी
संसार	–	जग, जगत, भव, लोक, विश्व
समुद्र	–	रत्नाकर, वारिधि, सागर, सिंधु
सर्प	–	अहि, नाग, उरग, भुजंग, फणी, साँप, विषधर
स्त्री	–	औरत, अबला, नारी, महिला, वनिता, वामा
सुगंध	–	खुशबू, महक, सौरभ, सुरभि
सूर्य	–	आदित्य, दिनकर, भानु, भास्कर, रवि, दिवाकर, अर्क
सोना	–	कनक, कुन्दन, स्वर्ण, हेम
हाथी	–	कुंजर, करि, गज, नाग, हस्ती, मतंग

(iii) विपरीतार्थक या विलोम शब्द –

शब्द		विलोमशब्द	शब्द		विलोमशब्द
आस्तिक	–	नास्तिक	सभय	–	निर्भय
इच्छा	–	अनिच्छा	यश	–	अपयश
कसूर	–	बेकसूर	योग	–	वियोग
कानून	–	गैरकानून	रहम	–	बेरहम
गुण	–	अवगुण	रुचि	–	अरुचि
चाल	–	कुचाल	सत्य	–	असत्य
जय	–	पराजय	सम	–	विषम
छल	–	निश्छल	स्वस्थ	–	अस्वस्थ
पक्ष	–	विपक्ष	हाजिर	–	गैरहाजिर
सुपात्र	–	कुपात्र	हिंसा	–	अहिंसा

उपसर्गों के परिवर्तन से बननेवाले विलोम शब्द :

अनुकूल	–	प्रतिकूल	कडुवा	–	मीठा
अपमान	–	सम्मान	संयोग	–	वियोग
अवनति	–	उन्नति	सजीव	–	निर्जीव
आदान	–	प्रदान	सज्जन	–	दुर्जन
खुशबू	–	बदबू	सदय	–	निर्दय
दुराचारी	–	सदाचारी	सदाचार	–	दुराचार
निरक्षर	–	साक्षर	सरस	–	नीरस
परतंत्र	–	स्वतंत्र	सुकर्म	–	कुकर्म/दुष्कर्म
विपत्ति	–	संपत्ति	सुगंध	–	दुर्गंध
ऊपर	–	नीचे	सुमति	–	कुमति
आगे	–	पीछे	सुमार्ग	–	कुमार्ग
अंधकार	–	प्रकाश	सुलभ	–	दुर्लभ
सूखा	–	गीला	स्वाधीन	–	पराधीन

भिन्न शब्दों के प्रयोग से बननेवाले विलोम शब्द :

अच्छाई	–	बुराई	ठण्डा	–	गर्म
अल्पायु	–	दीर्घायु	थोड़ा	–	बहुत
अन्दर	–	बाहर	दक्षिण	–	उत्तर
उत्तम	–	अधम	दरिद्र	–	धनी
उदय	–	अस्त	दुःख	–	सुख
उदार	–	अनुदार/कृपण	देव	–	दानव
ऊँचा	–	नीचा	दोष	–	गुण
एड़ी	–	चोटी	नफा	–	नुकसान
ऐच्छिक	–	अनिवार्य	नवीन	–	प्राचीन
कच्चा	–	पक्का	निकास	–	प्रवेश
कठिन	–	सरल	निर्यात	–	आयात
कठोर	–	कोमल	पाप	–	पुण्य
खरा	–	खोटा	बाढ़	–	सूखा
खराब	–	अच्छा	भावी	–	भूत
गन्दा	–	साफ	भिन्न	–	अभिन्न
गरीबी	–	अमीरी	लाभ	–	हानि
गलत	–	सही	विधि	–	निषेध
छाँह	–	धूप	सीधा	–	टेढ़ा
जंगम	–	स्थावर	हार	–	जीत
जड़	–	चेतन			

(iv) भिन्नार्थक शब्द –

प्राय: एक शब्द को थोड़े भिन्न हिज्जे में लिखने से उनमें अर्थ का अन्तर हो जाता है । ऐसे शब्दों की एक सूची नीचे दी जा रही है –

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
अगम	–	दुर्गम	आसन	–	बैठने का आधार
आगम	–	शास्त्र	आकर	–	भण्डार
अचल	–	पर्वत	आकार	–	रूप, ढाँचा
अचला	–	पृथ्वी	आदि	–	बगैरह
अनल	–	आग	आदी	–	अभ्यस्त
अनिल	–	हवा	आवास	–	रहने का स्थान
अन्न	–	अनाज	आभास	–	झलक
अन्य	–	दूसरा	इत्र	–	सुगंधित द्रव
अपेक्षा	–	आशा, तुलना में	इतर	–	भिन्न
उपेक्षा	–	निरादर	उधार	–	ऋण
अमित	–	बहुत	उद्धार	–	छुटकारा
अमीत	–	शत्रु	उन	–	'वह' का विकारी रूप
अलि	–	भौंरा	ऊन	–	न्यून / भेड़ के बाल
अली	–	सखी	उपल	–	पत्थर
अवधि	–	समय	उपला	–	गोबर का कण्डा
अवधी	–	एक भाषा	कर्ण	–	कान / त्रिभुज का कर्ण
अवलम्ब	–	सहारा	करण	–	साधन, एक कारक
अविलम्ब	–	शीघ्र	कलि	–	कलियुग
अवश	–	लाचार	कली	–	अधखिला फूल
अवश्य	–	जरूर	कांति	–	चमक
अशन	–	भोजन	क्रांति	–	विद्रोह, परिवर्तन

शब्द		अर्थ
कोर	–	किनारा
कौर	–	ग्रास
कुल	–	वंश
कूल	–	किनारा
कृति	–	रचना
कृती	–	निपुण
कृपाण	–	कटार
कृपण	–	कंजूस
कृष्ण	–	काला / श्रीकृष्ण
कृष्णा	–	द्रौपदी
कोश	–	शब्दकोश
कोष	–	खजाना
क्षत्र	–	क्षत्रिय
छत्र	–	छाता
खिल	–	परती जमीन
खील	–	लावा
चिता	–	शव जलाने की चिता
चीता	–	एक जंगली जानवर
चिर	–	सदा
चीर	–	कपड़ा
चुना	–	चुना हुआ
चूना	–	सीप से प्रयुक्त क्षार
चेन	–	जंजीर
चैन	–	आराम
जगत	–	संसार

शब्द		अर्थ
ज़गत	–	कुएँ का चबूतरा
जरा	–	बुढ़ापा
ज़रा	–	थोड़ा
जलद	–	बादल
जलज	–	कमल
तरंग	–	लहर
तुरंग	–	घोड़ा
तरणि	–	सूर्य
तरणी	–	नाव
तीस	–	तीस की संख्या
टीस	–	कसक/पीड़ा
दारु	–	लकड़ी
दारू	–	शराब
दिन	–	दिवस
दीन	–	गरीब
द्विप	–	हाथी
द्वीप	–	टापू (पानी के बीच)
दिया	–	देना क्रिया का रूप
दीया	–	दीपक
धुल	–	धुलना क्रिया का रूप
धूल	–	रज
नियत	–	निश्चित
नीयत	–	स्वभाव / इरादा
नीरज	–	कमल
नीरद	–	बादल

शब्द		अर्थ
निशान	–	चिह्न
निसान	–	झण्डा
नेति	–	न इति, जिसका अंत नहीं है
नेती	–	मथानी की रस्सी
परिच्छद	–	पोषाक
परिच्छेद	–	अध्याय
परिमाण	–	मात्रा
परिणाम	–	नतीजा
पवन	–	वायु
पावन	–	पवित्र
पानी	–	जल
पाणि	–	हाथ
पाश	–	बंधन
पास	–	नजदीक
प्रवाह	–	बहाव
परवाह	–	चिन्ता
प्रसाद	–	कृपा
प्रासाद	–	महल
प्रहार	–	आघात
परिहार	–	त्याग
पिता	–	बाप
पीता	–	'पी' धातु / क्रिया का रूप
फुट	–	नापने की इकाई

शब्द		अर्थ
फूट	–	बैर, एक फल
फाका	–	अनाहार
फाँका	–	फाँकने की क्रिया
फलाँ	–	अमुक
फलाँग	–	छलाँग
बदन	–	शरीर
वदन	–	मुख
बन	–	'बनना' क्रिया का रूप
वन	–	जंगल
बहन	–	भगिनी
वहन	–	ढोना
बात	–	वचन
वात	–	हवा
बार	–	दफा
वार	–	चोट, सप्ताह के वार। (सोम, मंगल आदि)
बारिश	–	वर्षा
वारीश	–	समुद्र
बोना	–	बिखेरना
बौना	–	छोटा, ठिगने कद का
भिड़	–	बर्रे
भीड़	–	समूह
मिल	–	'मिलना' क्रिया का रूप
मील	–	रास्ते का नाप

शब्द		अर्थ
मेल	–	मिलन
मैल	–	मल, गन्दगी
मोर	–	मयूर पक्षी
मौर	–	मुकुट
रग़	–	नस
रंग	–	वर्ण
राज	–	शासन
राज़	–	रहस्य
लक्ष	–	लाख
लक्ष्य	–	उद्देश्य
विश	–	कमल का डण्ठल
विष	–	ज़हर
विषमय	–	ज़हरीला
विस्मय	–	आश्चर्य
शंकर	–	शिव
संकर	–	मिश्रित
शील	–	चरित्र
शिल	–	शिला
शिवा	–	शिव की पत्नी पार्वती
शीवा	–	अजगर
शोक	–	मन की पीड़ा
शौक	–	व्यसन
शुचि	–	पवित्र
सूची	–	सूई, विषयक्रम

शब्द		अर्थ
शत्रु	–	दुश्मन
सत्र	–	वर्ष, निश्चित समय
शर	–	बाण
सर	–	सिर, तालाब
शस्त्र	–	हथियार
शास्त्र	–	सिद्धांत ग्रन्थ
शाला	–	घर
साला	–	पत्नी का भाई
शुल्क	–	फीस, टैक्स
शुक्ल	–	सफेद, उज्ज्वल
शीशा	–	काँच
सीसा	–	एक धातु
शुकर	–	सूअर (एक जानवर)
सुकर	–	आसानी से होनेवाला
सूर	–	सूर्य
सुर	–	देवता
समान	–	बराबर, तरह
सामान	–	सामग्री
सास	–	पति या पत्नी की माँ
साँस	–	नाक से हवा लेना-छोड़ना
सुत	–	बेटा
सूत	–	धागा, सारथी
सुधि	–	स्मरण
सुधी	–	विद्वान

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
सुख	–	आनन्द	हरी	–	हरे रंग की
सूखा	–	अकाल	हल्	–	एक मात्रा
सेर	–	एक तौल	हल	–	खेत जोतने का औजार
सैर	–	भ्रमण, घूमना	हँसी	–	हँसने की क्रिया
हरि	–	विष्णु	हंसी	–	मादा हंस (एक पक्षी)

(v) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द –

अनेक शब्दों में		एक शब्द
पहले जन्म लेनेवाला	–	अग्रज
जिसके समान कोई दूसरा न हो	–	अद्वितीय
जिसे टाला न जा सके	–	अनिवार्य
जो पढ़ा-लिखा न हो	–	अनपढ़
जिसके माता-पिता न हों	–	अनाथ
पीछे / बाद में जन्म लेनेवाला	–	अनुज
जिसकी उपमा न हो	–	अनुपम
जो कभी नहीं मरता	–	अमर
जिसका वर्णन न किया जा सके	–	अवर्णनीय
जो अवश्य हो	–	अवश्यम्भावी
जिसका विश्वास न किया जा सके	–	अविश्वसनीय
जो ईश्वर को मानता हो	–	आस्तिक
जो बाद में पाने का अधिकारी बने	–	उत्तराधिकारी

जो काम से जी चुराता हो	–	कामचोर
जो किए गए उपकार को माने	–	कृतज्ञ
जो किए गए उपकार को न माने	–	कृतघ्न
गुप्त रखने योग्य	–	गोपनीय
घर से संबंधित	–	घरेलू
दूसरे की निंदा करनेवाला	–	निन्दक

(vi) ध्वनिबोधक शब्द –

(क) प्राणियों की ध्वनि के आधार पर :

प्राणी		ध्वनि	प्राणी		ध्वनि
कौआ	–	काँव काँव करना	हाथी	–	चिंघाड़ना
बंदर	–	किकियाना	चूहा	–	चूँ चूँ करना
मुर्गा	–	कुकड़ू कूँ करना	झींगुर	–	झंकारना
मोर	–	कुहकना/केंकना	मेंढक	–	टर्र टर्र करना
कोयल	–	कूकना	तोता	–	टें-टें करना
हंस	–	कूजना	साँड़	–	डकारना
भालू	–	खों-खों करना	शेर	–	दहाड़ना
भौंरा	–	गुंजारना	पपीहा	–	पी-पी करना
कबूतर	–	गुटर गूँ करना	साँप	–	फुफकारना
बाघ	–	गुर्राना	ऊंट	–	बलबलाना
उल्लू	–	घुघुआना	कीड़े	–	बिलबिलाना
चिड़िया	–	चहचहाना	मक्खियाँ	–	भिनभिनाना

प्राणी		ध्वनि	प्राणी		ध्वनि
कुत्ता	–	भौंकना	गधा	–	रेंकना
बकरी/भेड़	–	मिमियाना	घोड़ा	–	हिनहिनाता
बिल्ली	–	म्याऊँ-म्याऊँ करना	सियार	–	हुआ हुआ करना
गाय	–	रँभाना			

(ख) वस्तुओं की ध्वनि के आधार पर :

वस्तु		ध्वनि	वस्तु		ध्वनि
दाँत	–	कटकटाना	जूते	–	चरमराना
दरवाजा	–	खटखटाना	झरना	–	झर-झर करना
पत्ता	–	खड़खड़ाना	घड़ी	–	टिक् टिक् करना
चूड़ियाँ	–	खनखनाना	बरतन	–	ठनठनाना
बादल	–	गड़गड़ाना/ घुमडना/ गरजना	बंदूक	–	दनदनाना
पायल	–	छनछनाना	दिल	–	धड़कना
लकड़ी	–	चटचटाना	पीठ	–	थपथपाना
पंख	–	फड़फड़ाना	हवा	–	सनसनाना

(ग) दृश्य के अनुकरण के आधार पर :

बिजली	–	चमकना	नाव	–	डगमगाना
धूप	–	चिलचिलाना	जीभ	–	लपलपाना
तारे	–	झिलमिलाना	खेत	–	लहलहाना
दीपक	–	टिमटिमाना			

अध्याय - 5

शब्द रचना

सन्धि

जब दो शब्द एक दूसरे के पास आ जाते हैं, तब पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि का जो मेल हो जाता है, उसे सन्धि कहते हैं । इससे एक नया शब्द बन जाता है । सन्धि तीन प्रकार की होती है – (क) स्वरसन्धि (ख) व्यंजनसन्धि (ग) विसर्ग सन्धि ।

इन संधियों के बारे में नीचे कुछ जानकारियाँ दी जा रही हैं –

(क) स्वरसन्धि –

दो स्वरों के मेल से स्वरसन्धि होती है । ये पाँच प्रकार की होती हैं– दीर्घ, गुण, वृद्धि यण और अयादि ।

(i) दीर्घ स्वर सन्धि :

दो सजातीय स्वर (अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ऋ) मिलकर सजातीय दीर्घस्वर 'आ', 'ई' 'ऊ' 'ॠ' हो जाते हैं, जैसे –

उदाहरण

अ + अ = आ	देव + अधिदेव = देवाधिदेव
अ + आ = आ	पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

आ + अ = आ	परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय
इ + इ = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
इ + ई = ई	मुनि + ईश = मुनीश
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र
ई + ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश
उ + उ = ऊ	गुरु + उपदेश = गुरूपदेश
उ + ऊ = ऊ	सिंधु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि
ऊ + उ = ऊ	स्वयंभू + उदय = स्वयंभूदय
ऋ + ऋ = ॠ	पितृ + ऋण = पितॄण

(ii) गुण स्वर सन्धि :

'अ'या 'आ' के बाद इ या ई होने पर दोनों मिलकर 'ए'; 'उ' या 'ऊ' होने पर दोनों मिलकर 'ओ'; तथा 'ऋ' होने पर दोनो मिलकर 'अर्' हो जाते हैं; जैसे –

अ + इ = ए	देव + इन्द्र = देवेन्द्र
अ + ई = ए	सुर + ईश = सुरेश
आ + इ = ए	महा + इन्द्र = महेन्द्र
आ + ई = ए	रमा + ईश = रमेश

अ + उ = ओ	सूर्य + उदय = सूर्योदय
अ + ऊ = ओ	समुद्र + उर्मि = समुद्रोर्मि
आ + उ = ओ	गंगा + उदक = गंगोदक
आ + ऊ = ओ	गंगा + उर्मि = गंगोर्मि
अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

(iii) वृद्धि स्वर सन्धि :

अ या आ के बाद ए या ऐ आने पर दोनो मिलकर 'ऐ' तथा ओ या औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं; जैसे –

अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक
अ + ऐ = ऐ	धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य
आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ओ = ओ	परम + ओजस्वी = परमौजस्वी
अ + औ = औ	परम + औषध = परमौषध
आ + ओ = ओ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी
आ + ओ = ओ	महा + औषध = महौषध

(iv) यण स्वर सन्धि :

'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' या 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर इ या ई का 'य', उ या ऊ का 'व' तथा 'ऋ' का 'र' हो जाता है। जैसे –

इ + अ = य	यदि + अपि = यद्यपि
इ + आ = या	इति + आदि = इत्यादि
इ + उ = यु	प्रति + उपकार = प्रत्युपकार
इ + ऊ = यू	नि + ऊन = न्यून
इ + ए = ये	प्रति + एक = प्रत्येक
इ + ऐ = यै	अति + ऐश्वर्य = अत्यैश्वर्य
इ + ओ = यो	दधि + ओदन = दध्योदन
इ + औ = यौ	मति + औदार्य = मत्यौदार्य
ई + अ = य	देवी + अर्पण = देव्यर्पण
ई + उ = यु	सखी + उक्ति = सख्युक्ति
ई + ऊ = यू	नदी + ऊर्मि = नद्यूर्मि
ई + ऐ = यै	देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य
उ + अ = व	अनु + अय = अन्वय
उ + आ = वा	सु + आगत = स्वागत
उ + इ = वि	अनु + इति = अन्विति

उ	+ ए	= वे		अनु + एषण	=	अन्वेषण
ऊ	+ आ	= वा		वधू + आगम	=	वध्वागम
ऋ	+ अ	= र		पितृ + अनुमति	=	पित्रनुमति
ऋ	+ आ	= रा		पितृ + आज्ञा	=	पित्राज्ञा
ऋ	+ इ	= रि		मातृ + इच्छा	=	मात्रिच्छा

(v) अयाधि सन्धि :

ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर 'ए' के स्थान पर 'अय्' ऐ के स्थान पर आय्, 'ओ' के स्थान पर 'अव्' तथा 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है, जैसे –

ए + अ = अय	ने + अन = नयन,	शे + अन = शयन
ऐ + अ = आय	नै + अक = नायक,	गै + अक = गायक
ओ + अ = अव	पो + अन = पवन,	भो + अन = भवन
औ + अ = आव	पौ + अक = पावक	पौ + अन = पावन
ओ + इ = अवि	पो + इत्र = पवित्र	
औ + इ = आवि	नौ + इक = नाविक	
औ + उ = आवु	भौ + उक = भावुक	

(ख) व्यंजनसन्धि –

व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को 'व्यंजनसंधि' कहते हैं। व्यंजन संधि के नियम नीचे दिए जा रहे हैं–

(i) क् च् ट् त् प् (अघोष) व्यंजनों के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण अथवा य्, र्, व् अथवा स्वर आये तो 'क्' का 'ग्' 'च्' का 'ज्', 'ट्' का 'ड्', 'त्' का 'द्', 'प्' का 'ब्' हो जाता है, जैसे –

दिक् + अम्बर	= दिगम्बर	षट् + दर्शन	= षड्दर्शन
दिक् + गज	= दिग्गज	सत् + वाणी	= सद्वाणी
वाक् + जाल	= वाग्जाल	सत् + आनंद	= सदानंद
अच् + अन्त	= अजन्त	सुप् + अन्त	= सुबन्त
अच् + आदि	= अजादि	उत् + योग	= उद्योग
षट् + आनन	= षड़ानन	तत् + रूप	= तद्रूप

(ii) क्, च्, ट्, त्, प्, के बाद नासिक्य व्यंजन (न्,म्) आए तो 'क्' का 'ङ्', 'च्' का 'ञ्', 'ठ्', का 'ण्', 'त्' का 'न्', 'प्' का 'म्' हो जाता है, जैसे –

प्राक् + मुख	= प्राङ्मुख	सत् + मार्ग	= सन्माग
वाक् + मय	= वाङ्मय	जगत् + नाथ	= जगन्नाथ
षट् + मुख	= षण्मुख	उत् + नति	= उन्नति
षट् + मार्ग	= षण्मार्ग	अप् + मय	= अम्मय

(iii) 'म्' के बाद वर्गीय व्यंजन आने पर 'म्' के स्थान पर इसी वर्ग का 'नासिक्य व्यंजन'या 'अनुस्वार' हो जाता है; किन्तु 'य्', 'र्', 'ल्' 'व्' 'श्', 'ष्','ह', आने पर अनुस्वार ही होता है, जैसे –

सम् + कल्प = संकल्प/सङ्कल्प	सम् + यम = संयम
सम् + गम = संगम/सङ्गम	सम् + रचक = संरचक
सम् + तोष = संतोष/सन्तोष	सम् + लाप = संलाप
सम् + पूर्ण = संपूर्ण/सम्पूर्ण	सम् + वाद = संवाद
किम् + चित् = किंचित/किञ्चित	सम् + सार = संसार
पम् + चम = पंचम/पञ्चम	सम् + हार = संहार

(iv) 'त्' या 'द्' के बाद च/छ, ज/झ, ट/ठ, ड/ढ, ल आए तो त् या द् के स्थान पर क्रमशः च्, ज्, ट्, ड्, ल् हो जाता है, जैसे–

उत् + चारण = उच्चारण	सत् + जन = सज्जन
उत् + छेद = उच्छेद	वृहत् + टीका = वृहट्टीका
उत् + डयन = उड्डयन	तत् + लीन = तल्लीन
उत् + लास = उल्लास	उत् + ज्वल = उज्ज्वल
उत् + लेख = उल्लेख	विद्युत् + छटा = विद्युच्छटा

(v) 'त' या 'द' के बाद 'ह' आए तो दोनों मिलकर द्ध हो जाते हैं, जैसे–

उत् + हार = उद्धारउत् + हत = उद्धत

उत् + हरण = उद्धरण तत् + हित = तद्धित

(vi) 'त्' या 'द्' के बाद 'श' आए तो दोनों मिलकर 'च्छ' हो जाते है; जैसे–

उत् + शृंखल	=	उच्छृंखल	उत् + श्वास	=	उच्छ्वास
उत् + शिष्ट	=	उच्छिष्ट	सत् + शास्त्र	=	सच्छात्र

(vii) स्वर के बाद 'छ' आए तो 'छ' 'च्छ' हो जाता है; जैसे–

आ + छादन	=	आच्छादन	वि + छेद	=	विच्छेद
परि + छेद	=	परिच्छेद	अनु + छेद	=	अनुच्छेद

(viii) ऋ, र्, ष् के बाद 'न' आए तो 'न' का 'ण' हो जाता है, जैसे-

ऋ + न	=	ऋण	हर् + न	=	हरण
कृष् + न	=	कृष्ण	विष् + नु	=	विष्णु
तृष् + ना	=	तृष्णा	भूष् + अन	=	भूषण

(ix) श्/ष् के बाद त या थ आए तो 'त' का 'ट' और 'थ' का 'ठ' हो जाता है; जैसे-

आकृष् + त	=	आकृष्ट	इष् + त	=	इष्ट
षष् + थ	=	षष्ठ	तुष + त्	=	तुष्ट
पृष् + थ	=	पृष्ठ	नश् + त्	=	नष्ट

(ग) विसर्गसन्धि –

विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे 'विसर्गसन्धि' कहते हैं। विसर्गसंधि के नियम नीचे दिए जा रहे हैं–

(i) विसर्ग (:) के बाद च/छ आए तो विसर्ग के स्थान पर 'श', ट/ठ आए तो 'ष', त/थ आए तो 'स' हो जाता है; जैसे -

निः + चल = निश्चल	मनः + ताप = मनस्ताप
निः + छल = निश्छल	निः + तेज = निस्तेज
धनु + टंकार = धनुष्टंकार	निः + तार = निस्तार
निः + ठुर = निष्ठुर	दुः + तर = दुस्तर

(ii) अः के बाद वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह्, आए तो अः का 'ओ' हो जाता है; जैसे -

अधः + गति = अधोगति	यशः + दा = यशोदा
सरः + ज = सरोज	मनः + रथ = मनोरथ
तेजः + मय = तेजोमय	मनः + योग = मनोयोग
वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध	मनः + रंजन = मनोरंजन
अधः + भाग = अधोभाग	पुरः + हित = पुरोहित

(iii) 'इ':, या 'उ': के बाद 'र' आए तो इः का 'ई' और 'उ': का 'ऊ' हो जाता है, जैसे–

निः + रव = नीरव	निः + रोग = नीरोग
निः + रस = नीरस	दुः + राज = दूराज

(iv) विसर्ग के बाद कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य, ल, व, ह आए तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाता है, जैसे-

दु: + आत्मा = दुरात्मा	पुन: + अपि = पुनरपि
नि: + उपाय = निरुपाय	पुन: + आगत = पुनरागत
नि: + गुण = निर्गुण	पुन: + मिलन = पुनर्मिलन
नि: + झर = निर्झर	आशी: + वाद = आशीर्वाद
अन्त: + विरोध = अन्तर्विरोध	नि: + जल = निर्जल

(v) 'इ': या 'उ': के बाद 'क'/'ख' आए तो विसर्ग के स्थान पर 'ष' हो जाता है; जैसे –

नि: + कपट = निष्कपट	नि: + पाप = निष्पाप
दु: + कर = दुष्कर	चतु: + कोण = चतुष्कोण
दु: + प्रकृति = दुष्प्रकृति	नि: + फल = निष्फल

(vi) विसर्ग के बाद 'त' या 'स' आए तो विसर्ग का 'स' हो जाता है; जैसे –

नम: + ते = नमस्ते	नि: + सन्तान = निस्सन्तान
नि: + तार = निस्तार	दु: + साहस = दुस्साहस
नि: + सन्देह = निस्सन्देह	नि: + सार = निस्सार

(vii) विसर्ग के पूर्व अ/आ हो तथा बाद में कोई भिन्न स्वर आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे – अत: + एव = अतएव

(viii) 'अ:' के बाद क/ख प/फ आए तो विसर्ग ज्यों-का-त्यों रहता है, जैसे–

अन्त:	+	करण	=	अन्त:करण	अध:	+	पतन	=	अध:पतन
अन्त:	+	पुर	=	अन्त:पुर	प्रात:	+	काल	=	प्रात:काल
मन:	+	कल्पित	=	मन:कल्पित	पुन:	+	फलित	=	पुन:फलित

अभ्यास

1. संधि किसे कहते हैं ?
2. संधियाँ कितने प्रकार की होती हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए ।
3. नीचे दी गयी संधियों का विच्छेद कीजिए :

   निश्चल, निष्पाप, महीन्द्र, गुरूपदेश, पत्राचार, पुरुषोत्तम, जगन्नाथ, नीलाचल, देवर्षि, मन्वन्तर, पित्रादेश, सदैव, उज्ज्वल, उद्घाटन, सदानन्द ।
4. **नीचे दिए गए पदों की संधि कीजिए :**

षट्	+	मास	परम	+	अर्थ	अनु	+	अय
तप:	+	वन	राजा	+	ऋषि	महा	+	उत्सव
भौ	+	उक	गण	+	ईश	सत्	+	जन
धनु:	+	टंकार	सम्	+	वाद	मन:	+	ताप
नि:	+	आशा	उत्	+	हार	तथा	+	एव

समास

समास का अर्थ है– सम् (पास्) + आस (बिठना) । अर्थात् दो स्वतंत्र शब्दों के पास-पास बिठाने को समास कहते हैं । समास-प्रक्रिया में बने यौगिक शब्द को समासिक पद, समस्तपद, समासपद समासयुक्त शब्द या समासज पद कहते हैं । समासज पद को अलग-अलग करने की रीति को समास विग्रह या विग्रह कहते हैं । विग्रह के समय दो शब्दों के बीच में कारक चिह्न या पारस्परिक संबंधसूचक शब्द का प्रयोग होता है । समासज पद में इसका लोप हो जाता है ।

समास के चार भेद हैं –

(i) अव्ययीभाव (ii) तत्पुरुष (कर्मधारय और द्विगु इसके अंतर्गत हैं ।)

(iii) द्वन्द्व (iv) बहुव्रीहि

(i) अव्ययीभाव समास –

इस समास में पूर्वपद अव्यय या उपसर्ग होता है । समस्तपद क्रियाविशेषण (अव्यय) का काम करता है । संज्ञाशब्दों की आवृत्ति से भी अव्ययीभाव समास होता है ।

उदाहरण

समासविग्रह		**समासज पद**	**समासविग्रह**		**समासज पद**
शक्ति के अनुसार	=	यथाशक्ति	रात ही रात में	=	रातोंरात
प्रत्येक दिन	=	प्रतिदिन	पहेल पहले	=	पहलेपहल
जीवन तक	=	आजीवन	साल साल	=	हरसाल

जीवन पर्यन्त	=	यावज्जीवन	शक के बिना	=	बेशक
सन्देह के बिना	=	निस्सन्देह	पेटभर कर	=	भरपेट

(यथाशक्ति, यथासंभव, प्रतिपल, प्रतिव्यक्ति, आमरण, आजन्म, लापता, लाजवाब, लाइलाज, अनजाने, निघड़क, बेखटके, हररोज, निडर, सहर्ष, एकाएक, हाथोंहाथ, बीचोंबीच, गाँवगाँव, धीरेधीरे)

(ii) तत्पुरुष समास –

इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है, पूर्वपद गौण होता है । उत्तरपद संज्ञा और पूर्वपद विशेषण होता है । विग्रह करते समय शब्दों के बीच कारक चिह्न - को, से, के लिए, का/के/की, में, पर आदि लगते हैं । समासज शब्द में कारक-चिह्न का लोप हो जाता है । कारक-चिह्नों के आधार पर इसके छह भेद होते हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष : इसमें 'को' का लोप हे जाता है; जैसे -

स्वर्ग को प्राप्त	=	स्वर्गप्राप्त
शरण को आगत	=	शरणागत
चिडियों को मारनेवाला	=	चिड़ीमार
परलोक को गमन	=	परलोकगमन
गगन को चूमनेवाला	=	गगनचुम्बी
हस्त को प्राप्त हुआ	=	हस्तगत
शरण को आगत	=	शरणागत

सबको जाननेवाला	=	सर्वज्ञ
काठ को फोड़नेवाला	=	काठफोड़

(गृहागत, मुँहतोड़, दिवंगत, देशगत, आशातीत)

(ii) करण तत्पुरुष : इसमें से/के द्वारा का लोप हो जाता है; जैसे –

गुणों से युक्त	= गुणयुक्त	मुँह से माँगा	= मुँहमाँगा
आग से जला	= आगजला	शोक से आकुल	= शोकाकुल
ईश्वर के द्वारा प्रदत्त	= ईश्वरप्रदत्त	मन से माना हुआ	= मनमाना
हस्त से लिखित	= हस्तलिखित	अकाल से पीड़ित	= अकालपीड़ित

(गुरुदत्त, रेखांकित, भूखमरा, तुलसीकृत, प्रेमातुर, मदांध, धनहीन)

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष : इसमें 'के लिए' का लोप हो जाता है; जैसे –

रसोई के लिए घर	= रसोईघर	देश के लिए भक्ति	= देशभक्ति
राह के लिए खर्च	= राहखर्च	बलि के लिए पशु	= बलिपशु
डाक के लिए गाड़ी	= डाकगाड़ी	आराम के लिए कुर्सी	= आराम कुर्सी
गुरु के लिए दक्षिणा	= गुरुदक्षिणा	हवन के लिए सामग्री	= हवनसामग्री

(कृष्णार्पण, गोशाला, मार्गव्यय, राज्यलिप्सा, यज्ञवेदी, स्वदेशप्रेम)

(iv) अपादान तत्पुरुष : इसमें 'से' का लोप हो जाता है; जैसे –

बंधन से मुक्त	= बंधनमुक्त	जन्म से अंध	= जन्मांध
पथ से भ्रष्ट	= पथभ्रष्ट	देश से निकाला	= देशनिकाला

पद से च्युत	=	पदच्युत	जाति से भ्रष्ट	=	जातिभ्रष्ट
धर्म से विमुख	=	धर्मविमुख	भय से भीत	=	भयभीत

(ऋणमुक्त, ज्ञानमुक्त, गुणहीन, आकाशपतित, पदमुक्त, लक्ष्यभ्रष्ट)

(v) सम्बन्ध तत्पुरुष : इसमें का / की / के का लोप हो जाता है; जैसे -

सेना का पति	=	सेनापति	राजा की सभा	=	राजसभा
कर्ण के फूल	=	कर्णफूल	जल की धारा	=	जलधारा
घोड़ों की दौड़	=	घुड़दौड़	सिर का दर्द	=	सिरदर्द
अमृत की धारा	=	अमृतधारा	आम का चूर	=	अमचूर

(रामानुज, गंगातट, देवमूर्त्ति, भारतवासी, भातृस्नेह, लोकतंत्र, राष्ट्रपति)

(vi) अधिकरण तत्पुरुष : इसमें में/पर का लोप हो जाता है; जैसे–

जल में मग्न	=	जलमग्न	अपने पर बीती	=	आपबीती
कवियों में राजा	=	कविराज	घोड़े पर सवार	=	घुडसवार
डिब्बे में बन्द	=	डिब्बाबंद	नरों में श्रेष्ठ	=	नरश्रेष्ठ
वन में वास	=	वनवास	गृह में प्रवेश	=	गृहप्रवेश

(कलाप्रवीण, पुरुषोत्तम, निशाचर, धर्मवीर, शास्त्रप्रवीण, प्रेमनिमग्न)

इनके अतिरिक्त तत्पुरुष समास के और पाँच भेद हैं; जैसे-

(क) उपपद तत्पुरुष (ख) मध्यपदलोपी तत्पुरुष (ग) तत्पुरुष

(घ) कर्मधारय तत्पुरुष (ङ) द्विगु तत्पुरुष

(क) उपपद तत्पुरुष : इस समास का उत्तरपद क्रिया से बना हुआ कृदंत होता है; जैसे–

दिवा (दिन) को करनेवाला	=	दिवाकर
शम् (शांति) को करनेवाला	=	शंकर
कुंभ को करने वाला	=	कुंभकार
व्योम (आकाश) में गमन करने वाला	=	विहंगम
उर से गमन करने वाला	=	उरग
पंक में जन्म लेने वाला	=	पंकज
कान को काटने वाला	=	कनकटा
पय को देने वाला	=	पयोद

(ख) मध्यपदलोपी तत्पुरुष : इसमें पूर्व और उत्तर पद के बीच कारक चिह्न सहित सारे पद लुप्त हो जाते हैं; जैसे –

पवन से चलनेवाली चक्की	=	पवनचक्की
वन में रहनेवाला मानुष	=	वनमानुष
तुला में बराबर दिया जानेवाला दान	=	तुलादान
बैलों से चलेनवाली गाड़ी	=	बैलगाड़ी
गोबर से बना गणेश	=	गोबरगणेश
घृत से मिश्रित अन्न	=	घृतान्न
पर्णों से निर्मित शाला	=	पर्णशाला
गुरु के संबंध से भाई	=	गुरुभाई

(ग) **नञ् तत्पुरुष :** निषेध या अभाव के अर्थ में पूर्वपद 'न' के स्थान पर 'अ' या 'अन्' हो जाता है; जैसे –

न आचार = अनाचार	न पूर्ण = अपूर्ण
न आश्रित = अनाश्रित	न संभव = असंभव
न आगत = अनागत	न योग्य = अयोग्य
न भाव = अभाव	न हित = अहित

(घ) **कर्मधारय तत्पुरुष :** इसमें दोनों पदों के बीच विशेषण - विशेष्य (संज्ञा) का संबंध होता है अथवा उपमान-उपमेय का संबंध होता है; जैसे -

विशेषण -विशेष्य (संज्ञा)

महान् राजा = महाराजा	नीली गाय = नीलगाय
शुभ आगमन = शुभागमन	सत् जन = सज्जन
अंध विश्वास = अंधविश्वास	महान् ऋषि = महर्षि
पीत अम्बर = पीताम्बर	श्याम सुन्दर = श्यामसुन्दर

(सत्संगति, उच्चशिखर, नीलगगन, नीलकंठ, कालापानी, लघुमानव)

उपमान- उपमेय के आधार पर कर्मधारय तत्पुरुष समास के तीन उपभेद किये जा सकते हैं–

(i) उपमान कर्मधारय (ii) उपमित (उपमेय) कर्मधारय (iii) रूपक कर्मधारय

(i) उपमान कर्मधारय : इसमें जिससे उपमा दी जाय वह पहले रहता है तथा जिसकी उपमा दी जाय वह बाद में । इन दोनों पदों के बीच आने वाले के समान, की तरह, जैसा/जैसे/जैसी का लोप हो जाता है; जैसे –

विद्युत् जैसी चंचला	=	विद्युच्चंचला
घन की तरह श्याम	=	घनश्याम
चन्द्र के समान मुख	=	चन्द्रमुख
कमल जैसे नयन	=	कमलनयन

(ii) उपमित कर्मधारय : इसमें उपमेय पूर्वपद और उपमान उत्तरपद होता है; जैसे–

नर सिंह के समान	=	नरसिंह
अधर पल्लव के समान	=	अधरपल्लव

(iii) रूपक कर्मधारय : इसमें उपमेय को ही उपमान कह दिया जाता है, अर्थात् एक पर दूसरे का आरोप कर दिया जाता है; जैसे –

मुख ही है चन्द्र	=	मुखचन्द्र
विद्या ही रत्न	=	विद्यारत्न
ज्ञान रूपी अमृत	=	ज्ञानामृत
देह रूपी लता	=	देहलता

(ङ) द्विगु तत्तपुरुष : इसमें पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण होता है और उत्तरपद संज्ञा । पूरा पद समूह का बोध कराता है; जैसे –

तीन लोकों का समूह = त्रिलोक

पाँच वटों का समाहार = पंचवटी

सप्त सिंधुओं का समूह = सप्तसिंधु

दो पहरों का योग = दोपहर

(चौराहा, षड्ऋतु, सप्तपदी, इकन्नी, नवग्रह, सतसई, नवनिधि)

(iii) द्वन्द्व समास –

इस समास में दोनों या तीनों पद समान होते हैं । इन पदों के बीच आनेवाला और/या लुप्त हो जाता है; जैसे –

माँ और बाप = माँ-बाप

माता और पिता = मातापिता

अन्न और जल = अन्नजल

आज और कल = आजकल

आगा और पीछा = आगापीछा

सुख और दुःख = सुखदुःख

धर्म या अधर्म = धर्माधर्म

पाप और पुण्य = पापपुण्य

(बापदादा, राजा-रानी, आचार-विचार लोटा-डोरी, दाल-भात)

(iv) बहुव्रीहि समास –

इस समास में पूर्वपद या उत्तरपद कोई भी प्रधान नहीं होता । सामासिक पद तीसरेपद (संज्ञा) का विशेषण बन जाता है और उसीका अर्थ भी देता है, जैसे–

दस आननवाले/दस आनन हैं जिसके	=	दशानन (रावण)
लम्बे उदरवाले / लम्बा उदर है जिसका	=	लम्बोदर (गणेश)
पीत अम्बरवाले/पीत अम्बर है जिसका	=	पीताम्बर (कृष्ण)
चक्र धारण करने वाले / चक्र हाथ में है जिसके	=	चक्रधर (विष्णु)
नीलकण्ठवाले / नील कंठ है जिसका	=	नीलकण्ठ (महेश्वर/शिव)
शांत चित्तवाला / शांत है चित्त जिसका	=	शान्तचित्त
बारह सींगोंवाला / बारह सींग हैं जिसके	=	बारहसिंगा
फटे कानवाला /फटे हैं कान जिसके	=	कनफटा

(कमलनैन, अंशुमाली, वीणापाणि)

अभ्यास

1. समास कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम लिखिए और प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए ।

2. **निम्नलिखित सामासिक शब्दों का विग्रह कीजिए–**

   दुखार्त्त, विधानसभा, पददलित, भरपेट, ॠणमुक्त, श्रमदान, गृहप्रवेश, त्रिगुण, महाकाव्य, देशान्तर, घृतान्न, घनश्याम, चतुरानन, नाक-कान, पापपुण्य, सीताराम, भलाबुरा, विद्यासागर, चतुरानन ।

3. निम्नलिखित शब्दों को मिलाकर सामासिक शब्द बनाइए और उस समास का नाम भी बताइए :

दश हैं आनन जिसके, मरणपर्यन्त, नरसिंह के समान, अन्य ग्राम, चरण कमल के समान, चार राहों का समाहार, कुंभ को करनेवाला, दिक् हैं अम्बर जिसका, भात और दाल, ग्राम का उद्धार, महान्‌बली, जल से जात ।

4. 'क' स्तंभ के समासों के साथ 'ख' स्तंभ के सामासिक पदों का मिलान कीजिए –

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
उपमित कर्मधारय	मुखचन्द्र
द्विगु	मरणोत्तर
करण तत्पुरुष	मनमाना
अव्ययीभाव	महापुरुष

●

उपसर्ग

भाषा में नए शब्दों का निर्माण करने के लिए शब्द के पहले जो शब्दांश जोड़े जाते है, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं । ये जिस शब्द से जुड़ते हैं, उसे एक नया अर्थ देते हैं । 'हार' शब्द के पहले जुड़नेवाले निम्न उपसर्गों को देखिए –

आहार (भोजन / खाना), संहार (नाश), प्रहार (मार) विहार (सैर), परिहार (त्याग) उपहार (भेंट), प्रत्याहार (लैटा लेना)

हिन्दी में ये उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं –

(क) संस्कृत उपसर्ग (ख) हिन्दी उपसर्ग (ग) उर्दू (अरबी/फारसी से आए उपसर्ग)

इनमें से कुछ मुख्य उपसर्ग दिए जा रहे हैं –

(क) संस्कृत उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	कुछ उदाहरण
अति	अधिक/बहुत, परे	अतिशय, अतिक्रम, अत्याचार, अत्यंत, अतिरिक्त, अत्युक्ति
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अध्यक्ष, अधिपति, अधिकार, अध्यादेश,अधिकृत
अनु	पीछे, प्रत्येक, समान	अनुगामी, अनुचर, अनुकूल, अनुसार, अनुरूप, अनुराग, अनुशासन, अनुताप,
अप	हीनता, बुरा, अभाव	अपकार, अपकीर्त्ति, अपमान, अपशब्द, अपराध, अपयश, अपव्यय
अभि	सामने, निकट, ओर	अभिशाप, अभिमान, अभिलाषा, अभ्यागत, अभिवादन, अभिभाषण, अभिनय,
अव	नीचे, हीन	अवगुण, अवकाश, अवनति, अवज्ञा, अवतरण, अवमान, अवतीर्ण
आ	तक, समेत	आजन्म, आशंका, आदान, आकर्षण, आक्रमण, आजीवन, आमरण, आरक्त

उपसर्ग	अर्थ	कुछ उदाहरण
उत् उद्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्तम, उत्कर्ष, उन्नति, उत्कण्ठा, उद्योग, उद्भव,उल्लास
उप	निकट, समान, सहायक	उपदेश, उपचार, उपकार, उपस्थित, उपवन, उपमंत्री, उपनाम
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्गुण, दुराचार, दुरवस्था, दुष्कर्म, दुस्सह
प्र	अच्छा, उत्कृष्ट, आगे	प्रणाम, प्रबंध, प्रशान्ति, प्रगति, प्रयोग
परा	पीछे, उल्टा	पराजय, परामर्श, पराभव, पराक्रम
सु	अच्छा, सहज	सुदूर, सुकर्म, सुगम, सुपुत्र, सुयश
निर्	नहीं, निषेध, बिना	निर्जन, निरादर, निर्दोष, निष्काम, निश्चल

(ख) हिन्दी उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	कुछ उदाहरण
अ	निषेध, अभाव	अमोल, अथाह, अलग, अचेत, अछूत, अपढ़, अजान, अटल
अध	आधा	अधकचरा, अधमरा, अधजला, अधपका, अधखिला, अधजमा, अधबना
अन	निषेध, अभाव	अनजान, अनपढ़, अनकहा, अनहोनी, अनमना, अनमोल, अनबन, अनगिनत
उन	एक कम्	उनतीस, उनतालीस, उनसठ, उनचास
औ	हीन, निषेध	औगुन, औढ़र, औघट, औसर
क/कु	बुरा, हीन	कपूत, कुठौर, कुपात्र, कुमार्ग, कुरूप, कुचाल, कुपुत्र, कुदेश
स/सु	श्रेष्ठ, सुन्दर	सपूत, सुघड़, सुडौल, सुजान, सचेत, सजग
दु	बुरा, हीन	दुबला, दुकाल, दुस्वप्न
नि	निषेध, अभाव	निकम्मा, निडर, निहत्था, निधड़क, निठल्ला, निपूता
बिन	बिना, निषेध	बिनबात, , बिनकहे, बिनमाँगा, बिनदेखा, बिनचाहा, बिनकाम, बिनबिका
भर	पूर्ण, पूरा	भरपेट, भरपूर, भरमार, भरसक, भरपाई

(ग) उर्दू उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	कुछ उदाहरण
कम	थोड़ा, हीन	कमअक्ल, कमजोर, कमसमझ, कमउम्र, कमख्याल
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशखबरी, खुशमिजाज, खुशहाल, खुशनसीब, खुशकिस्मत
गैर	भिन्न, विरुद्ध	गैरहाजिर, गैरजिम्मेदार, गैरकानूनी, गैरवाकिफ, गैरमुनासिब
ना	कम, अभाव	नाचीज, नादान, नाराज, नालायक, नापसंद,नासमझ, नाजायज
बद	बुरा	बदनाम, बदबू, बदहजमी, बदख्याल, बदतमीज, बदमिजाज
बा	साथ	बाकायदा, बाइज्जत, बाइंसाफ, बाअदब, बातमीज
बे	बिना	बेईमान, बेहोश, बेकसूर, बेमन, बेचारा, बेइज्जती, बेअदब
ला	बिना	लापता, लापरवाह, लावारिस, लाजवाब, लाइलाज, लाचार
सर	मुख्य	सरपंच, सरताज, सरदार
हम	समान, साथ	हमशक्ल, हमउम्र, हमदर्द, हमराही, हमसफर, हमदम
हर	प्रत्येक	हररोज, हरघड़ी, हरदम, हरएक, हरकोई, हरसाल

प्रत्यय

नए शब्दों का निर्माण करने के लिए जो शब्दांश शब्द के बाद जोड़े जाते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं । ये जिन शब्दों से जुड़ते हैं, उन्हें नए अर्थ देते हैं; जैसे-

मूर्ख (व्यक्ति के लिए), मूर्खता (व्यक्ति का गुण-भाववाचक)

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं - (i) कृत् प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय

(i) कृत्प्रत्यय : ये धातु के बाद लगते हैं । इनसे बने शब्दों को कृदन्त कहते हैं । ऐसे शब्द 'संज्ञा' या 'विशेषण' होते हैं ।

(ii) तद्धित प्रत्यय : ये संज्ञा / सर्वनाम /विशेषण / अव्यय के बाद लगते हैं । इनसे बने शब्दों को तद्धितांत शब्द कहते हैं । ऐसे शब्द संज्ञा या विशेषण होते हैं ।

हिन्दी प्रत्यय 'कृत्' हों या 'तद्धित' तीन स्रोतों से आए हैं– संस्कृत, हिन्दी, उर्दू (अरबी-फारसी)

(i) कृत् प्रत्यय

- **संस्कृत के कृत् प्रत्यय**

प्रत्यय	**मूलधातु**	**कुछ उदाहरण (संज्ञा / विशेषण)**
अ	सृप, दिव्, चर्	सर्प, देव, चर
अक	कृ, गै, पठ्	कारक, गायक, पाठक
अन	पठ्, भुज्, शृ	पठन, भोजन, श्रवण
अनीय	गम्, दृश्, रम्, पठ्	गमनीय, दर्शनीय, रमणीय, पठनीय
आ	पूज्, शिक्ष	पूजा, शिक्षा
त(क्त)	कृ, मृ, विद्, शृ	कृत, मृत, विदित, श्रुत
तव्य	कृ वच्	कर्त्तव्य वक्तव्य
य	गम्, खा, पूज	गम्य, खाद्य, पूज्य

- हिंन्दी / उर्द् के कृत् प्रत्यय

प्रत्यय	मूलधातु	कुछ उदाहरण (संज्ञा विशेषण)
अंत	रट, भिड़	रटंत, भिडंत
अक्कड़	भी, भूल, घूम	पियक्कड़, भुलक्कड़, घुमक्कड़
आ	घट, झूल, ठेल	घाटा, झूला, ठेला
आन	उठ, उड़, मिल	उठान, उड़ान, मिलान
आव	बच, बह, लग	बचाव, बहाव, लगाव
आवट	बन,लिख, सज	बनावट, लिखावट, सजावट
आवा	देख, पछता, बोल	दिखावा, पछतावा, बुलावा
आई	चढ़, पढ़, लड़	चढ़ाई, पढ़ाई, लड़ाई
आऊ	कमा, टिक, बिक	कमाऊ, टिकाऊ, बिकाऊ
आक	तैर	तैराक
आका	उड़, लड़	उड़ाका, लड़ाका
आकू	लड़	लड़ाकू
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़, लजा, शरमा	झगड़ालू, लजालू , शरमालू
आवना	डर, लुभा	डरावना, लुभावना
आहट	खुजला, घबरा, चिल्ला	खुजलाहट, घबराहट,चिल्लाहट
इया	घट, बढ़	घटिया, बढ़िया
इयल	अड़, मर, सड़	अडियल, मरियल, सड़ियल
ई	धमक, बोल, हँस	धमकी, बोली, हँसी

प्रत्यय	मूलधातु	कुछ उदाहरण (संज्ञा विशेषण)
ऊ	कमा, खा, झाड़	कमाऊ, खाऊ, झाड़ू
एरा	बस, लूट	बसेरा, लुटेरा
औटी	कस	कसौटी
औता	समझ	समझौता
औती	कट, मान, चुन	कटौती, मनौती, चुनौती
त	खप, बच	खपत, बचत
ती	घट, चढ़, बढ़	घटती, चढ़ती, बढ़ती
न	चल, ले-दे, ढक	चलन, लेन,-देन, ढक्कन
नी	कर, भर, चट हो	करनी, भरनी, चटनी, होनी
वना	डर, लुभा, सुहा	डरावना, लुभावना, सुहावना
वाला	आ, पढ़, गा, बोल	आनेवाला, पढ़नेवाला, गानेवाला, बोलनेवाला
सार	मिल	मिलनसार
हार	रख, हो	राखनहार, होनहार
हारा	रख, रो	राखनहारा, रोवनहारा

(ii) तद्धित प्रत्यय

- **संस्कृत के तद्धित प्रत्यय**

प्रत्यय	मूलशब्द	कुछ उदाहरण
अ	कुरु, विष्णु, शिव	कौरव, वैष्णव, शैव
आलु	दया, कृपा, श्रद्धा	दयालु, कृपालु, श्रद्धालु
इक	धर्म, दिन, वर्ष	धार्मिक, दैनिक, वार्षिक
इत	आनंद, तरंग, पुष्प	आनंदित तरंगित, पुष्पित
इमा	रक्त, लघु, लाल	रक्तिमा, लघिमा, लालिमा

प्रत्यय	मूलशब्द	कुछ उदाहरण
इष्ठ	गुरु, बल, लघु	गरिष्ठ,बलिष्ठ, लघिष्ठ
ई	गुण, पक्ष	गुणी, पक्षी
ईन	कुल, ग्राम	कुलीन, ग्रामीण
ईय	भारत, राष्ट्र, स्वर्ग	भारतीय, राष्ट्रीय, स्वर्गीय
एय	कुन्ती, पुरुष, विनता	कौन्तेय, पौरुषेय, वैनतेय
ता	दीन, लघु, विशेष	दीनता, लघुता, विशेषता
त्व	गुरु, प्रभु, सती	गुरुत्व, प्रभुत्व, सतीत्व
मान	बुद्धि, शक्ति, श्री	बुद्धिमान, शक्तिमान, श्रीमान
य	धीर, पण्डित, मधुर	धैर्य, पाण्डित्य, माधुर्य
वान	गुण, ज्ञान, धन	गुणवान, ज्ञानवान, धनवान

- **हिन्दी / उर्दू के तद्धित प्रत्यय**

प्रत्यय	मूलशब्द	कुछ उदाहरण
आ	चूर, भूख, बाबू	चूरा, भूखा, बबुआ
आई	भला, बुरा, चिकना	भलाई, बुराई, चिकनाई
आऊ	उपज, पण्डित	उपजाऊ, पण्डिताऊ
आन	ऊँचा, नीचा, चौड़ा	ऊँचान, निचान, चौड़ान
आना	ठीक, रोज, साल	ठिकाना, रोजाना, सालाना
आर	लोहा, सोना	लुहार, सुनार
आस	खट्टा, मीठा	खटास, मिठास
आहट	कड़वा, चिकना	कड़वाहट, चिकनाहट
इया	खाट, गठरी, लोटा	खटिया, गठरिया, लुटिया
ई	खुश, खेत, चोर	खुशी, खेती, चोरी
ईन	नमक, रंग, शौक	नमकीन, रंगीन, शौकीन
ईला	छवि, रंग, रस	छबीला, रंगीला, रसीला

प्रत्यय	मूलशब्द	कुछ उदाहरण
ऊ	गरज, पेट, बाजार	गरजू, पेटू, बाजारू
एरा	अंध, चाचा, साँप	अंधरा, चचेरा, सपेरा
ऐत	डाका, लाठी	डकैत, लठैत
ओला	साँप, खाट	सँपोला, खटोला
ओं	घंटा,पहरा,तीस,सैकड़ा	घंटों, पहरों, तीसों, सैकड़ों
खाना	कैद, डाक, तोप	कैदखाना, डाकखाना, तोपखाना
खोर	आदमी, रिश्वत, हराम	आदमखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर
गर	जादू, सौदा	जादूगर, सौदागर
गी	ताजा, मर्दना	ताजगी, मर्दानगी
ची	अफीम, तोप, नकल	अफीमची, तोपची, नकलची
दान	कलम, पीक, मच्छर	कलमदान, पीकदान, मच्छरदान
दार	दुकान, मजा, थाना	दुकानदार, मजेदार, थानेदार
नाक	खौफ, दर्द, शर्म	खौफनाक, दर्दनाक, शर्मनाक
पन	पागल, बच्चा, लड़का	पागलपन, बचपन, लड़कपन
पा	पूजा, बूढ़ा, मोटा	पुजापा, बुढ़ापा, मुटापा
बाज	दगा	दगाबाज़
मंद	अकल, जरुरत, दौलत	अकलमंद, जरूरतमंद, दौलतमंद
वार	घण्टा, उम्मीद, भाषा	घण्टेवार, उम्मीदवार, भाषावार
वाला	खिलौना, घर, टोपी	खिलौनेवाला, घरवाला, टोपीवाला
हरा	दो, रूप, सोना	दुहरा (दोहरा) रुपहरा, सुनहरा
हारा	चूड़ी, लकड़ी	चुड़ीहारा, लकड़हारा

भाववाचक संज्ञाओं की रचना

प्रत्ययों का प्रयोग करके संज्ञाएँ एवं विशेषण बनाए जाते हैं। नीचे उनके कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं –

- **जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ**

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
पुरुष	पौरुष	मनुष्य	मनुष्यता
प्रभु	प्रभुत्व	मित्र	मित्रता
बन्धु	बन्धुत्व	लड़का	लड़कपन
बच्चा	बचपन	शत्रु	शत्रुता

क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
उड़ना	उड़ान	देखना	दिखावा
काटना	कटाई	धोना	धुलाई
खेलना	खेल	धमकाना	धमकी
खोजना	खोज	पहुँचना	पहुँच
गाना	गान	पकड़ना	पकड़
गिनना	गिनती	पहनना	पहनावा
छींकना	छींक	भूलना	भुलावा
देना	देन	लूटना	लूट
दौड़ना	दौड़	हारना	हार
मुस्काना	मुस्कराहट	मिलना	मिलावट

- **विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ**

विशेषण	**भाववाचक संज्ञा**	**विशेषण**	**भाववाचक संज्ञा**
अधिक	अधिकता	पण्डित	पण्डिताई
ओछा	ओछापन	बूढ़ा	बुढ़ापा
ऊँचा	ऊँचाई	बुरा	बुराई
एक	एकता	बेईमान	बेईमानी
कड़वा	कड़वाहट	बुद्धिमान	बुद्धिमत्ता
काला	कालिमा	भला	भलाई
खट्टा	खटास	मधुर	मधुरता / माधुर्य
खुश	खुशी	मीठा	मिठास
गरम	गरमी	मूर्ख	मूर्खता
गरीब	गरीबी	राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता
चतुर	चतुराई	लम्बा	लम्बाई
चिकना	चिकनाई	वीर	वीरत्व / वीरता
ज्यादा	ज्यादती	विधवा	वैधव्य
दीन	दीनता	सुन्दर	सौन्दर्य / सुन्दरता
पागल	पागलपन	सरल	सरलता

विशेषणों की रचना

- **संज्ञाओं से विशेषणों की रचना**

संज्ञा	**विशेषण**	**संज्ञा**	**विशेषण**
अन्त	अन्तिम	क्षण	क्षणिक
अंचल	आंचलिक	खेल	खिलाड़ी
अग्नि	आग्नेय	ग्राम	ग्रामीण
अक्ल	अक्लमंद	घर	घरेलू
अवरोध	अवरुद्ध	चाचा	चचेरा
आदर	आदृत / आदरणीय	जहर	जहरीला
आराधना	आराध्य	देश	देशी / देशीय

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
आत्मा	आत्मिक / आत्मीय	नोक	नुकीला
आश्रय	आश्रित	पश्चिम	पश्चिमी /पाश्चात्य
इच्छा	ऐच्छिक	पूजा	पूज्य / पूजनीय
ऋण	ऋणी	प्यास	प्यासा
किताब	किताबी	बर्फ	बर्फीला
कल्पना	कल्पित / काल्पनिक	मंगल	मांगलिक
केन्द्र	केन्द्रित / केन्द्रीय	मेधा	मेधावी
क्रोध	क्रुद्ध	वर्ष	वार्षिक
क्लेश	क्लिष्ट	शक्ति	शाक्त

- **धातुओं (क्रियाओं) से विशेषण**

धातु	विशेषण	धातु	विशेषण
अड़	अड़ियल	भाग	भगोड़ा
कृ	कृत	मिल	मिलनसार
खेल	खिलाड़ी	लभ्	लब्ध
झगड़	झगड़ालू	लुभ्	लुब्ध
टिक	टिकाऊ	लड़	लड़ाका / लड़ैत
तैर	तैराक	लूट	लुटेरा
दा	देय / दत्त	रो	रोवनहारा
दृश्	दर्शनीय	रख	राखनहारा
पढ़	पढ़नेवाला	शुध्	शुद्ध
पी	पियक्कड़	शृ	श्रवणीय
पूज्	पूज्य / पूजनीय	शोष्	शोषित
बढ़	बढ़िया	सुहा	सुहावना, सुहाना
बह	बहता	हँस	हँसोड़

अभ्यास

1. **निम्नलिखित शब्दो में से मूलशब्द और उपसर्ग अलग-अलग कीजिए :**

   अनपढ़, अबोध, कपूत, भरपूर, हरदम, प्रतिकूल, संस्कार, प्रचार, अपशब्द, उपदेश, परिक्रमा, अधिपति, बदसूरत, बाकायदा, विज्ञान, बेचैन, उत्थान, निश्चय, नासमझ, निडर

2. **निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए :**

   अध, नि, बद्, ला, हर, निर, परा, अनु, उप, अभि

3. **निम्नलिखित शब्दों में से मूलशब्द और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए :**

   खाऊ, घुमक्कड़, लुटेरा, लड़ाका, खिलौना, चढ़ाई, बसेरा, बढ़ती, सजावट, घबराहट, गाड़ीवाला, लुहार, मूर्खता, पिछला, प्यासा, मिठास, झूला, थकान, छलनी

4. **निम्नलिखित संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाइए :**

   सप्ताह, स्वर्ग, शरीर, गर्मी, जहर, जाति, खुशी, बुद्धि, क्षुधा, खून

5. **निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए :**

   उड़ना, लड़ना, देखना, हारना, छींकना, झगड़ना, घटना, पकड़ना, दौड़ना, समझना

6. **निम्नलिखित कृत प्रत्ययों की सहायता से शब्द बनाइए :**

   अनीय, आवट, अक्कड़, आलू, इयल, ई, ऊ, एरा, वाला, औती

7. **निम्नलिखित तद्धित प्रत्ययों की सहायता से शब्द बनाइए :**

   इक, ईय, मान, खोर, आहट आई, ईला, वाला, गर, दान, नाक, पन

●

अध्याय - 6

रूप विचार

वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को पद कहते हैं। ये पद नाना रुपों में दिखाई-देते हैं। इसलिए इन्हें रूप भी कहते हैं।

पद बनते समय मूल शब्द में कभी-कुछ परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल आदि के कारण हो जाता है।

जैसे – लिंग के कारण - लड़का जाता है। लड़की जाती है।

वचन के कारण - अच्छा बच्चा पढ़ता है अच्छे बच्चे पढ़ते हैं।

कारक के कारण - मैं गया। मुझे जाना पड़ा।

पुरुष के कारण - मैं नाचूँगी। वे नाचेंगे।

काल के कारण - वह खाता है। उसने खाया।

कभी-कभी वाक्य में पद बनने पर मूल शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता।

जैसे - वह जरूर आएगा।

मेज के नीचे बिल्ली है।

मनोज और सरोज पढ़ रहे हैं।

वाह ! तुमने कितना अच्छा गाया।

अतएव रूप परिवर्तन की दृष्टि से पद दो प्रकार के हैं। जिन पदों का रूप परिवर्तित होता है, वे विकारी हैं, जिनका नहीं होता वे अविकारी हैं।

विकारी पदों के चार भेद हैं :

(१) संज्ञा (विशेष्य) (२) सर्वनाम, (३) विशेषण, (४) क्रिया

अविकारी पदों के भी चार भेद हैं :

(१) क्रिया-विशेषण, (२) संबंधबोधक, (३) समुच्चयबोधक, (४) विस्मयादिबोधक

इन्हें अव्यय भी कहते हैं।

संज्ञा

किसी व्यक्ति, जाति, द्रव्य, समूह और भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं । इसके पाँच भेद होते हैं – व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक भाववाचक ।

(i) **व्यक्तिवाचक संज्ञा :** इससे केवल एक का बोध होता है, जैसे– राम, ऐरावत, कटक, भारत, बिंध्य, महानदी, कपिला, कामायनी आदि ।

(ii) **जातिवाचक संज्ञा :** इससे एक ही प्रकार की एकाधिक व्यक्तियों, वस्तुओं का यानी पूरी जाति का बोध होता है, जैसे – पुरुष, स्त्री, बालक, लड़की, कोयल, घोड़ा, पशु, पक्षी, पहाड़, किताब, कुर्सी, कवि, शिक्षिका आदि ।

(iii) **द्रव्यवाचक संज्ञा :** इनसे किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध होता है, जिसे हम केवल माप या तौल सकते हैं, पर गिन नहीं सकते । द्रव्य नवनिर्माण के आधार होते हैं । जैसे - ताँबा, सोना, चाँदी, तेल, दूध, पानी, आटा, चावल, लकड़ी आदि ।

(iv) **समूहवाचक संज्ञा :** इससे अनेक प्राणियों या वस्तुओं के समूह का बोध होता है जैसे - दल, परिवार, गुच्छा, झुण्ड, कुटुम्ब, पुंज, कक्षा, टोली, भीड़, मण्डली, सभा, सेना आदि ।

(v) **भाववाचक संज्ञा :** इससे भाव, दशा, अवस्था, धर्म, गुण या क्रियाव्यापार का बोध होता हैं, जैसे - क्रोध, बहाव, सौंदर्य, प्रेम, बचपन, बुढ़ापा, टहलना, रोना, लम्बाई, घृणा, ममता, प्रार्थना, पढ़ाई, लिखावट आदि ।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण

कुछ भाववाचक संज्ञाएँ मूल रूप में होती हैं; जैसे - प्रेम, घृणा, झूठ, सच, उत्साह, साहस, लोभ ।

कुछ भाववाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया और अव्यय से बनती हैं । ये हैं –

(क) संज्ञा से : लड़का – लड़कपन, मनुष्य – मनुष्यता, साधु – साधुता

(ख) **विशेषण से** : खट्टा – खटास, सुन्दर – सौंदर्य/सुंदरता, अच्छा – अच्छाई, गरीब – गरीबी, काला – कालापन, सफेद – सफेदी, बूढ़ा – बुढ़ापा

(ग) **सर्वनाम से** : मम – ममता/ममत्व, अहं – अहंकार, आप – आपा, अपना – अपनापन, निज – निजत्व

(घ) **क्रिया से** : मारना – मार, पढ़ना – पढ़ाई, लिखना – लिखावट, चिल्लाना – चिल्लाहट, बचाना – बचाव, कृ – कार्य

(ङ) **अव्यय से** : दूर – दूरी, निकट – निकटता, अधीन – अधीनता, शाबाश – शाबाशी, समीप – सामीप्य

टहलना, रोना, पढ़ना, आदि क्रियार्थक संज्ञाएँ भी भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आती हैं जैसे -

सवेरे टहलना स्वास्थ के लिए अच्छा है ।

हर समय रोने से काम नहीं चलेगा ।

आपके आने की सूचना पाकर मैं पढ़ने लगा ।

अभ्यास

1. संज्ञा किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद होते हैं ?
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा से क्या बोध होता है ? पाँच उदाहरण दीजिए ।
3. जातिवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? पाँच उदाहरण दीजिए ।
4. **निम्नलिखित शब्दों में से भाववाचक संज्ञाओं को छाँटिए-**

   मोहन, कायरता, चौड़ाई, केला, लड़कपन, फूल, पहाड़, घृणा, पढ़ना, औरत, कमला, कढ़ाई
5. समूहवाचक संज्ञा किसे कहते हैं ? सोदाहरण बताइए ।
6. **नीचे (क) में कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ और (ख) में कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ दी गयी हैं - उनका मिलान कीजिए :**

   (क) चेतक, कामायनी, महेश, कोलकाता, रीता, ऋषिकुल्या, हरिश्चन्द्र

   (ख) पुरुष, राजा, घोड़ा, पुस्तक, नदी, लड़की, शहर

7. नीचे दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए :

कमजोर, पढ़, दूर, मानव, साधु, काला, आतुर, अपना, ऊँचा, झगड़

8. नीचे कुछ द्रव्यवाचक संज्ञाएँ और भाववाचक संज्ञाएँ मिलकर आयी हैं, उनको अलग-अलग छाँटिए :

मछली, आनंद, तेल, मधुरता, पानी, धैर्य, चाय, ममता, घी, कड़वाहट, लोहा, शराब, मिठास, शैशव, हर्ष, सिलाई, आटा, नमक, सोना, लकड़ी

9. नीचे दिए गए वाक्यों में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक तथा भाववाचक संज्ञाओं को छाँटकर अलग-अलग लिखिए :

रमेश दसवीं कक्षा का छात्र है । वह अपने गाँव के जवाहर विद्यापीठ में पढ़ता है । वह क्रीड़ासंघ का सदस्य भी है । लिखाई-पड़ाई में भी वह रुचि रखता है । शिक्षक उसे बहुत प्यार करते हैं । वह अपने परिवार में दाल-रोटी खाकर खुशी से रहता है ।

10. नीचे दी गई सारणी में कुछ शब्द और उनसे संबंधित भाववाचक संज्ञाएँ दी गई हैं । उनका मिलान कीजिए :

शब्द	भाववाचक संज्ञा	शब्द	भाववाचक संज्ञा
उड़ना	मिलावट	पीटना	बचपन
मूर्ख	कड़वाहट	बूढ़ा	कवित्व
पागल	धमकी	बच्चा	सजावट
कड़वा	मूर्खता	पुरुष	हार
मिलना	उड़ान	कवि	वीरत्व
बुरा	पागलपन	सजाना	पौरुष
धमकाना	बुराई	वीर	बुढ़ापा
		हारना	पिटाई

लिंग

पुरुष या स्त्री की पहचान उसके लिंग से होती है । लिंग का अर्थ है – चिह्न, लक्षण या निशान । पुरुष जाति के प्राणी को पुंलिंग और स्त्री जाति के प्राणी को स्त्रीलिंग माना जाता है ।

हम जानते हैं कि **हिन्दी में प्रत्येक संज्ञा शब्द या तो पुंलिंग में होता है, या स्त्री लिंग में ।**

प्रत्येक संज्ञा शब्द का लिंग जानना इसलिए जरूरी है कि कर्ता या कर्म के रूप में प्रयुक्त संज्ञा-शब्द के लिंग के अनुसार क्रिया-पद बनता है, जैसे –

राम जाता है ।	सीता जाती है ।
रामने रोटी खायी ।	सीता ने फल खाया ।
हवा चलती है ।	पवन बह रहा है ।

मनुष्य और अन्य प्राणियों का लिंग जानना आसान है, क्योंकि प्राकृतिक रूप से वे पुरुष-स्त्री या नर-मादा होते हैं; जैसे –

पुंलिंग शब्द	**स्त्रीलिंग शब्द**	**पुंलिंग शब्द**	**स्त्रीलिंग शब्द**
नर	नारी	कुत्ता	कुतिया
घोड़ा	घोड़ी	शेर	शेरनी
बालक	बालिका	बैल	गाय
बाघ	बाघिन	लड़का	लड़की
पिता	माता	पति	पत्नी
पुत्र	कन्या	हिरन	हिरनी
माली	मालिन	राजा	रानी

लेकिन कुछ प्राणिवाचक शब्द हैं, जिनके स्त्रीलिंग रूप नहीं हैं, जैसे –

उल्लू, केंचुआ, कौआ, कछुआ, खरगोश, तोता, नेवला, भेड़िया, मच्छर ।

कुछ ऐसे प्राणिवाचक शब्द हैं, जिनके पुंलिंग रूप नहीं हैं; जैसे –

कोयल, गिलहरी, चील, जोंक, जूँ, तितली, मकड़ी, मक्खी, मछली, मैना ।

ऐसे नित्य पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्दों में नर, मादा शब्द जोड़कर लिंग स्पष्ट किया जाता है, जैसे –

नर कौआ – मादा कौआ   नर कोयल – मादा कोयल

अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों का लिंग जानने के लिए रूप, अर्थ और शब्दांत मात्रा पर विचार करना पड़ता है । लिंग जानने के लिए मुख्यतः प्रयोग और अभ्यास की जरूरत है । फिर भी हम कुछ तरीके अपनाते हैं । ये हैं –

(i) शब्द के बहुवचन रूप के आधार पर लिंग-निर्णय ।

(ii) अर्थ के आधार पर लिंग-निर्णय ।

(iii) शब्दांत स्वर या प्रत्यय के आधार पर लिंग-निर्णय ।

बहुवचन रूप के आधार पर लिंग-निर्णय :

(1) जिन अप्राणिवाचक अकारांत संज्ञा शब्दों का रूप बहुवचन में नहीं बदलता, अर्थात् एकवचन तथा बहुवचन दोनों में एक-सा रूप रहता है, वे शब्द पुंलिंग हैं, जैसे – भात, तेल, पवन, जल, खेत, दाँत, बाजार, खेल, सामान, मकान, माल, अनाज, जवाब, पेड़, नमक, गुलाब, शरीर, ग्रंथ, काल, नाम आदि ।

(2) जिन अप्राणिवाचक अकारांत संज्ञा शब्दों का अंतिम 'अ' का बहुवचन में 'एँ' हो जाता है, वे शब्द स्त्री लिंग हैं; जैसे – बात, ईंट, रात, राह, सड़क, लाश, नस, ईख, दाल, आदत, इमारत, लात, डाल, दुकान, फसल, कोशिश, साँस, किताब, पुस्तक, कीमत, सरकार, सुबह, तस्वीर, आफत, कमर, मूँछ, कमीज, झील, मेज, चीज, बंदूक आदि ।

(3) जिन अप्राणिवाचक आकारांत संज्ञा शब्दों का अंतिम 'आ' बहुवचन में 'ए' हो जाता है, वे शब्द पुंलिंग हैं; जैसे – मेला, ताला, कपड़ा, मसाला, कचरा, अँगूठा, काँटा, सीसा, चना, कमरा, लोटा, छाता, रास्ता, परदा, जूता, कुरता, पराठा, चौराहा, दरवाजा आदि ।

(4) जिन अप्राणिवाचक आकारांत संज्ञा शब्दों के बहुवचन में 'एँ' जुड़ता है, वे शब्द स्त्रीलिंग हैं, जैसे – आशा, उपमा, हवा, सेना, लता, कथा, शाखा, सभा, इच्छा, योजना, दिशा, विद्या, सूचना, परीक्षा, कविता, भाषा, क्रिया, संख्या, रचना, सजा, दवा, घटना आदि ।

(5) जिन अप्राणिवाचक इ/ईकारांत संज्ञा शब्दों के रूप बहुवचन में नहीं बदलते, वे शब्द पुंलिग हैं, जैसे – गिरि, अतिथि, मोती, पानी, जलधि, जी, घी ।

(6) जिन अप्राणिवाचक इ/ईकारांत संज्ञा शब्दों की अंतिम इ/ई बहुवचन में 'याँ' हो जाती है, वे शब्द स्त्री लिंग हैं, जैसे – नदी, मक्खी, चूड़ी, जाति, तिथि, रीति, नीति, विधि, खिड़की, समाधि, गली, लड़ाई, उपाधि, मिठाई, रोटी, पूड़ी, जलेबी, पकौड़ी, उँगली, टोपी, बीमारी, चपाती, सब्जी आदि ।

(7) जिन उ/ऊ/ओकारांत संज्ञा शब्दों का रूप बहुवचन में नहीं बदलता, वे शब्द पुंलिंग हैं; जैसे – शिशु, लड्डू, आलू, रेडियो

(8) जिन उ/ऊ/ओकारांत संज्ञा शब्दों को बहुवचन में 'एँ' हो जाता है, वे शब्द स्त्री लिंग में हैं; जैसे – ऋतु, वस्तु, झाड़ू, लू, गौ ।

नोट : वचन अध्याय में शब्दों के रूप दिए गए हैं । उन्हें देखें और शब्दों के रूपों को जान लें ।

अर्थ के आधार पर लिंग-निर्णय :

पुंलिंग शब्द :

प्राय : अनाजों, खाद्यपदार्थों, फलों, वृक्षों, धातुओं, रत्नों, ग्रहों और द्रव पदार्थों के नाम पुंलिंग होते हैं; जैसे – धान, गेहूँ, चावल, चना, बाजरा, पराठा, भात, हलवा, लड्डू, पेड़ा, अनार, अँगूर, आम, केला, पपीता, बरगद, पीपल, नीम, गुलाब, सोना, पीतल, ताँबा, लोहा, काँसा, हीरा, मोती, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, तारा, सूर्य, घी, पानी, दूध, तेल, दही आदि ।

पर इनमें से कुछ स्त्रीलिंग में आते हैं; जैसे – अरहर, मूँग, मकई, रोटी, दाल, सब्जी, तरकारी, पूड़ी, कचौड़ी, जलेबी, लीची, ककड़ी, इमली, मौलसिरी, चाँदी, मणि, पृथ्वी, चाय, कॉफी, शराब, छाछ आदि ।

स्त्रीलिंग शब्द :

प्राय: नदियों, नक्षत्रों, भाषाओं, तिथियों के नाम स्त्रीलिंग में होते हैं; जैसे – महानदी, गंगा, रोहिणी, विशाखा, हिन्दी, ओड़िआ, संस्कृत, अंग्रेजी, प्रतिपदा, तीज, अमावास्या, पूर्णिमा आदि ।

पर इनमें से कुछ पुंलिंग में आते हैं; जैसे – ब्रह्मपुत्र, सिंधु, शोण

शब्दांत अक्षर या प्रत्यय के आधार पर लिंग-निर्णय

पुंलिंग शब्द :

- जिन तत्सम शब्दों के अंत में अ, अन, त्व, त्य, य, आय, आर, आस हों, वे शब्द पुंलिंग होते हैं; जैसे – त्याग, कौशल, नयन, गुरुत्व, नृत्य, सौंदर्य, अन्याय, संसार, विकार, विलास, उल्लास आदि ।

- जिन तद्भव शब्दों के अंत में – आ, आव, ना, पा, पन हों, वे शब्द पुंलिंग होते हैं; जैसे – आटा, कपड़ा, बहाव, भुलावा, जागना, पढ़ना, बुढ़ापा, बचपन, भोलापन आदि ।

स्त्रीलिंग शब्द :

- जिन तत्सम शब्दों के अंत में आ, ना, इ, इमा, ता हों, वे शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे – पूजा, प्रार्थना, कामना, शिक्षा, छवि, कृषि, कालिमा, महिमा, एकता, साधुता ।

- जिन तद्भव शब्दों के अंत में अ, आई, ई, इया, अन, वट, हट हों वे शब्द स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे – भूख, बचत, बात, लड़ाई, पढ़ाई, चिट्ठी, रोटी, खटिया, जलन, बनावट, लिखावट, कड़वाहट, आहट आदि ।

शब्दों का लिंग-परिवर्तन

शब्द के रूप को पुंलिंग या स्त्रीलिंग में बदला जा सकता है । उसके लिए कुछ निश्चित नियम हैं । नीचे उनका उल्लेख किया गया है ।

(1) अकारांत शब्दों में 'आ' जोड़कर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
वृद्ध	वृद्धा	पूज्य	पूज्या
शिष्य	शिष्या	सुत	सुता
अध्यक्ष	अध्यक्षा	छात्र	छात्रा

(2) अकारांत शब्दों में 'ई' जोड़कर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
देव	देवी	गोप	गोपी
पुत्र	पुत्री	दास	दासी
हिरन	हिरनी	कबूतर	कबूतरी

(3) आकारांत शब्दों में 'ई' जोड़कर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
लड़का	लड़की	बेटा	बेटी
घोड़ा	घोड़ी	भतीजा	भतीजी
मामा	मामी	बकरा	बकरी

(4) आकारांत शब्दों में 'इया' जोड़कर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
कुत्ता	कुतिया	बुड्ढ़ा	बुढ़िया
बेटा	बिटिया	बंदर	बंदरिया
चूहा	चुहिया	गुड्डा	गुड़िया

(5) कुछ शब्दों के अंत में 'इन' जोड़कर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
बाघ	बाघिन	नाती	नातिन
साँप	साँपिन	धोबी	धोबिन
नाग	नागिन	सुनार	सुनारिन

(6) कुछ शब्दों के अंत में 'नी' जोड़कर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
मोर	मोरनी	गरीब	गरीबनी
शेर	शेरनी	ऊँट	ऊँटनी
हाथी	हथिनी	सिंह	सिंहनी

(7) कुछ शब्दों के अंत में 'आनी' जोड़कर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
देवर	देवरानी	सेठ	सेठानी
जेठ	जेठानी	भव	भवानी
नौकर	नौकरानी	चौधरी	चौधरानी

(8) शब्दांत 'अक' को 'इका' बनाकर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
लेखक	लेखिका	सहायक	सहायिका
पाठक	पाठिका	अध्यापक	अध्यापिका
बालक	बालिका	शिक्षक	शिक्षिका

(9) कुछ शब्दों के अंत में 'आइन' जोड़कर –

पुंलिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	**स्त्रीलिंग**
गुरु	गुरुआइन	पण्डा	पण्डाइन
लाला	ललाइन	बनिया	बनियाइन
बाबू	बबुआइन	ठाकुर	ठकुराइन

(10) शब्दांत वान/मान को वती/मती बनाकर –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
धनवान	धनवती	श्रीमान	श्रीमती
गुणवान	गुणवती	बुद्धिमान	बुद्धिमती
भगवान	भगवती	आयुष्मान	आयुष्मती

(11) स्वतंत्र शब्दों का प्रयोग करके –

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
पिता	माता	सम्राट	सम्राज्ञी
भाई	बहन/भाभी	पति	पत्नी
मर्द/आदमी	औरत	कवि	कवयित्री
वर	वधू	पुत्र	कन्या
युवक	युवती	ससुर	सास
बैल	गाय	बादशाह	बेगम
नर	मादा	राजा	रानी
भैंसा	भैंस	पुरुष	स्त्री
फूफा	फूफी/बुआ	विद्वान	विदुषी
साहब	मेम	ननदोई	ननद
ताऊ	ताई	भेड़ा	भेड़

अभ्यास

1. लिंग किसे कहते हैं ? इसके भेदों का सोदाहरण परिचय दीजिए ।

2. **निम्नलिखित शब्दों का लिंग-निर्णय कीजिए :**

   कोयल, कलम, कागज, दरवाजा, खिड़की, तोता, मैना, कौआ, चाँदी, सोना, छाछ, शराब, पानी, मोती

3. **निम्नलिखित पुंलिंग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए :**

   श्रीमान, धोबी, बेटा, पाठक, सम्राट, मामा, पुत्र, साँप, भेड़ा, कवि, लाला, बंदर

4. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

   रोटी, चंद्रमा, चाँदी, बरगद, तुलसी, अंगूर, जलेबी, गुलाब, सलाह, आटा, बचपन, एकता, कुर्सी ।

5. **नीचे लिखी गई संज्ञाओं के पहले विशेषण अच्छा या अच्छी का उचित प्रयोग कीजिए :**

   अंग्रेजी, मिठाई, अनाज, दवा, मकान, कोशिश, रास्ता, जूता, टोपी, कपड़ा

6. **नीचे लिखे वाक्यों की रेखांकित संज्ञाओं के लिंग बताइए :**

   (i) खरगोश जोर से दौड़ता है ।

   (ii) मछली पानी में तैरती है ।

   (iii) पवन बह रहा है ।

   (iv) सुनीता चाय नहीं पीती ।

(v) उसने एक नया <u>मकान</u> बनवाया ।

(vi) यह कैसी <u>आफत</u> आ पड़ी है ।

(vii) उसने एक सुन्दर <u>तस्वीर</u> बनाई ।

(viii) गहरे पानी में पैठने से <u>मोती</u> मिलता है ।

(ix) अध्यक्ष ने यह <u>सूचना</u> दी है ।

(x) <u>ओड़िआ</u> मेरी मातृभाषा है ।

7. **सारणी से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य बनाइए :**

मुझे	हिन्दी	आती है ।
उसने	जलेबी	खरीदी ।
मोहन ने	आटा	खरीदा ।
उसमें	शक्ति	थी ।
रानू में	साहस	था ।
नरेन ने	दूध	पीया ।
धीरेन ने	कॉफी	पी ।
उसकी	लिखावट	सुंदर है ।
उसकी	पढ़ाई	चल रही है ।
इसका	गुरुत्व	बढ़ गया है ।

●

वचन

संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

हिन्दी में वचन दो प्रकार के हैं : एकवचन और बहुवचन

एकवचन : एकवचन से एक व्यक्ति या पदार्थ की सूचना मिलती है।

बहुवचन : बहुवचन से एक से अधिक व्यक्तियों या पदार्थों की सूचना मिलती है।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम :

पुंलिंग शब्द

(1) आकारांत पुंलिंग शब्द का अंतिम 'आ' बहुवचन में 'ए' हो जाता है; जैसे –

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
लड़का	लड़के	संतरा	संतरे
घोड़ा	घोड़े	कुत्ता	कुत्ते
केला	केले	पहिया	पहिये
कपड़ा	कपड़े	कमरा	कमरे

(2) 'आ' से भिन्न मात्रा (अ/इ/ई/उ/ऊ/ए/ओ) के पुंलिंग शब्द एकवचन और बहुवचन में समान रहते हैं, जैसे –

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
मकान	मकान	साधु	साधु
बालक	बालक	गुरु	गुरु
अतिथि	अतिथि	चाकू	चाकू
मुनि	मुनि	लड्डू	लड्डू
भाई	भाई	रेडियो	रेडियो
हाथी	हाथी	जौ	जौ

स्त्रीलिंग शब्द

(1) इ/ई/इया में अंत होने वाला स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'इयाँ' हो जाता है; जैसे –

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
जाति	जातियाँ	नदी	नदियाँ
रीति	रीतियाँ	बकरी	बकरियाँ
लड़की	लड़कियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ	चिड़िया	चिड़ियाँ

(विशेष : बहुवचन बनाते समय मूल शब्द की 'ई' 'इ' हो जाती है ।)

(2) इ/ई/इया से भिन्न मात्रा (अ/आ/उ/ऊ/औ) का शब्द बहुवचन में 'एँ' हो जाता है; जैसे –

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
गाय	गायें	वस्तु	वस्तुएँ
बहन	बहनें	ऋतु	ऋतुएँ
पुस्तक	पुस्तकें	बहू	बहुएँ
बालिका	बलिकाएँ	झाड़ू	झाड़ुएँ
लता	लताएँ	गौ	गौएँ

(विशेष – बहुवचन बनाते समय मूल शब्द का 'ऊ', 'उ' हो जाता है ।)

परसर्ग युक्त शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूप

(1) आकारांत पुंलिंग शब्द के बाद परसर्ग (ने, को, से, के, लिए, का, के, की, में, पर) आने पर अंतिम 'आ' एकवचन में 'ए' हो जाता है; जैसे –

लड़का + ने = लड़के ने　　　　बच्चा + को = बच्चे को

पंखा + से = पंखे से　　　　कमरा + में = कमरे में

(2) आकारांत पुंलिंग शब्दों को छोड़कर अन्य सभी पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्द एकवचन में यथावत् रहते हैं; जैसे –

घर में, अतिथि को, भालू का, रेडियो पर, बहन ने, रात को, आँख से, बालिका का, बहू को, गौ के लिए

(3) इ/ईकारांत पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'यों' युक्त हो जाते हैं; जैसे – अतिथियों को, हाथियों पर, भाइयों से, विधियों की, लड़कियों में, नदियों का ।

(4) इ/ईकारांत शब्दों को छोड़कर सभी मात्रा के पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'ओं' युक्त हो जाते हैं; जैसे – घरों में, बहनों को, लड़कों से, लताओं पर, मालाओं का, बालिकाओं की ।

संबोधन में शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूप

संबोधन करते समय आकारांत पुंलिंग शब्द एक वचन में एकारांत हो जाता है । अन्य सभी पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्द एकवचन में यथावत् रहते हैं ।

इ / ईकारांत पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'यो' युक्त हो जाते हैं ।

इ / ईकारांत से भिन्न मात्रा के पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन में 'ओ' युक्त हो जाते हैं ।

शब्द के पहले हे, रे, अरे, री, ओ, हे आदि जुड़ते हैं; जैसे –

- अरे लड़के ! ओ बेटे ! अरे बच्चे !
- हे प्रभु, रे बालक, ओ साथी, अरी बहन, हे बालिका, अरी बहू,
- हे मुनियो, हे साथियो, हे देवियो
- हे बालिकाओ, सज्जनो, मित्रो, हे बच्चो

कुछ विशेष बातें :

- आकारांत पुंलिंग तत्सम शब्द बहुवचन में एकारांत नहीं होते, जैसे –
  राजा, पिता, योद्धा, दाता, सखा, देवता, कर्ता, नेता, अभिनेता, महात्मा, जामाता, युवा, क्रेता, विक्रेता ।
- सम्मानास्पद रिश्तेवाचक आकारांत पुंलिंग शब्द बहुवचन में एकारांत नहीं होते; जैसे – बाबा, पापा, मामा, काका, चाचा, दादा, नाना, फूफा, जीजा ।

- कुछ आकारांत पुंलिंग हिन्दी बहुवचन में एकारांत नहीं होते; जैसे – अब्बा, खुदा, लाला, मुखिया ।
- कुछ शब्द नित्य बहुवचन में रहते है; जैसे - आँसू, ओंठ, दाम, दर्शन, प्राण, बाल, भाग्य, समाचार, हस्ताक्षर, होश ।
- कुछ शब्दो के साथ वृंद, जन, गण, दल, झुंड, वर्ग, लोग और समूह आदि शब्द जोड़कर बहुवचन रूप बनाएँ जाते हैं; जैसे – शिक्षक वृंद, छात्रगण, सेवादल, भक्तजन, जनसमूह, बच्चे लोग, अधिकारिवर्ग ।

अभ्यास

1. वचन किसे कहते हैं ? हिन्दी में कितने वचन हैं ?
2. निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में बदलिए :
   लड़का, बहू, संतरा, रात, कक्षा, माली, भिखारी, माला, मेला, जाति
3. एकवचन तथा बहुवचन में समान रूप रहने वाले पाँच शब्द लिखिए ।
4. नित्य बहुवचन में रहने वाले पाँचे शब्द लिखिए ।
5. **निम्नलिखित वाक्यों के वचन बदलिए :**
   (i) वह फल तोड़ता है ।
   (ii) मोहन केला खाएगा ।
   (iii) मैदान में गायें चरती हैं ।
   (iv) बच्चे को मिठाई दो ।
   (v) लड़की का भाई आ रहा है ।
6. **कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :**
   (i) तुम ———— के छिलके उतारो । (केला, केले)
   (ii) यहाँ पाँच ———— खड़े हैं । (लड़का, लड़के)
   (iii) सभी ———— को बुलाओ । (बहूयों, बहुओं)
   (iv) अभी समाचार प्रसारित ———— । (हुआ, हुए)
   (v) बच्चे को दो ———— दो । (गुड़िया, गुड़ियाँ)

●

कारक - विभक्ति (परसर्ग)

हम जानते हैं :

एक वाक्य में क्रिया-पद के साथ दूसरे पदों का सीधा संबंध होता है । इसके अलावा पदों का पारस्परिक संबंध भी होता है । यह संबंध 'कारक' कहलाता है । इस संबंध को जानने के लिए जिन कारक चिह्नों का प्रयोग होता है, उन्हें हिन्दी में विभक्ति या परसर्ग कहा जाता है ।

हम यह भी जानते हैं :

हिन्दी में निम्नलिखित कारक और उनके परसर्ग होते हैं :

कारक	परसर्ग
1. कर्ता (क्रिया को करने या कराने वाला)	ϕ (शून्य परसर्ग), ने, से
2. कर्म (जिस पर क्रिया का फल पड़ता है)	ϕ (शून्य परसर्ग), को
3. करण (क्रिया होने का साधन)	से, के द्वारा
4. संप्रदान (जिसके हित में क्रिया का संपादन किया जाए)	को, के लिए
5. अपादान (क्रिया का जिससे अलग होने का भाव हो)	से
6. संबंध (संज्ञाओं के बीच संपर्क)	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने नी
7. अधिकरण (क्रिया के होने का स्थान या समय)	में, पर
8. संबोधन (किसी को पुकारने के लिए प्रयुक्त होता है)	हे, अरे आदि

इनके अलावा कुछ परसर्गीय शब्दावलियों का प्रयोग होता है । जैसे – के कारण, से पहले, के सामने, की ओर, की खातिर, के लगभग आदि ।

परसर्गों के प्रयोग

'ने' परसर्ग : ध्यान दें कि 'ने' परसर्ग केवल कर्ता कारक में आता है । लेकिन कुछ खास अवसरों पर इसका प्रयोग होता है ।

कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग कहाँ-कहाँ नहीं होता

1. जब क्रिया वर्तमान काल और भविष्यत् काल में होती है तो 'ने' नहीं आता । जैसे –

   गोपाल खेलता है ।

   मीना गीत गाएगी ।

2. जब क्रिया अकर्मक होती है, तो भूत काल में भी 'ने' नहीं आता । जैसे –

   वह आदमी गया ।

   लता हँसी ।

3. संयुक्त क्रिया की सहायक क्रिया अकर्मक होने पर 'ने' का प्रयोग नहीं होगा । जैसे –

   वह खा चुका है ।

   रानी पढ़ नहीं सकी ।

4. क्रिया सकर्मक होने पर भी (i) अपूर्ण भूत, (ii) तात्कालिक भूत और (iii) हेतुहेतु भद् भूत (प्रथम रूप) काल के वाक्यों में 'ने' नहीं आएगा ।

   जैसे – (i) हिमांशु गीत गाता था ।

   सुजाता कहानी लिखती थी ।

   (ii) किसान हल चला रहा था ।

   बहू रोटी बना रही थी ।

   (iii) वह पुस्तक देता मैं ले लेता ।

   गीता पढ़ती तो रीता लिखती ।

‘ने’ का प्रयोग कब होता है

जब क्रिया ***सकर्मक*** हो और ***भूतकाल*** में हो तब कर्ता पद के साथ ‘ने’ परसर्ग निम्न स्थितियों में लगता है। जैसे –

(i) सामान्य भूत - गोपाल ने केला खाया। माधवी ने केला खाया।

रमेश ने रोटी खाई। सुमित्रा ने रोटी खाई।

(ii) आसन्न भूत - माला ने केला खाया है।

रमेश ने जलेबी खाई है।

(iii) पूर्ण भूत - बालकों ने पुस्तक पढ़ी थी।

सुनीता ने रसगुल्ला खाया था।

(iv) संदिग्ध भूत - सुरेश ने मेला देखा होगा।

लड़कियों ने खेल देखा होगा।

(v) सामान्य भूत - सरोज ने पत्र पढ़ा हो।

सरोज ने चिट्ठी लिखी हो।

(vi) हेतुहेतुभद् भूत - तुमने पढ़ा होता तो मैंने भी पढ़ा होता।

राम ने यह सुना होता तो (उसने) वैसा काम न किया होता।

यहाँ ध्यान दें : जब क्रिया अपूर्ण भूत, तात्कालिक भूत और हेतुहेतुभद् भूत (प्रथम रूप) में हो, तो कर्ता के साथ ***‘ने’ नहीं आता।***

अब निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से देखिए :

लड़के ने लड़कों ने लड़की ने लड़कियों ने	एक केला	खाया ।
लड़के ने लड़कों ने लड़की ने लड़कियों ने	चार केले	खाए ।
लड़के ने लड़कों ने लड़की ने लड़कियों ने	एक रोटी	खाई ।
लड़के ने लड़कों ने लड़की ने लड़कियों ने	चार रोटियाँ	खाईं ।

ध्यान दें : साधारण नियम यह है कि कर्ता के रूप के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है । लेकिन ऊपर के वाक्यों में कर्ता के बाद 'ने' आया है, इसलिए कर्ता का कोई प्रभाव क्रिया पर नहीं पड़ता । अर्थात् क्रिया कर्ता के लिंग, वचन का अनुसरण नहीं करती; बल्कि कर्म के लिंग, वचन का अनुसरण करती है । पुंलिंग और स्त्रीलिंग तथा एकवचन और बहुवचन के अनुसार कर्म के चार भेद होते हैं । जैसे केला-केले, मछली-मछलियाँ । अत: उन्हीं के अनुसार क्रियाएँ चार प्रकार की हुईं – खाया, खाए, खाई, खाईं ।

अब इन वाक्यों को देखिए –

लड़के ने लड़कों ने लड़की ने लड़कियों ने	खाया ।

ऊपर के वाक्यों में भी कर्ता के बाद 'ने' आया है । परंतु इन वाक्यों में 'कर्म' का प्रयोग नहीं हुआ है । इसलिए क्रिया अन्यपुरुष(तृतीय पुरुष) एकवचन पुंलिंग में आई है । कर्ता पुरुष हो या स्त्री, एकवचन में हो या बहुवचन में, कोई फर्क नहीं पड़ा है ।

निम्नलिखित वाक्यों को देखिए :

माँ ने	बच्चों को	बुलाया ।
बूढ़ी ने	लड़कियों को	देखा ।
तुमने	लड़के को	खिलाया ।
लड़के ने	लड़की को	हँसाया ।
मदन ने	लड़की को	पढ़ाया ।

ऊपर के वाक्यों में कर्ता के साथ 'ने' और कर्म के साथ 'को' आया है । इस स्थिति में क्रिया न तो कर्ता का अनुसरण करती है और न कर्म का । अत: क्रिया अन्य पुरुष एकवचन पुंलिंग में आई है ।

'को' का प्रयोग

को परसर्ग कर्ता, कर्म, संप्रदान और अधिकरण कारकों में आता है ।

कर्ता पद के बाद 'को'

- नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए :

मुझे जाना है । सुप्रभा को आना पड़ा ।
तुम्हें तैरना चाहिए । हमें दौड़ना पड़ सकता है ।
उसे पढ़ना पड़ा । आपको लिखना पड़ेगा ।
मुझे केला खाना है । तुम्हें केले खरीदने हैं ।
गोपाल को रोटियाँ खानी चाहिए ।

ऊपर के वाक्यों में कर्ता के साथ 'को' परसर्ग आया है । जिन वाक्यों में मुझे, तुम्हें, हमें, उसे का प्रयोग हुआ है, वहाँ भी अर्थ की दृष्टि से 'को' लगा है (मुझको, तुमको, हमको, उसको) । इन वाक्यों में मुख्य क्रियाएँ 'ना' प्रत्ययांत हैं । उससे कर्ता की बाध्यता, औचित्य और आवश्यकता का बोध होता है ।

● निम्न वाक्यों में कर्ता शारीरिक भाव (बुखार, प्यास) और मानसिक भाव (गुस्सा) के भोक्ता के रूप में तथा हिन्दी आना, याद होना आदि के ज्ञाता के रूप में आए हैं । इन कर्ताओं के साथ 'को' परसर्ग आया है ।

बच्चे को बुखार है ।

बच्ची को प्यास लगी ।

पिताजी को गुस्सा आया ।

मुझे हिन्दी आती है ।

तुम्हें यह याद है ?

कर्मकारक में 'को'

● वाक्य में कर्म के साथ 'को' का प्रयोग होता है ।

प्राणिवाचक कर्म के साथ को अवश्य आता है, जैसे –

माँ ने बच्चे को दूध पिलाया ।

शिक्षक ने छात्रों को पढ़ाया ।

किसान ने बैलों को खिलाया ।

राम गोपाल को देखता है ।

● अप्राणिवाचक कर्म में इस, उस आदि निर्देशकों द्वारा अधिक बल दिए जाने पर 'को' आता है, जैसे–

मुखिया ने इस तालाब को खुदवाया है ।

कर्मकारक में 'को' कहाँ नहीं आता

● अप्राणिवाचक कर्म के साथ 'को' नहीं आता, जैसे –

शिक्षक ने इतिहास पढ़ाया ।

लड़के ने किताब पढ़ी ।

मैंने एक कलम खरीदी ।

सम्प्रदान कारक में 'को'

- जिसे कुछ दिया जाता है, उसके साथ 'को' लगता है, जैसे –

    तुम गरीब को अन्न दो ।

    मैंने भिखारी को कम्बल दिया ।

- 'के लिए' के अर्थ में 'को' आता है, जैसे –

    हमारे पास खाने को क्या बचा है ?

    अब हम नहाने को कहाँ जाएँगे ?

    मेरे पास खाने को रोटी भी नहीं है ।

- नमस्कार, सलामी, आदर, धन्यवाद, शुभकामना, आशीर्वाद, बधाई, प्यार, श्रद्धांजलि आदि शब्दों के योग से 'को' आता है ।

    जैसे – गुरुजी को नमस्कार ।

    बच्चों को बहुत-बहुत प्यार ।

    जन्मदिवस पर आपको शुभकामनाएँ ।

    सहायता के लिए आपको अशेष धन्यवाद ।

अधिकरण कारक में 'को'

- कालवाचक शब्दों के साथ 'को' आता है, जैसे –

    तुम इतवार को हमारे घर पर आओ ।

    नवम्बर १४ तारीख को बालदिवस मनाया जाता है ।

    मैं दोपहर को अवश्य पहुँच जाऊँगा ।

- दिशासूचक शब्दों के साथ 'को' आता है, जैसे –

    थोड़ा आगे जाकर फिर बाएँ को मुड़ जाना ।

    जरा ऊपर को देखो, मैं यहाँ बैठा हूँ ।

    देखो, सूरज पश्चिम को जा रहा है ।

'के लिए' का प्रयोग

सम्प्रदान कारक में 'के लिए'

- प्रयोजन या उद्देश्य के अर्थ में, जैसे –

  पिताजी ने बहू के लिए एक अँगूठी खरीदी ।

  मैं अपने लिए जूते खरीदूँगा ।

  मोहन पढ़ने (के लिए) शहर जाता है ।

'से' का प्रयोग

'से' परसर्ग प्राय: करण और अपादान कारकों में होता है । लैकिन कर्ता, कर्म और अधिकरण में भी इसका प्रयोग होता है ।

कर्ताकारक में 'से'

भाववाच्य और कर्मवाच्य के **कर्ता के साथ** 'से' का प्रयोग होता है, जैसे –

(i) भाववाच्य - मुझसे चला नहीं जाता ।

रोगी से उठा भी नहीं जाता ।

कड़ी धूप में बच्चे से दौड़ा नहीं जाता ।

तुमसे क्या हँसा नहीं जाता ?

(ii) कर्मवाच्य - मिठाई हलवाई से बनाई गई है ।

मुझसे चाभी खो गयी है ।

बुढ़िया से चने नहीं चबाए जा सकते ।

बच्ची से इतना दूध नहीं पिया जाएगा ।

(iii) प्रेरणार्थक वाक्यों में प्रेरित कर्ता के साथ 'से' का प्रयोग होता है, जैसे –

प्रथम प्रेरणार्थक वाक्यों में

वह अपना काम नौकरों से कराता है ।

सुरमा अपनी चिट्ठी लीना से लिखाती है ।

द्वितीय प्रेरणार्थक वाक्यों में

यह पत्र मोहन से भिजवाया जाएगा ।

माँ आया से बच्ची को दूध पिलवाती है ।

मालिक ने मजदूरों से काम करवाया ।

कर्मकारक में 'से'

कहना, बोलना, पूछना, मिलना, बात करना, प्रार्थना करना, अनुरोध करना आदि क्रियाओं के प्राणिवाचक कर्म के साथ 'से' का प्रयोग होता है, जैसे –

तुम इस मामले में निदेशक से मिलो ।
मुझसे क्या कहना चाहते हो ?
छात्र ने शिक्षक से दो प्रश्न पूछे ।
आपसे मेरी यही प्रार्थना है ।

करणकारक में 'से'

(i) साधनवाचक शब्द के साथ, जैसे –

मैं चाकू से आम काटता हूँ ।
हरीश ने तूलिका से तस्वीर बनाई ।
डाकिया साइकिल से आया ।

(ii) रीतिवाचक क्रियाविशेषण के साथ, जैसे –

तुमने भाषण ध्यान से सुना ?
उमानाथ कठिनाई से पास हो गया ।
मैंने धैर्य से समस्या का मुकाबला किया ।
चूहा तेजी से भागा ।

(iii) कारणवाचक शब्द के साथ, जैसे –

सोनू बुखार से पीड़ित है ।
पौधा धूप से सूख गया ।
मरीज पीड़ा से तड़प रहा है ।

अपादान कारक में 'से'

(i) अलगाव के अर्थ में – पेड़ से पत्ते गिरे ।
बन्दूक से गोली चली ।
हिमालय से गंगा निकली है ।
आग से दूर रहिए ।

(ii) डर के अर्थ में – बच्चा साँप से डरता है ।

(iii) तुलना के अर्थ में – विनोद माधव से लम्बा है ।

(iv) दूरी के अर्थ में – कटक से भुवनेश्वर तीस किलोमीटर दूर है ।

(v) कालावधि के अर्थ में – वह कल से बीमार है ।

(vi) उत्पत्ति के अर्थ में – दूध से दही बनता है ।

(vii) रक्षा करने के अर्थ में – पुलिस नागरिकों को बदमाशों से बचाती है ।

'का' का प्रयोग

(का/के/की, रा/रे/री/, ना/ने/नी)

सम्बंधकारक में 'का' परसर्ग का प्रयोग होता है । यह विकारी-परसर्ग है । अर्थात् लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार इसमें परिवर्तन होता है ।

जैसे – **का** (पुंलिंग एकवचन), **के** (पुंलिंग बहुवचन), **की** (स्त्रीलिंग एकवचन/बहुवचन)

यहाँ विशेष रूप से ध्यान देना जरूरी है कि 'का' 'की' 'के' का प्रयोग उसके बाद आने वाले संज्ञा-शब्द के लिंग और वचन के अनुसार होता है ।

(i) लिंग - वचन के अनुसार अन्यपुरुष और संज्ञा में – का, की, के

जैसे -	उसका **भाई**	उसकी **बहन**	उसके **बच्चे**
	गोपाल का **घर**	गोपाल की **गाय**	गोपाल के **गाँववाले**
	उनका **घोड़ा**	उनकी **बकरी**	उनके **कपड़े**
	बच्चों का **खेल**	बच्चों की **नानी**	बच्चों के **खिलौने**

(ii) लिंग - वचन के अनुसार उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष में – रा, री, रे

जैसे -	मेरा **मस्तक**	मेरी **कमर**	मेरे **हाथ**
	हमारा **मकान**	हमारी **गोशाला**	हमारे **खेत**
	तेरा **हार**	तेरी **कलम**	तेरे **गहने**
	तुम्हारा **लड़का**	तुम्हारी **बेटी**	तुम्हारे **छात्र**

(iii) लिंग - वचन के अनुसार निजवाचक सर्वनाम में – ना, नी, ने

जैसे -	अपना **घर**	अपनी **लाठी**	अपने **वैल**

‘के’ का परिवर्त्तित रूप

एकवचन पुंलिंग शब्द के बाद परसर्ग आने से **‘का’** का **‘के’** हो जाता हैं ।

जैसे -	उसका घर	-	उसके घर में
	उनका बच्चा	-	उनके बच्चे के लिए
	अनू का बेटा	-	अनु के बेटे को
	अपना हाथ	-	अपने हाथ से
	अपना घर	-	अपने घर पर
	तेरा नाम	-	तेरे नाम में

‘के’ - एकवचन में आनेवाले सम्मानजनक व्यक्तियों के लिए –

जैसे -	उसके पिताजी	अपने भाई साहब
	आपके गुरुजी	हमारे देवता
	मेरे मामा	हरि के चाचाजी

‘में’ का प्रयोग

अधिकरण कारक में निम्नलिखित अर्थों में ‘में’ का प्रयोग होता हैं –

(1) स्थान और भीतर का बोध करने के लिए, जैसे –

कमरे में मेज है ।
मेरे मामा गाँव में रहते हैं ।
वह नवीं कक्षा में पढ़ता है ।
कटक में बालियात्रा का मेला लगता है ।

(2) समय की अवधि बताने के लिए, जैसे –

पिताजी दो दिन में गाँव आ जाएँगे ।
मई के महीने में कड़ी धूप होती है ।
एक साल में छह ऋतुएँ होती हैं ।
१९४७ ई. में भारत स्वतंत्र हुआ ।

(3) तुलनात्मक विशेषता बताने के लिए, जैसे –

आदमी - आदमी में अंतर होता है ।
दिनेश और विनोद में बहुत अन्तर है ।

फूलों में गुलाब सुन्दर होता है ।

उन फूलों की तुलना में इन फूलों में अधिक सुगन्धि है ।

(4) मूल्य बतलाने के लिए, जैसे –

तुमने कलम कितने में खरीदी ?

मैंने यह रजिस्टर पचास रुपये में खरीदा ।

अब आलू प्रति किलो दस रुपये में मिलता है ।

'पर' का प्रयोग

अधिकरण कारक में निम्नलिखित अर्थों में 'पर' का प्रयोग होता है –

(1) ऊपर की स्थिति बतलाने के लिए –

पेड़ पर बंदर बैठा है ।

मेज पर किताब है ।

(2) दूरी बतलाने के लिए –

कुछ दूरी पर एक तालाब है ।

नदी थोड़ी दूरी पर है ।

(3) ठीक समय की सूचना देने के लिए –

दो बजकर तीस मिनट पर गाड़ी आएगी ।

सही समय पर काम शुरू करो ।

(4) क्रियार्थक संज्ञा के बाद 'के बाद' के अर्थ में –

समय होने पर नाटक शुरू होगा ।

आपके वहाँ जाने पर सब खुश हुए ।

मेरे कहने पर वह मान गया ।

(5) किसी के प्रति या किसी के विषय में प्रतिक्रिया प्रकट करते समय –

मुझ पर भरोसा रखो ।

इस मुद्दे पर आज चर्चा होगी ।

जीवों पर दया करो ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित तालिका से सही वाक्य बनाइए :

मोहन		पत्र	लिखा ।
माधवी		एक फल	खाया ।
बूढ़े		एक गड्ढा	खोदा ।
हम	ने	दो पत्र	लिखे ।
उमेश		दो फल	खाए ।
तुम		दो गड्ढे	खोदे ।
दुकानदार		किताब	बेची ।
लड़के		कलम	खरीदी ।
आप		चिट्ठी	भेजी ।
सुरेश		किताबों	बेचीं ।
महेश		कलमें	खरीदीं ।
शशि		चिट्ठियाँ	भेजीं ।

2. निम्नलिखित तालिका से सही वाक्य बनाइए :

लड़का	गया ।
लड़की	गई ।
बच्चे	दौड़े ।
चोर	भागा ।

3. निम्नलिखित तालिका से सही वाक्य बनाइए :

प्रमोद		खाया ।
विनोद		पढ़ा ।
संगीता	ने	लिखा ।
तुम		देखा ।

4. **निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए :**

उदाहरण – वह चित्र बनाता है ।

उसने चित्र बनाया ।

(i) लीला पाठ पढ़ती है ।

(ii) गोपाल नाटक देखता है ।

(iii) लड़के क्रिकेट खेलते हैं ।

(iv) शिशु दूध पीता है ।

(v) वह दरवाजा धकेलता है ।

5. **नीचे दी गई तालिका से सही वाक्य बनाइए :**

(क)

कर्ता	परसर्ग	कर्मपूरक	क्रिया
आप		बुखार	आई है ।
वसंत	को	गुस्सा	आया ।
वर्षा		भूख	लगी ।

(ख)

कर्ता	कर्म	परसर्ग	क्रिया
शीला	बहन		बुला रही है ।
माँ ने	मोहन	को	बुलाया ।
उसने	बेटी		उठा लिया ।
माँ	बच्ची		सुलाती है ।

(ग)

कर्ता	संप्रदान	परसर्ग	कर्म	क्रिया
राजा	गरीबों		वस्त्र	देंगे ।
सेठ ने	भिखारी	को	पैसे	दिए ।
उसने	गुरुजी		प्रणाम	किया ।
अतिथि ने	बच्चों		आशीर्वाद	दिया ।

6. नीचे कुछ कारक दिए गए हैं । उनके रेखांकित शब्दों के कारक बताइए :

(i) मुझे सर्दी लग गई ।

(ii) प्रधान अध्यापक ने छात्रों को उपदेश दिया ।

(iii) शहीदों को सलामी दी गई ।

(iv) मैं रात को दूध पीकर सोता हूँ ।

(v) मुझे कटक जाना पड़ा ।

7. नीचे दी गई तालिका से सही वाक्य बनाइए –

(क)

मुझ		बासी भात	खाया नहीं जाता ।
गोपाल	से	खट्टी चीज	खाई नहीं जाती ।
रोगी		इतनी दूर	चला नहीं जाता
मुझ		देर रात तक	बैठा नहीं जाता

(ख)

मैं		मजदूरों		एक पेड़	कटवाया ।
तुम		नौकर		दो पेड़	कटवाए ।
इंजीनियर	ने	लोगों	से	बाँध	बनवाया ।
हम		दर्जी		कमीजें	सिलवाईं ।
माँ		आया		काम	करवाया

(ग)

राजा		पण्डित		एक प्रश्न	पूछा ।
तुम	ने	मुझ	से	कुछ	कहोगे ?
हम		आप		एक	अनुरोध किया ।
छात्र		प्रधान अध्यापक		यही	प्रार्थना की ।

(घ)

शशि	साइकिल		आई
राजू	कल	से	लिखता है ।
तुम	बुखार		पीड़ित हो ।
वह	तेजी		भागा ।

(ङ)

पेड़ बाँध आग साँप फल	से	पत्ता नहर दूर तुम परीक्षा	गिरा निकली है । रहो । डरते हो । शुरू होगी ।

8. नीचे दी गई तालिका से सही वाक्य बनाइए :

(क)

यह	आप गोपाल विमल मीरा	का	भवन कमरा भाई पंखा	है ।

(ख)

ये	चमेली मकान आप उस	के	मोजे दरवाजे पंखे पपीते	हैं ।

(ग)

वह	आप दिनेश महेश विनीता	की	कार कुर्सी कॉपी कलम	है

(घ)

वे	उस उन रवि रानी	की	किताबें कुर्सियाँ कॉपियाँ मालाएँ	हैं ।

9. नीचे दी गई तालिका से सही वाक्य बनाइए :

(क)

किताब पानी कलम वर्तन	आलमारी गिलास जेब बक्से	में	है ।

(ख)

कुसुम मनोज बंदर किताब	छत घर पेड़ मेज	पर	है ।

10. सही परसर्ग लगाकर खाली स्थान भरिए :

(i) मेज कमरे ———— है ।

(ii) जीवों ———— दया करो ।

(iii) उस ———— भाई आ रहा है ।

(iv) लीला उस ———— बहन है ।

(v) मैंने आप ———— दूर से देखा ।

(vi) मैं ———— रोटी खा ली है ।

(vii) माँ ———— शिशु को दूध पिलाया ।

(viii) पेड़ ———— फल गिरा ।

(ix) साँप नेवले ———— डरता है ।

(x) रोगी हैजे ———— मर गया ।

●

सर्वनाम

संज्ञा के बदले आनेवाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं । सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं । वे है–

- पुरुषवाचक
  - उत्तम (मैं, हम)
  - मध्यम (तू, तुम, आप)
  - अन्य (वह,यह,वे,ये)
- निजवाचक (आप)
- निश्चयवाचक (वह, यह, वे, ये)
- अनिश्चयवाचक (कोई, कुछ)
- प्रश्नवाचक (कौन, क्या)
- संबंधवाचक (जो, वह)

आइए, इनके प्रयोग देखें :

(१) मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ । (उत्तम पुरुष, एकवचन)

हम सब भारतीय हैं । (उत्तम पुरुष, बहुवचन)

तू सच बोलती है । (मध्यमपुरुष, एकवचन)

तुम कहाँ रहते हो ? (मध्यमपुरुष, एकवचन)

तुम लोग यहीं बैठो । (मध्यमपुरुष, बहुवचन)

आप कृपया पधारिए । (मध्यमपुरुष, एकवचन)

आप लोग बहुत दयालु हैं । (मध्यमपुरुष, बहुवचन)

वह / यह आ रहा है । (अन्यपुरुष, एकवचन)

वे / ये पढ़ रहे हैं । (अन्यपुरुष, बहुवचन)

(२) मैं यह काम आप / खुद / स्वयं कर लूँगा । (निजवाचक)

तू पूरा काम अपने आप कर पाएगा । (निजवाचक)

यह मुझसे नहीं, अपने आप से पूछो । (निजवाचक)

वे आप ही आप चले गये । (निजवाचक)

यह हमारा आपस का मामला है । (निजवाचक)

(३) यह एक कलम है । (निश्चयवाचक, निकटवर्ती)

ये / वे मेरी पुस्तकें हैं । (निश्चयवाचक, दूरवर्ती)

(४) कोई / कोई-न-कोई दौड़ रहा है । (अनिश्चयवाचक, एकवचन, व्यक्ति)

सब कोई / कोई-कोई ऐसा कहते हैं । (अनिश्चयवाचक, बहुवचन, व्यक्ति)

तुमने कुछ / कुछ-न-कुछ तो खा लिया ? (अनिश्चयवाचक, एकवचन, वस्तु)

(५) कौन वहाँ सो रहा है ? (प्रश्नवाचक, एकवचन, व्यक्ति)

कौन-कौन खा चुके हैं ? (प्रश्नवाचक, बहुवचन, व्यक्ति)

उन मिठाइयों में से तुम्हें कौन-कौन-सी पसंद हैं ? (प्रश्नवाचक, बहुवचन, वस्तु)

तुम क्या चाहते हो ? (प्रश्नवाचक, एकवचन में प्रयोग)

(६) जो कमाएगा, वह खाएगा । (संबंधवाचक, एकवचन)

जो करेगा सो भरेगा । (संबंधवाचक, एकवचन)

जो-जो यहाँ आए, वे सब खाना खाकर गए । (संबंधवाचक, बहुवचन)

सर्वनामें की रूपावली

वर्ग - १

कारक	उत्तमपुरुष एकवचन	उत्तमपुरुष बहुवचन
कर्ता	मैं / मैंने	हम / हमने
कर्म	मुझे / मुझको	हमें / हमको
करण	मुझसे	हमसे
संप्रदान	मुझे / मुझको / मेरे लिए	हमें / हमको / हमारे लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
संबंध	मेरा / मेरे / मेरी	हमारा / हमारे / हमारी
अधिकरण	मुझमें / मुझ पर	हम में / हम पर

तू (मध्यमपुरुष, एकवचन) का रूप 'मैं' की तरह होगा ।

तुम (मध्यमपुरुष, बहुवचन) का रूप 'हम' की तरह होगा ।

वर्ग - २

कारक	अन्यपुरुष एकवचन	अन्यपुरुष बहुवचन
कर्ता	वह / उसने	वे / उन्होंने
कर्म	उसे / उसको	उन्हें / उनको
करण	उससे	उनसे
संप्रदान	उसे / उसको / उसके लिए	उन्हें / उनको / उनके लिए
उपादान	उससे	उनसे
संबंध	उसका / उसके / उसकी	उनका / उनके / उनकी
अधिकरण	उसमें / उस पर	उनमें / उन पर

(यह, ये, कौन, क्या, जो, सो के रूप इस प्रकार होंगे ।

वर्ग - ३

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

वचन	मूल रूप	तिर्यक रूप
एकवचन	कोई	किसी ने / को / से / के लिए / का / के / की / में / पर
बहुवचन	कोई	किन्हीं ने / को / से / के लिए / का / के/ की /में / पर

वर्ग - ४

'कुछ' और 'आप' के मूल रूप और तिर्यक रूप समान-समान रहते हैं ।

अभ्यास

1. सर्वनाम किसे कहते है ? उसके भेदों के नाम लिखिए ।
2. पुरुषवाचक सर्वनाम कौन-कौन से हैं, लिखिए ।
3. 'वह' का सभी कारकों में रूप लिखिए ।
4. 'कोई' का बहुवचन में सभी कारकों के रूप लिखिए ।
5. **निम्नलिखित सर्वनामों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

   तू, तुझे, उन्हें, आपका, जिसकी, मेरी, कोई, कुछ, हमसे, किसको, किनका, वे, कौन-कौन, जो, खुद, क्या, जिन्हें, जिस पर, आप, अपने आप, तुम्हारे, यह ।
6. **निम्नलिखित वाक्यों से सर्वनामें को छाँटकर लिखिए कि वे किस-किस प्रकार के सर्वनाम हैं :**

   (i) तुम वहाँ आप ही चले जाओ ।

   (ii) हम क्या चाहते हैं, यह तो आप खुद ही जानते हैं ।

   (iii) जिनको लड्डू मिल गए, वे चले जाएँ ।

   (iv) वह किसीसे कोई बात नहीं करता है ।

(v) क्या किसने उस पर गुस्सा किया है ?

(vi) वह मेरा भाई है, तुम कौन हो ?

(vii) किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

7. निम्नलिखित सर्वनामें को परसगों से जोड़िए :

मैं + को, वह + ने, जो + पर, जो (बहुवचन) + ने, तू + को, कोई + की, कोई (बहुवचन) + ने, वे + से, ये + ने, आप + की ।

8. वाक्यों के खाली स्थानों को कोष्ठकों के सर्वनामों के उचित रूप से भरिए :

(i) —— जाने दो । (वह)

(ii) —— नाम क्या है ? (तू)

(iii) —— नाम लीला है । (मैं)

(iv) तुम —— तो खा लो । (कुछ)

(v) तुम —— बुला रहे थे ? (कौन)

(vi) —— किताब पढ़ ली ? (वे)

(vii) —— पर मेरा विश्वास है । (वह)

(viii) —— यह बात मालूम थी । (इस)

(ix) —— पर मेरा संदेह नहीं है । (केई)

(x) —— चाय में ज्यादा चीनी है ? (क्या)

9. 'क' स्तंभ के मूल रूपों के साथ 'ख' स्तंभ के परसर्ग सहित रूपों को जोडिए :

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
हम	तुम्हारा
तुम	किन्हींने
आप	इन्हें
कौन	आप पर
यह	हमें
कोई	किन्होंने

विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं । इसके चार भेद होते हैं –

(1) गुणवाचक (2) संख्यावाचक (3) परिमाणवाचक (4) सार्वनामिक

(1) **गुणवाचक विशेषण** : ये संज्ञा के गुण आदि का बोध कराते हैं–

गुण – अच्छा, अशांत, उचित, कुरूप, खट्टा, चतुर, झूठा, दुष्ट, दयालु, नेक, बुरा, भला, मधुर, मजबूत, मीठा, मूर्ख, सच्चा, सीधा, सुन्दर ।

रंग – काला, गुलाबी, चमकीला, नारंगी, बैंगनी, पीला, हरा ।

आकार – गोल, चौड़ा, छोटा, टेढ़ा, तिकोना, नाटा, नुकीला, पोला, बड़ा, मोटा, लम्बा, सुडौल, सीधा, सँकरा ।

दशा – गरीब, गाढ़ा, गीला, घना, दुबला, दु:खी, धनवान, पतला, पिघला, बीमार, बूढ़ा, मजबूत, रोगी, लंगड़ा, सुखी, सूखा ।

काल – अगला, अर्वाचीन, आधुनिक, आगामी, ताजा, नया, पिछला, पुराना, बासी, भूत, भावी, वर्तमान, विगत ।

दिशा – उत्तरी, ऊपरी, दक्षिणी, पश्चिमी, पूर्वी, पुरवाई, सामनेवाला ।

स्थान – अमेरिकी, कश्मीरी, ग्रामीण, जापानी, दूरवर्ती, देशी, पड़ोसी, पहाड़ी, बाहरी, भारतीय, भीतरी, विदेशी, शहरी ।

(2) **संख्यावाचक विशेषण** : ये गणतीय संज्ञा की संख्या बताते हैं । संख्या निश्चित या अनिश्चित हो सकती है । ये दो प्रकार के होते हैं – (क) निश्चित संख्यावाचक (ख) अनिश्चित संख्यावाचक ।

(क) **निश्चित संख्यावाचक** : **जैसे** – पाँच छात्र, सौ आदमी, आधा पानी, दो दो लड्डू, दो तिहाई फसल, सवा सेर गेहूँ, चौगुने लोग, साढ़े तीन सौ रुपये, दो सही एक बटा चार गुना दाम, इक्कीसवीं सदी, पहला सोपान, तीसरी दुनिया, नवीं कक्षा, पाँचों औरतें, हरेक आदमी, प्रत्येक लड़का ।

(ख) **अनिश्चित संख्यावाचक** : **जैसे** – काफी लोग, बहुत मसाला, सब मकान, सैकड़ों लोग, कम चीनी, थोड़ा चावल, तीन-चार आदमी, पर्याप्त दूध, काफी सामान, कई पुस्तकें ।

(3) **परिमाणवाचक विशेषण** : ये अगणनीय संज्ञा का परिमाण बताते हैं । परिमाण निश्चित या अनिश्चित हो सकती है । इस दृष्टि से ये दो प्रकार के होते हैं–

(क) **निश्चित परिमाणवाचक** : जैसे– एक लिटर तेल, पाँच किलो चीनी, ढाई मीटर कपड़ा, लोटा भर पानी, दो फुट छड़ी ।

(ख) **अनिश्चित परिमाणवाचक** : जैसे– थोड़ा दूध, अधूरा काम, ज्यादा घी, तनिक-सी चाय, थोड़ी-सी तकलीफ, सारा अनाज ।

(4) **सार्वनामिक विशेषण** : इसमें सर्वनाम संज्ञा के पहले आकर उसकी विशेषता बताता है । जैसे – अपना काम, यह औरत, वह लड़का, कोई किताब, इस बच्ची की, इन लड़कों की, कौन-सी किताब, ऐसा लड़का, वैसा आदमी, ऐसी / वैसी पुस्तक, जैसा नाम, मेरा फोटो ।

अभ्यास

1. विशेषण किसे कहते हैं ? सोदाहरण उनके भेद बताइए ।
2. पाँच गुणवाचक विशेषणों का उल्लेख करके उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।
3. **निम्नलिखित विशेषणों में से गुणवाचक और सार्वनामिक विशेषणों को अलग-अलग छाँटिए :**

   सीधा, कितना, गोल, ऐसा, ग्रामीण, बुरा, जैसा, गरीब, कौन, प्राचीन, मैला, अपनी, पहाड़ी, बैंगनी, सुन्दर, अपने, मूर्ख, जितना, तरल ।

4. **निम्नलिखित विशेषणों में से संख्यावाचक विशेषणों और परिमाणवाचक विशेषणों को अलग-अलग कीजिए :**

सात, बीसवाँ, दो मीटर, दुगुना, तीनों, चार किलो, जरा-सा, तनिक-सा, सैकड़ों, थोड़ा-सा, पाँच मीटर, कोई दो सौ, दो लिटर, अधूरा ।

5. **निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषणों को छाँटिए :**

(क) नाटा लड़का बहुत साहसी है ।

(ख) यह घोड़ा काला है, पर वह घोड़ा लाल है ।

(ग) यहाँ एक कप कॉफी पाँच रुपये में मिलती है ।

(घ) उड़ते हुए पक्षी बहुत सुन्दर लगते हैं ।

(ङ) थोड़ी-सी चाय पी लो, पर अधूरा काम पूरा कर लो ।

6. **'क' स्तंभ के विशेषणों के साथ 'ख' स्तंभ के विशेष्यों (संज्ञाओं) को मिलाकर लिखिए :**

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
कीमती	आदमी
तीखी	कमीज
दुगुनी	फूल
पुराने	किताब
गरीब	जूते
उजली	आवाज
सुन्दर	कीमत

●

क्रिया

जिस पद से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे – पढ़ना, जाना, लिखना, दौड़ना आदि।

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे – पढ़, जा, लिख, दौड़

क्रिया के भेद :–

क्रिया के भेदों में से कुछ प्रमुख भेदों पर यहाँ चर्चा की जा रही हैं।

1. रचना के आधार पर क्रिया

रचना के आधार पर क्रिया दो प्रकार की हैं।

(i) **मूल क्रिया** : जैसे – पढ़ना, देखना, दौड़ना आदि

(ii) **यौगिक क्रिया** : जैसे – पढ़ सकना, देख लेना, दौड़ सकना आदि।

संयुक्त क्रिया और प्रेरणार्थक क्रिया इसके प्रमुख भेद हैं।

2. कर्म के आधार पर क्रिया

कर्म के आधार पर क्रिया के तीन भेद होते हैं।

(i) सकर्मक (ii) द्विकर्मक (iii) अकर्मक

सकर्मक क्रिया – जिस वाक्य में कर्म का आना या उसकी संभावना बनी रहना सुनिश्चित है, उस वाक्य की क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – सुरेश पत्र लिखता है।

इस वाक्य में लिखने वाल 'सुरेश' कर्ता है। लिखा जाने वाला 'पत्र' कर्म है। अत: 'लिखना' क्रिया सकर्मक है। इसी प्रकार पढ़ना, देखना, खाना, पीना, काटना, खोदना, गाना आदि सकर्मक क्रियाएँ हैं।

द्विकर्मक क्रिया – जिस वाक्य में दो कर्म आते हैं, उस वाक्य की क्रिया को द्विकर्मक क्रिया कहते हैं ।

जैसे – शिक्षक ने छात्र को इतिहास पढ़ाया । यहाँ दो प्रश्न पूछने पर दो उत्तर मिलते हैं ।

शिक्षक ने किसको पढ़ाया ? – छात्र को ।

शिक्षक ने छात्रको क्या पढ़ाया ? – इतिहास

अर्थात् छात्र को और इतिहास दो कर्म हैं ।

दो कर्म लेने वाली क्रिया को द्विकर्मक क्रिया कहते हैं । इसी प्रकार कहना, पूछना, देना, खिलाना आदि द्विकर्मक क्रियाएँ हैं ।

अकर्मक क्रिया – अकर्मक क्रिया अपने साथ कर्म नहीं ले सकती । जैसे – बच्चे दौड़ते हैं । इस वाक्य में बच्चे क्या दौड़ते हैं या बच्चे किसको दौड़ते हैं – प्रश्न पूछने पर कोई उत्तर नहीं मिलता ।

इसी प्रकार आना, जाना, भागना, तैरना, कूदना, रोना, हँसना, उठना, बैठना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं ।

3. क्रिया की पूर्णता-अपूर्णता के आधार पर क्रिया

क्रिया की पूर्णता या अपूर्णता के आधार पर क्रियाएँ दो प्रकार की हैं –

(i) समापिका क्रिया

(ii) असमापिका क्रिया ।

समापिका क्रिया वाक्य के अंत में आती है और वाक्य की समाप्ति की सूचना देती है ।

जैसे – वे शिक्षक हैं । पिताजी दफ्तर गए हैं ।

असमापिका क्रिया से वाक्य की समाप्ति का बोध नहीं होता ।

जैसे – मैंने घर लौटकर खाना खाया ।

बच्ची मुझे देखते ही रो पड़ी ।

भाषा बहता नीर है ।

सुनी हुई बात पर विश्वास न करो।

संयुक्त क्रिया

दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनने वाली क्रिया को संयुक्त क्रिया कहते हैं । इससे अर्थ में अधिक स्पष्टता आ जाती है । इसकी प्रथम क्रिया को मुख्य क्रिया और बाद में आने वाली क्रिया को सहायक क्रिया कहते हैं । नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं –

वर्षा थम चुकी है । वह पढ़ नहीं सका । शिशु रोने लगा । हम रोज स्कूल जाया करते हैं । तुम्हें सच बोलना चाहिए । हमें मोमबत्ती जलाकर पढ़ना पड़ा । उसे जाने दो । अचानक चिड़िया बोल उठी । तुम क्या करना चाहते हो ? लड़के खेलते रहे । गिलास गिर पड़ा । तुम क्या कर बैठे ?

वाच्य

वाक्य में क्रिया की तीन स्थितियाँ होती हैं । क्रिया कभी कर्ता का अनुसरण करती है तो कभी कर्म का, कभी कर्ता या कर्म का अनुसरण न करके स्वतंत्र रहती है । इन स्थितियों को वाच्य कहते हैं । यानी वाच्य क्रिया के उस रूप-परिवर्तन को कहते हैं, जिससे

पता चले कि वाक्य में कर्ता, कर्म या क्रिया (भाव) – इन तीनों में से किसकी प्रधानता है ।

अत: वाच्य तीन प्रकार के होते हैं ।

(i) कर्तृवाच्य, (ii) कर्मवाच्य, (iii) भाववाच्य ।

कर्तृवाच्य – कर्तृवाच्य में कर्ता ही वाक्य का उद्देश्य या केन्द्र है । वाक्य में उसकी प्रधानता रहती है ।

जैसे – कमला लिखती है । घोड़ा दौड़ता है । गाड़ी आती है । पंखा चलता है ।

कर्मवाच्य – कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता रहती है । कर्म वाच्य केवल सकर्मक क्रिया का होता है ।

जैसे – पुस्तक पढ़ी जाती है ।

कपड़ा सिला जाता है ।

चोर पकड़ा गया ।

मुझसे बासी रोटी नहीं खाई जाएगी ।

कर्म वाच्य में सामान्यत: कर्ता अनुपस्थित रहता है । अगर कर्ता आए तो उसके साथ 'से' या 'द्वारा' का प्रयोग होता है । कर्म सामान्यत: परसर्ग रहित होता है । मुख्य क्रिया के साथ 'जाना' सहायक क्रिया अनिवार्य रूप से आती है ।

भाववाच्य – भाववाच्य में क्रिया का भाव प्रधान होता है । भाववाच्य के वाक्य में क्रिया अकर्मक होती है । सहायक क्रिया 'जाना' आती है । क्रिया पुंलिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में रहती है ।

जैसे – मुझसे चला नहीं जाता । रोगी से उठा नहीं जाता ।

उससे दौड़ा नहीं जाएगा । इस धूप में अब नहीं चला जाता ।

प्रयोग

प्रयोग का अर्थ है – 'अन्विति' । वाक्य में क्रिया का रूप कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार होता है । कर्ता के अनुसार क्रिया का रूप बनने से उसे 'कर्तरि प्रयोग' कहते हैं । कर्म के अनुसार क्रिया का रूप बनने से उसे 'कर्मणि प्रयोग' कहते हैं । क्रिया कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर स्वतंत्र (अन्यपुरुष, एकवचन, पुलिंग) होने से उसे 'भावे प्रयोग' कहते हैं ।

जैसे – गोपाल पढ़ता है । (कर्तृवाच्य - कर्तरि प्रयोग)

गोपाल ने पाठ पढ़ा । (कर्तृवाच्य - कर्मणि प्रयोग)

गोपाल ने कहानी पढ़ी । (कर्तृवाच्य - कर्मणि प्रयोग)

गोपाल ने पढ़ा । (कर्तृवाच्य - भावे प्रयोग)

गोपाल ने गोविन्द को पढ़ाया । (कर्तृवाच्य - भावे प्रयोग)

कहानी पढ़ी गयी । (कर्मवाच्य - कर्मणि प्रयोग)

एकांकी पढ़ा गया । (कर्मवाच्य - कर्मणि प्रयोग)

सड़े आमों को फेंका गया । (कर्मवाच्य - भावे प्रयोग)

मुझसे तैरा नहीं जाता । (भाववाच्य - भावे प्रयोग)

प्रेरणार्थक क्रिया

जिस क्रिया से यह स्पष्ट होता है कि कर्ता दूसरे की प्रेरणा से कार्य करता है उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं । इसके दो रूप होते हैं – प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया ।

- **प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया** : इसमें कर्ता प्रत्यक्ष रूप से भाग लेता है ।

• **द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया** : इसमें कर्ता प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेता । उसकी प्रेरणा से कोई दूसरा काम करता है ।

प्रेरणा देनेवाले को प्रेरक कर्ता कहते हैं । प्रेरणा से काम करनेवाले को प्रेरितकर्ता कहते हैं । जैसे –

मालिक नौकर से काम करवाता है ।

(यहाँ मालिक प्रेरक कर्ता है और नौकर प्रेरित कर्ता है ।)

प्रेरणार्थक क्रियाओं के रूप-परिवर्तन के कुछ नियम :

(1) मूलधातु में 'आना' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया और 'वाना' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनती है, जैसे ।

मूलधातु	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
उग	उगाना	उगवाना
उड़	उड़ाना	उड़वाना
खिल	खिलाना	खिलवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
चल	चलाना	चलवाना
दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
लिख	लिखाना	लिखवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना

(2) कुछ मूल धातुओं की प्रथम मात्रा का परिवर्तन करके (आ > अ, ई/ए > इ, ऊ/ओ > उ) और फिर 'आना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'वाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है, जैसे –

मूलधातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
ओढ़	उढ़ाना	उढ़वाना
काट	कटाना	कटवाना
खेल	खिलाना	खिलवाना
घूम	घुमाना	घुमवाना
घोल	घुलाना	घुलवाना
छोड़	छुड़ाना	छुड़वाना
जाग	जगाना	जगवाना
जीत	जिताना	जितवाना
डूब	डुबाना	डुबवाना
नाच	नचाना	नचवाना
पीस	पिसाना	पिसवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना
लेट	लिटाना	लिटवाना

(3) स्वरांत धातुओं की प्रथम मात्रा का परिवर्तन करके (आ/ई/ए > इ, ऊ/ओ > उ) और फिर 'लाना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'लवाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है, जैसे –

मूलधातु	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
खा	खिलाना	खिलवाना
छू	छुलाना	छुलवाना
जी	जिलाना	जिलवाना
दे	दिलाना	दिलवाना
धो	धुलाना	धुलवाना
नहा	नहलाना	नहलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
रो	रुलाना	रुलवाना
सी	सिलाना	सिलवाना
सो	सुलाना	सुलवाना

(4) कुछ धातुओं के दो-दो रूप बनते हैं, जैसे –

मूलधातु	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
कह	कहाना/कहलाना	कहवाना/कहलवाना
देख	दिखाना/दिखलाना	दिखवाना/दिखलवाना
बैठ	बिठाना/बिठलाना	बिठवाना/बिठलवाना
सीख	सिखाना/सिखलाना	सिखवाना/सिखलवाना

(5) कुछ क्रियाओं के प्रथम प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते, जैसे – खेना, खोना, गाना, ढोना, पीटना, भेजना, लेना ।

(6) कुछ क्रियाओं के कोई भी प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते, जैसे – आना, गवाँना, गरजना, चाहना, जँचना, जानना, जाना, पाना, पछताना, पुकारना, मिलना, रुचना, सोचना, होना ।

काल

क्रिया घटित होने के समय को काल कहते हैं । क्रिया हो चुकी है तो वह भूतकाल है । होनी है, तो भविष्यत् काल है और हो रही है तो वर्तमान काल है । अतएव क्रिया के तीन काल हैं ।

(1) भूतकाल, (2) वर्तमान काल, (3) भविष्यत् काल

भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि क्रिया का व्यापार बीते हुए समय में पूरा हो गया, उसे भूतकाल कहते हैं । इसके छह भेद हैं –

(1) **सामान्य भूत** – इससे बीते हुए समय का तो बोध होता है, पर विशेष समय का ज्ञान नहीं हो पाता । जैसे – लड़का आया । रमेश ने खाया ।

(2) **आसन्न भूत** – इससे पता चलता है कि काम अभी-अभी समाप्त हुआ है ।

जैसे – लड़की आयी है । राधा ने खाया है ।

(3) **पूर्ण भूत** – इससे पता चलता है कि काम बहुत पहले समाप्त हो चुका है ।

जैसे – बच्चा गया था । सुरेश ने लिखा था ।

(4) **अपूर्ण भूत** – इससे पता चलता है कि काम बहुत पहले आरंभ हुआ था, पर उसकी पूर्णता का ज्ञान नहीं हो पाता । जैसे – अरुण लिख रहा था । रवि पढ़ता था ।

(5) **संदिग्ध भूत** – इससे शुरू हो गया काम पूरा हुआ था या नहीं, यह स्पष्ट नहीं हो पाता । जैसे – उसने चिट्ठी लिखी होगी । चोर भागा होगा ।

(6) **हेतुहेतुमद् भूत** – इससे पता चलता है कि शर्त पूरी न होने के कारण शुरू हुआ काम पूरा नहीं हो सका ।

जैसे – वर्षा होती तो फसल अच्छी होती ।

उसने पढ़ा होता तो मैंने लिखा होता ।

वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से पता चलता है कि क्रिया का व्यापार वर्तमान समय में जारी है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। इसके चार भेद हैं।

(1) **सामान्य वर्तमान** – इससे पता चलता है कि काम का आरंभ बोलने या लिखने के समय हुआ है। जैसे – मैं रोज पढ़ता हूँ। मालती रोती है।

(2) **तात्कालिक वर्तमान** – इससे पता चलता है कि काम वर्तमान समय में हो रहा है। जैसे – कामिनी पढ़ रही है। शिशु खेल रहा है।

(3) **संदिग्ध वर्तमान** – इससे वर्तमान समय में कार्य के होने में संदेह रहता है। जैसे – छात्र अभी पढ़ रहे होंगे। मोहन आता होगा।

(4) **संभाव्य वर्तमान** – इससे कार्य वर्तमान समय में होने की संभावना रहती है। जैसे – माधवी आती हो। छात्र अभी पढ़ रहे हों।

भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि क्रिया का व्यापार आनेवाले समय में पूरा होगा, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं।

(1) **सामान्य भविष्यत्** – इससे पता चलता है कि आने वाले समय में कार्य संपन्न होगा; जैसे – मैं पाठ पढ़ूँगा। सुलोचना कटक जाएगी।

(2) **संभाव्य भविष्यत्** – इससे पता चलता है कि आने वाले समय में कार्य के होने की संभावना है; जैसे – संभवत मैं कल पुरी जाऊँ।

(3) **हेतुहेतुमद् भविष्यत्** – इससे पता चलता है कि भविष्य में कार्य का होना दूसरे कार्य के होने पर निर्भर करता है; जैसे –

तुम आओ तो मैं जाऊँ।

वह पढ़े तो पास हो जाए।

कालभेद से वाक्य संरचना
'जाना' (अकर्मक क्रिया, पुंलिंग)

■ भूत काल

काल भेद	मैं	तू/वह	तुम	हम/आप/वे
सामान्य	गया।	गया।	गये।	गये।
आसन्न	गया हूँ।	गया है।	गये हो।	गये हैं।
पूर्ण	गया था।	गया था।	गये थे।	गये थे।
अपूर्ण	जाता था।	जाता था।	जाते थे।	जाते थे।
	जा रहा था।	जा रहा था।	जा रहे थे।	जा रहे थे।
संदिग्ध	गया होऊँगा	गया होगा।	गये होगे।	गये होंगे।
	गया हूँगा।		गये होंगे।	
हेतुहेतुमद्	जाता।	जाता	जाते।	जाते।
	गया होता।	गया होता।	गये होते।	गये होते।

■ वर्तमान काल

कालभेद	मैं	तू/वह	तुम	हम/आप/वे
सामान्य	जाता हूँ।	जाता है।	जाते हो।	जाते हैं।
तात्कालिक	जा रहा हूँ।	जा रहा है।	जा रहे हो।	जा रहे हैं।
संदिग्ध	जाता होऊँगा	जाता होगा।	जाते होगे/होंगे।	जाते होंगे।
	जाता हूँगा।			
	जा रहा होऊँगा।	जा रहा होगा।	जा रहे होगे/होंगे।	जा रहे होंगे।
	जा रहा हूँगा।			
संभाव्य	जाता होऊँ।	जाता हो।	जाते हो।	जाते हों।
	जा रहा होऊँ।	जा रहा हो।	जा रहे हो।	जा रहे हों।

■ भविष्यत् काल

कालभेद	मैं	तू/वह	तुम	हम/आप/वे
सामान्य	जाऊँगा ।	जाएगा ।	जाओगे ।	जाएँगे ।
संभाव्य	जाऊँ ।	जाए ।	जाओ ।	जाएँ ।
हेतुहेतुमद्	जाऊँ ।	जाए ।	जाओ ।	जाएँ ।

'पढ़ना' (सकर्मक क्रिया, पुंलिंग)

■ भूत काल

कालभेद	मैं	तू/वह	तुम	हम/आप/वे
सामान्य	ने पढ़ा ।	ने पढ़ा ।	ने पढ़ा ।	ने पढ़ा ।
आसन्न	ने पढ़ा है ।	ने पढ़ा है ।	ने पढ़ा है ।	ने पढ़ा है ।
पूर्ण	ने पढ़ा था ।	ने पढ़ा था ।	ने पढ़ा था ।	ने पढ़ा था ।
अपूर्ण	पढ़ता था ।	पढ़ता था ।	पढ़ते थे ।	पढ़ते थे ।
	पढ़ रहा था ।	पढ़ रहा था ।	पढ़ रहे थे ।	पढ़ रहे थे ।
संदिग्ध	ने पढ़ा होगा ।	ने पढ़ा होगा ।	ने पढ़ा होगा ।	ने पढ़ा होगा ।
हेतुहेतुमद्	पढ़ता ।	पढ़ता ।	पढ़ते ।	पढ़ते ।
	ने पढ़ा होता ।	ने पढ़ा होता ।	ने पढ़ा होता ।	ने पढ़ा होता ।

■ वर्तमान काल

कालभेद	मैं	तू/वह	तुम	हम/आप/वे
सामान्य	पढ़ता हूँ ।	पढ़ता है ।	पढ़ते हो ।	पढ़ते हैं ।
तात्कालिक	पढ़ रहा हूँ ।	पढ़ रहा है ।	पढ़ रहे हो ।	पढ़ रहे हैं ।
संदिग्ध	पढ़ता होऊँगा ।	पढ़ता होगा ।	पढ़ते होगे/होंगे ।	पढ़ते होंगे ।
	पढ़ता हूँगा ।			
	पढ़ रहा होऊँगा ।	पढ़ रहा होगा ।	पढ़ रहे होगे/होंगे ।	पढ़ रहे होंगे ।
	पढ़ रहा हूँगा ।			
संभाव्य	पढ़ता होऊँ ।	पढ़ता हो ।	पढ़ते हो ।	पढ़ते हों ।
	पढ़ रहा होऊँ ।	पढ़ रहा हो ।	पढ़ रहे हो ।	पढ़ रहे हों ।

■ **भविष्यत् काल**

कालभेद	मैं	तू/वह	तुम	हम/आप/वे
सामान्य	पढ़ूँगा ।	पढ़ेगा ।	पढ़ोगे ।	पढ़ेंगे ।
संभाव्य	पढ़ूँ ।	पढ़े ।	पढ़ो ।	पढ़ें ।
हेतुहेतुमद	पढ़ूँ ।	पढ़े ।	पढ़ो ।	पढ़ें ।

अभ्यास

1. क्रिया किसे कहते हैं ? सोदाहरण बताइए ।

2. धातु किसे कहते है ? पाँच उदाहरण दीजिए ।

3. **निम्नलिखित क्रियाओं में से अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं को अलग-अलग कीजिए :**

   देखना, रोना, दौड़ना, खुलना, बेचना, खरीदना, धकेलना, रौंदना, आना, जाना

4. **निम्नलिखित क्रियाओं में से संयुक्त क्रियाओं को छाँटिए :**

   गिरना, गिर पड़ना, कराना, कर बैठना, खा चुकना, हथियाना, लिखाना, अनुरोध करना

5. **निम्नलिखित वाक्यों में से कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य के वाक्यों को अलग-अलग कीजिए :**

   (क) हिमालय भारत के उत्तर में है ।

   (ख) लड़के जल्दी चले गए ।

   (ग) रावण राम से मारा गया ।

(घ) इतनी धूप में मुझसे चला नहीं जाएगा ।

(ङ) कमला नाचना चाहती थी ।

(च) मिठाई बनाई गई ।

(छ) कल तक चोर पकड़े जाएँगे ।

(ज) उससे हँसा नहीं जाता ।

6. **निम्नलिखित क्रियाओं से प्रथम प्रेरणार्थक और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनाइए :**

ओढ़ना, घूमना, गिरना, सुनना, देखना, सीना, छूना, लेटना, सीखना, बैठना ।

7. भूतकाल के भेदों का उल्लेख करते हुए प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए ।

8. **निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए :**

उदाहरण – लीला रोटी खाती है ।

लीला ने रोटी खाई ।

लीला केला खाती है ।

लीला ने केला खाया ।

(i) माँ खीर बनाती है ।

(ii) घोड़े चना खाते हैं ।

(iii) रमेश पपीता खाता है ।

(iv) वह नाटक देखता है ।

(v) अध्यापक कहानी सुनाते हैं ।

9. 'क' स्तंभ में कुछ वाक्य और 'ख' स्तंभ में कालों के नाम दिए गए हैं । वाक्य के साथ सही काल का मिलान करके लिखिए :

'क' स्तंभ	**'ख' स्तंभ**
लड़की ने पढ़ा था ।	संदिग्ध वर्तमान
वह गया होगा ।	पूर्ण भूत
लड़के पढ़ते थे ।	संदिग्ध भूत
वे गीत गाते होंगे ।	भविष्यत्
मैं पुरी जाऊँगी ।	अपूर्ण भूत

10. निर्देशानुसार वाक्यों को बदलिए :

(i) मैं जरूर जाऊँगी । (सामान्य भूत में)

(ii) बच्चा रोता है । (सामान्य भविष्यत् में)

(iii) वे पढ़ते होंगे । (संदिग्ध भूत में)

(iv) तुम जाते तो मैं आता । (संभाव्य भविष्यत् में)

(v) लड़की जा रही है । (अपूर्ण भूत में)

●

अव्यय

वाक्य में कुछ पद होते हैं, जिन पर लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । अर्थात् इनका कोई परिवर्तन या विकार नहीं होता । ऐसे पदों को अविकारी या अव्यय- पद कहते हैं ।

अव्यय चार प्रकार के हैं ।

(1) क्रिया विशेषण

(2) संबंधबोधक

(3) समुच्चयबोधक

(4) विस्मयादिबोधक

क्रिया विशेषण

क्रिया की विशेषता बताने वाले पद को क्रिया-विशेषण कहते हैं ।

क्रिया-विशेषण चार प्रकार के हैं ।

(1) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

(2) कालवाचक क्रिया विशेषण

(3) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(4) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

1. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

ये दो प्रकार के हैं ।

(i) स्थितिवाचक – यहाँ, वहाँ, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, आगे, पीछे, साथ, पास, निकट, सर्वत्र

(ii) दिशावाचक – इधर, उधर, दूर, बाएँ, दाएँ, उस ओर, चारों ओर

2. कालवाचक क्रिया-विशेषण – ये तीन प्रकार के हैं –

(i) समयवाचक – आज, कल, परसों, सुबह, शीघ्र, अब, तब, अभी, तुरंत, दोपहर को, रविवार को, पहले, पीछे ।

(ii) अवधिवाचक – आजकल, नित्य, सदा, दिन भर, सुबह से, शाम तक, दो घंटे तक

(iii) पौन:पुन्यवाचक – बार-बार, प्राय:, कई बार, हर बार, प्रति दिन, अक्सर, बहुधा

3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण :

ये नौ प्रकार के हैं ।

(i) **प्रकारवाचक** – ऐसे, वैसे, जैसे, कैसे, धीरे-धीरे, जैसे-तैसे, यों ही, कुशलतापूर्वक, ध्यान से, जोर से, प्रेम से, अच्छी तरह, रोते हुए, पैदल, हँसते हुए ।

(ii) **निश्चयवाचक** – अवश्य, जरूर, सचमुच, यथार्थत:, वस्तुत:, निस्सन्देह, बेशक, वास्तव में, दरअसल, अलबत्ता, यथार्थ में, असल में, बिलकुल, निश्चित रूप से ।

(iii) **अनिश्चयवाचक** – कदाचित्, शायद, संभवत:, यथासम्भव, अंदाजन, हो सकता है, संभव है ।

(iv) **स्वीकृतिवाचक** – हाँ, अच्छा, सही, ठीक ।

(v) **निषेधवाचक** – न, नहीं, मत, थोड़े ही ।

(vi) **आकस्मिकतावाचक** – सहसा, अचानक, एकाएक ।

(vii) **कारणवाचक** – क्योंकि, अत: इसलिए, मजबूरन ।

(viii) **प्रश्नवाचक** – कहाँ, कब, किधर, कैसे, क्यों, किसलिए, क्योंकर ।

(ix) **अवधारक** – ही, भर, तक, भी, पर्यन्त, मात्र, तो ।

(ये क्रिया की सीमा निर्धारित करते हैं ।)

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण :

ये पाँच प्रकार के हैं ।

(i) **अधिकतावाचक** – अधिक, अति, अतिशय, ज्यादा, खूब, बारम्बार, पुनः पुनः लगातार, पूर्णतया ।

(ii) **न्यूनतावाचक** – थोड़ा, जरा-सा, रंचमात्र, तनिक, लगभग, किंचित, थोड़ा-बहुत, लेशमात्र, कुछ ।

(iii) **पर्याप्तवाचक** – यथेष्ट, काफी, पर्याप्त, बहुत कुछ, पूरा, ठीक ।

(iv) **श्रेणीवाचक** – थोड़ा-थोड़ा, तिल-तिल, क्रम-क्रम से, बारी-बारी से, एक-एक करके, ज्यादा-ज्यादा, यथाक्रम ।

(v) **तुलनावाचक** – कम, अधिक, ज्यादा, इतना, उतना, कितना, जितना, बढ़कर ।

संबंधबोधक अव्यय

वाक्य में एक पद (संज्ञा या सर्वनाम) से दूसरे पद का सम्बन्ध बतानेवाले अव्यय को 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं ।

अर्थ की दृष्टि से 'संबंधबोधक अव्यय' निम्न प्रकार के हैं :-

(i) **कालवाचक** – के बाद, के आगे, के पीछे, के पहले, के पूर्व, के अवसर पर, से पूर्व, से पहले, के उपरांत, के अनंतर, के पश्चात, के दौरान ।

(ii) **स्थानवाचक** – के आगे, के पीछे, के ऊपर, के नीचे, के अन्दर, के बाहर, के निकट, के बीच, के नजदीक, के समीप, से दूर, की तरफ, की ओर ।

(iii) **कारणवाचक** – के कारण, के लिए, के मारे, के वास्ते, के हेतु, की वजह, के निमित्त ।

(iv) **साधनवाचक** – के द्वारा, के जरिए, के मार्फत, के हाथ, के सहारे ।

(v) **विषयवाचक** – के बारे में, के विषय में, की बाबत, के प्रति, के अधीन, के सम्बन्ध में, के सिलसिले में, के मामले में, के भरोसे ।

(vi) **व्यतिरेकवाचक** – के सिवा, के अलावा, के बिना, के अतिरिक्त, की बजाय, से रहित ।

(vii) **सादृश्यवाचक** – के समान, के अनुसार, के अनुकूल, के सरीखा, के जैसा, के अनुरूप, के तुल्य, के लायक, की तरह, की भाँति, की तुलना में ।

(viii) **विरोधवाचक** – के विरुद्ध, के विपरीत, के खिलाफ, के उलटे ।

(ix) **सहचरवाचक** – के साथ, के सहित, के संग, के समेत, के अधीन

(x) **तुलनावाचक** – की अपेक्षा, की बतिस्बत, के आगे, के सामने, से बढ़कर, से घटकर ।

(xi) **दिशावाचक** – की ओर, की तरफ, के आसपास, के पार ।

(xii) **संग्रहवाचक** – भर, तक, मात्र, पर्यन्त ।

(xiii) **विनिमयवाचक** – की जगह, के बदले

ध्यान दीजिए :

- कुछ संबधबोधक अव्ययों के आगे परसर्ग (के, की, से) लुप्त रहते हैं जैसे – धनरहित – धन से रहित, पीठपीछे – पीठ के पीछे ।
- कुछ संबंधबोधक अव्यय परसर्ग के पहले आ जाते हैं जैसे – बिना समझे ।
- (परसर्ग के बिना) स्वतंत्र रूप से आने से 'संबंधबोधक अव्यय' 'क्रियाविशेषण' बन जाता है, जैसे – वह पीछे बैठा ।

समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय दो या दो से अधिक पदों, पदबंधों, उपवाक्यों को जोड़ता है, उसे समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं । ये दो प्रकार के हैं ।

(1) समानाधिकरण (समान घटकों – पदों, पदबंधों और उपवाक्यों को जोड़ते है या अलग करते हैं ।)

(2) व्यधिकरण (मुख्य उपवाक्य के साथ आश्रित उपवाक्य को जोड़ते हैं ।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय :

और, तथा, एवं, व, या, अथवा, किंवा, नहीं तो, क्या-क्या, न-न, कि, भले ही, चाहे, पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, वरन, बल्कि, मगर, फिर, नहीं तो, इसलिए, अतः, अतएव

व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय :-

क्योंकि, चूँकि, इसलिए कि, इसलिए, ताकि, कि, यदि / यद्यपि - तथापि/फिर भी, चाहे -पर, यदि-तो, चाहे-तो भी, अगर-तो, जब-तो/तब, जहाँ-वहाँ, चाहे-लेकिन, मानो, यानी, जैसे।

विस्मयादिबोधक अव्यय

नीचे लिखे वाक्यों को देखिए –

वाह ! वाह ! तुमने बहुत अच्छा किया ! (हर्ष)

बाप रे ! कितना डरावना दृश्य ! (आश्चर्य)

छी! छी! तुम्हें ऐसा नहीं करना था । (घृणा)

हाय ! वह लड़का चल बसा ! (शोक)

रेखांकित अव्यय वक्ता के मनोभाव या मन:स्थिति को व्यक्त करते हैं । इन्हें 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहते हैं । ये वाक्य के आरंभ में आते हैं । वाक्य से इनका सीधा संबंध नहीं होता । विशेष अनुतान के साथ इनका उच्चारण करके हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा

आदि व्यक्त किये जाते हैं । इन अव्ययों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाया जाता है । ये अव्यय **दस** प्रकार के होते हैं –

(i) **हर्ष** – वाह ! वाह-वाह! शाबाश ! धन्य-धन्य ! बहुत अच्छा ! खूब ! जय जय !

(ii) **शोक** – हाय! हाय-हाय! ओह ! हा-हा! बाप रे! हे राम! त्राहि-त्राहि ! काश! उफ!

(iii) **विस्मय/आश्चर्य** – ऐं! ऐ! हैं ! क्या! वाह! ओह! सच! अच्छा! अरे!

(iv) **अनुमोदन/स्वीकृति** – ठीक ! हाँ ! हाँ-हाँ ! अच्छा ! जी ! हूँ! जी हाँ !

(v) **तिरस्कार/घृणा** – धिक! छि! उफ ! छि-छि ! थू! चुप! हट!

(vi) **अस्वीकृति** – उहूँ! न! न - न !

(vii) **सम्बोधन** – अरे! रे! अजी! तो! अहो! ऐ! हो! री! अरी!

(viii) **अभिवादन** – नमस्कार! राम राम! प्रणाम! हलो! सलाम!

(ix) **आभार** – धन्यवाद! शुक्रिया ! थैंक यू!

(x) **आशीर्वाद** – जियो! भला हो । जीते रहो ! दीर्घायु हो !

अभ्यास

1. अव्यय किसे कहते हैं ? इनके भेदों का सोदाहरण परिचय दीजिए ।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में से क्रियाविशेषणों को छाँटिए :**

(i) उधर मेला लगा है ।

(ii) तुम पीछे क्यों बैठे ?

(iii) सुरेश सभा में पहले पहुँच गया ।

(iv) अचानक वर्षा आ गई ।

(v) मैं जरूर तुम्हारी सहायता करूँगा ।

(vi) धूप में मत खेलो ।

(vii) बच्चे दौड़ते हुए आए ।

(viii) मैंने खूब खा लिया ।

(ix) कक्षा में लगभग चालीस विद्यार्थी थे ।

(x) हाथी धीरे-धीरे आ रहा है ।

3. निम्नलिखित वाक्यों में से संबंधसूचक अव्यय छाँटिए :

(i) उसके पीछे कोई नहीं था ।

(ii) लड़की के निमित्त कलम खरीदी गई ।

(iii) नौकर के हाथ चिट्ठी भेज दो ।

(iv) यहाँ कुसुम के अलावा और कोई लड़की नहीं है ।

(v) बच्चे नदी की तरफ चल पड़े ।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से समुच्चयबोधक अव्यय छाँटिए :-

(i) विधु और विनोद ही कक्षा में पढ़ते हैं ।

(ii) तुम कटक जाओ, नहीं तो मैं जाऊँगा ।

(iii) वह अच्छा पढ़ता है, लेकिन देर से उठता है ।

(iv) मैं कलम या पेन्सिल खरीदूँगा ।

(v) क्या बूढ़े क्या बच्चे, सभी गर्मी से परेशान हैं ।

(vi) चाहे तुम बुरा मानो, मैं तो कल आ नहीं पाऊँगा ।

(vii) चूँकि वह गरीब है, इसलिए इतना चंदा दे नहीं सकता ।

(viii) अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मैं तुम्हें उधार दे नहीं सकता ।

(ix) वह ऐसा बोलता है मानो कोयल कूक रही हो ।

(x) यद्यपि आज मौसम खराब है, फिर भी मैं चला जाऊँगा ।

5. विस्मय/आश्चर्य के अर्थ में दो विस्मयादिबोधक वाक्य लिखिए ।

●

अध्याय - 7

वाक्य विचार

वाक्य – जिन पदों को एक साथ बोलकर वक्ता अपना विचार या भाव पूरी तरह व्यक्त करे, उसे वाक्य कहते हैं ।

वाक्य के अंग

वाक्य में पद, पदबंध और उपवाक्य आदि अंग रहते हैं ।

पद – वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाता है ।

पदबंध

वाक्य में एकाधिक पद परस्पर संबद्ध होकर एक इकाई के रूप में काम करते हैं । उन्हें 'पदबंध' कहते हैं । पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं –

(i) संज्ञा पदबंध (ii) विशेषण पदबंध (iii) सर्वनाम पदबंध (iv) क्रिया पदबंध (v) क्रिया-विशेषण पदबंध ।

(i) **संज्ञा पदबंध** : संज्ञा पदबंध संज्ञा का काम करता है । यह तीन प्रकार से बनता है – कर्ता पदबंध, कर्म पदबंध, पूरक पदबंध ।

(क) कर्ता पदबंध : रुक रुक कर बोलनेवाला लड़का डर गया ।

लाल घोड़ा दौड़ रहा है ।

गोली से घायल उग्रवादी आदमी अस्पताल में मर गया ।

(ख) कर्म पदबंध : मैंने लाल घोड़ा देखा ।

मैंने लँगड़ाते हुए चलनेवाला लाल घोड़ा देखा ।

(ग) पूरक पदबंध : पूरक पदबंध दो प्रकार के होते हैं–

कर्तापूरक –पण्डित जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे ।

कर्मपूरक– हम तुलसीदास को भक्तिकाल का महान सन्त मानते हैं ।

(ii) **विशेषण पदबंध** : विशेषण पदबंध संज्ञा की विशेषता बनाता है; जैसे–

उसने मुझे बहुत मीठे-मीठे फल खिलाये ।

शिशु का चाँद-सा प्यारा मुखड़ा सबको मोह लेता है ।

नालियों में बहता हुआ गंदा पानी खेत में घुस आया ।

यह मछली एक किलो भर है ।

सभा में सिर्फ चालीस-पचास आदमी थे ।

(iii) **सर्वनाम पदबंध** : सर्वनाम पदबंध सर्वनाम का काम करता है । ऐसे पदबंध में सर्वनाम पहले या बाद में आ सकता है; जैसे–

दैव का मारा वह बर्बाद हो गया ।

लोगों की नजर में गिरे हुए तुम अपने को कैसे संभाल पाओगे ?

जल्दी-जल्दी याद कर लेनेवाला वह अन्त में इनाम जीत लेगा ।

तुम सब कल जल्दी आ जाना ।

मुझ अभागे को कुछ दिन की मुहलत चाहिए ।

(iv) **क्रिया पदबंध** : क्रिया पदबंध क्रिया का काम करता है; जैसे–

मेरी माँ पुरी में रहते समय मन्दिर जाया करती थी । (कालसूचक)

हम बचपन में रोज दादी माँ से कहानियाँ सुना करते थे । (कालसूचक)

वह खा चुका होगा । (पक्षसूचक)

तुम्हें वहाँ शरबत पीना चाहिए था । (पक्षसूचक)

बूढ़ा ठीक से चल-फिर सकता है । (दो धातुओं का योग)

तुम मित्रों को उधार दोगे ? (समिश्र क्रिया)

चाय में ज्यादा चीनी डाल दो । (संयुक्त क्रिया)

मुठभेड़ में दो उग्रवादी मारे गये । (वाच्यसूचक)

वह खाना खा रहा होगा । (वृत्तिसूचक)

(v) **क्रियाविशेषण पदबंध** : यह क्रिया विशेषण का काम करता है । उसमें स्थान, समय, रीति, प्रयोजन, कारण आदि की सूचना मिलती है, जैसे–

बच्चा खुले मैदान में खेल रहा है । (स्थान)

ट्रेन पाँच बजकर पन्द्रह मिनट पर आएगी । (समय)

हमने बड़ी श्रद्धापूर्वक संत का स्वागत किया । (रीति)

मुझे नौकरी के लिए दुर्गम स्थान पर जाना पड़ा । (प्रयोजन)

उनके अलावा 'के नीचे' (संबंधबोधक पदबंध), 'इसलिए कि' (समुच्चयबोधक पदबंध) और 'हाय रे' (विस्मयादिबोधक पदबंध) भी होंगे ।

उपवाक्य

जब दो या दो से अधिक छोटे-छोटे वाक्य एक साथ आकर एक वाक्य बनाते हैं, तब प्रत्येक वाक्य को उपवाक्य कहा जाता है । प्रत्येक उपवाक्य में कर्ता और क्रिया का होना आवश्यक है । उपवाक्य के तीन भेद हैं – (i) समानाधिकरण (ii) प्रधान (iii) आश्रित ।

(i) **समानाधिकरण उपवाक्य** : जब वाक्य में प्रत्येक उपवाक्य स्वतंत्र होते हैं, समान महत्व रखते हैं, तब वे समानाधिकरण उपवाक्य कहलाते हैं , जैसे–

रजनी गाती है और नाचती है ।

यहाँ 'रजनी नाचती है' समानाधिकरण उपवाक्य है ।

(ii) **प्रधान उपवाक्य** : वाक्य में जिस उपवाक्य का मुख्य स्थान होता है और क्रिया स्वतंत्र होती है, उसे प्रधान या मुख्य उपवाक्य कहते है; जैसे–

उसने कहा कि मैं कटक जाऊँगा ।

यहाँ 'उसने कहा' प्रधान उपवाक्य है ।

(iii) **आश्रित उपवाक्य** : आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर आश्रित रहता है, जैसे–

जो मेहनत करता है, उसे उसका फल मिलता है ।

यहाँ 'जो मेहनत करता है' आश्रित उपवाक्य है ।

ये तीन प्रकार के होते हैं–

(क) **संज्ञा उपवाक्य**– इसका प्रयोग प्रधान उपवाक्य की संज्ञा (कर्म पूरक आदि) के स्थान पर होता है; जैसे–

शिक्षक ने कहा कि मैं तुम्हें एक नया पाठ पढ़ाऊँगा ।

(यहाँ प्रधान उपवाक्य की क्रिया 'कहा' का कर्म है-कि मैं तुम्हें एक नया पाठ पढ़ाऊँगा । अत: वह संज्ञा उपवाक्य है ।

तुम मुझे यह बताओ कि कक्षा में हल्ला क्यों हुआ ?

(यहाँ प्रधान उपवाक्य की क्रिया 'बताओ' के कर्म 'यह' का पूरक है-कि कक्षा में हल्ला क्यों हुआ ? अत: वह संज्ञा उपवाक्य है ।

(ख) **विशेषण उपवाक्य** – यह प्रधान उपवाक्य की संज्ञा की विशेषता बताता है; जैसे –

वह लड़का कहाँ है, जो कक्षा में प्रथम आया है ?

यहाँ प्रधान उपवाक्य की संज्ञा 'लड़का' की विशेषता बताता है– जो कक्षा में प्रथम आया है । अत: यह विशेषण उपवाक्य है ।

विशेषण उपवाक्य जो, जिसे, जिसमें आदि से शुरू होता है ।

(ग) **क्रियाविशेषण उपवाक्य** – यह प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है; जैसे–

तुम वैसा ही करो, जैसा आदेश दिया जाता है ।

यहाँ प्रधान उपवाक्य की क्रिया 'करो' की विशेषता (रीति) बताता है । 'जैसा आदेश दिया गया है' । यह क्रियाविशेषण उपवाक्य है ।

क्रियाविशेषण उपवाक्य निम्नलिखित प्रकार के हैं –

(i) **कालवाचक** : उसका आरंभ जब, जब-जब, ज्योंही से होता है; जैसे –

जब घण्टी बजी, तब सभी छात्र कक्षा से बाहर आए ।

जब-जब तुम दोनों मिले, तब-तब झगड़ते रहे ।

ज्यों ही घण्टी बजी, त्यों हीं लड़के बाहर चले आए ।

(ii) **स्थानवाचक** : इसका आरंभ जहाँ, जिधर से होता है; जैसे –

जहाँ तुम आज खड़े हो, वहाँ कीचड़ भरी हुई थी ।

मैं जिधर जाता हूँ, तुम भी उधर जाते हो ।

(iii) **रीतिवाचक** : इसका आरंभ जैसे, जिस प्रकार, मानो से होता है; जैसे–

जैसे ही सिखाया गया था, लड़कियाँ वैसे ही नाचने लगीं ।

वह ऐसा गाती है मानो कोयल कूक रही हो।

(iv) **परिमाणवाचक** : इसका आरंभ ज्यों-ज्यों, जैसे-जैसे, जितना, जहाँ तक से होता है–

मनुष्य की ज्यों-ज्यों कामना बढ़ती है, वह त्यों-त्यों दु:खी रहता है ।

जितना गुड़ डालोगे, लड्डू उतना मीठा होगा ।

जहाँ तक संभव है, हजारों की मदद करते रहे ।

(v) **कारणवाचक** : इसका आरंभ क्योंकि, अगर, ताकि, यद्यपि, चाहे से होता है, उपवाक्य से कारण, शर्त या उद्देश्य का भाव प्रकट होता है; जैसे –

मैं वहाँ जाऊँगा क्योंकि मुझे आमंत्रित किया गया है ।

अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो परिणाम अच्छा नहीं होगा ।

पहले आरक्षण करा लो ताकि रेलयात्रा सहुलियत होगी ।

यद्यपि वह धनवान है, फिर भी कंजूस है ।

तुम चाहे मुझे नुकसान पहुँचाओ, पर मैं सच ही बोलूँगा ।

वाक्य के अवयव

वाक्य के दो अवयव होते हैं – (i) उद्देश्य, (ii) विधेय । जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में कोई बात कही जाती है, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं । उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे 'विधेय' कहते हैं ।

उद्देश्य का मुख्य अंश कर्ता है । कर्ता के विस्तार को उद्देश्य का विस्तार कहते हैं । उसी प्रकार कर्म, कर्म के विस्तार, पूरक, पूरक के विस्तार और क्रिया के विस्तार से विधेय का विस्तार होता है ।

उद्देश्य (कर्ता) की रचना निम्न प्रकार से होती है –

संज्ञा से – पत्ता गिरा । कौआ बोला ।

सर्वनाम से – वह आया । तुम पढ़ो ।

विशेषण से – अमीरों ने दान दिया ।

क्रियार्थक संज्ञा से – सच बोलना एक महान गुण है ।

अव्यय से – तुम्हारी हाँ-नहीं, हाँ-नहीं हमें दुबिधा में डाल देती है ।

कर्ता का विस्तार चार प्रकार से होता है ।

विशेषण से – लाल घोड़ा दौड़ रहा है ।

संबंधबोधक शब्द से – कश्मीर का लाल घोड़ा दौड़ रहा है ।

समानाधिकरण से – दशरथ नन्दन श्रीराम आदर्श राजा थे ।

पदबंध से – कड़ी मेहनत करनेवाले मजदूर देश के विकास में सहायक होंगे ।

विधेय की रचना निम्न प्रकार से होती है –

क्रिया से – गाड़ी आयी ।

कर्म और क्रिया से – उसने फल खाया ।

कर्म, कर्म पूरक और क्रिया से – मैं उसे ईमानदार समझता हूँ ।

कर्म-विस्तार, कर्म, क्रिया-विस्तार और क्रिया से – तुम बासी रोटी वहाँ चुपके से फेंक दो ।

विधेय का विस्तार निम्न प्रकार से होता है –

क्रिया और उसके विस्तार से – गाड़ी तेज चलती है ।

कर्म और उसके विस्तार से – उसने ताजा रोटी मजे से खाई ।

पूरक और उसके विस्तार से – उसने लंगड़े रामू को पक्का चोर समझ लिया ।

रचना की दृष्टि से वाक्य

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद हैं –

(i) **साधारण या सरल वाक्य** (ii) **मिश्र वाक्य** (iii) **संयुक्त वाक्य**

(i) **साधारण / सरल वाक्य** : इसमें केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, जैसे– मोहन पाठ पढ़ता है ।

(ii) **मिश्र वाक्य** : इसमें एक मुख्य उपवाक्य होता है और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं । मिश्र वाक्य के आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं ।

(क) *संज्ञा उपवाक्य* – जैसे – मैं चाहता हूँ कि गर्मियों में तुम हमारे घर पर रहो ।

(ख) *विशेषण उपवाक्य* – जैसे – वह लड़का भाग गया जिसने चोरी की थी ।

(ग) *क्रियाविशेषण उपवाक्य* – जैसे – मैं तब पहुँचा जब बारिश हो रही थी ।

(iii) **संयुक्त वाक्य** : जिस वाक्य में एक से अधिक प्रधान उपवाक्य हों उसे संयुक्त उपवाक्य कहते हैं ।

(क) उसमें दो सरल वाक्य हो सकते हैं – जैसे – तुम यहाँ से जाओ और सोहन को बुलाकर लाओ ।

(ख) एक सरल तथा एक मिश्र वाक्य हो सकते हैं, जैसे – मेरा यह विचार है कि यदि वर्षा नहीं होगी तो फसल नष्ट हो जाएगी ।

(ग) दो मिश्र वाक्य हो सकते हैं, जैसे – जब तुम पहुँचे तब सब आ रहे थे और जब तुम खाने बैठे, तब बस चली गयी।

वाक्य परिवर्तन

सरल वाक्य – मैंने एक बहुत लंबा साँप देखा ।

मिश्र वाक्य – मैंने एक साँप देखा जो बहुत लंबा था ।

सरल वाक्य – सुबह-शाम कसरत करनेवाला आदमी इनाम जीत गया ।

मिश्र वाक्य – जो आदमी सुबह-शाम कसरत करता था, वह इनाम जीत गया ।

सरल वाक्य – शिशु दूध पीकर सो गया ।

संयुक्त वाक्य – शिशु ने दूध पिया और सो गया ।

सरल वाक्य – कड़ी मेहनत करने पर भी किसान गरीब रहता है ।

संयुक्त वाक्य – किसान कड़ी मेहनत करता है, फिर भी वह गरीब रहता है ।

सरल वाक्य – मैं शरीर पर नित्य तेल मलकर नहाता हूँ ।

संयुक्त वाक्य – मैं शरीर पर नित्य तेल मलता हूँ और नहाता हूँ ।

संयुक्त वाक्य – आगे बढ़ो और दुश्मनों का मुकावला करो ।

सरल वाक्य – आगे बढ़कर दुश्मनों का मुकावला करो ।

मिश्र वाक्य – जो छात्र कठिन परिश्रम करते हैं, वे सफल होते हैं ।

सरल वाक्य – कठिन परिश्रम करने वाले छात्र सफल होते हैं ।

मिश्र वाक्य – उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ ।

सरल वाक्य – उसने अपने को निर्दोष बताया ।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के निम्न भेद हो सकते है :

(1) **विधानात्मक** : जिस वाक्य से क्रिया या कार्य के होने का भाव प्रकट हो, जैसे–
बच्चे हिन्दी पढ़ते हैं । वे एक अध्यापक हैं ।

(2) **निषेधवाचक** : जिस वाक्य की क्रिया में न होने का भाव हो, जैसे–
राजू ने खाना नहीं खाया । आप ज्यादा न बोलें ।
वहाँ न तुम जाओ, न वह जाए । तुम देर मत करो ।

(3) **आज्ञावाचक** : जिस वाक्य से आज्ञा, आदेश, अनुरोध, परामर्श या उपदेश आदि का बोध होता हो, जैसे–
तुम अपना काम करो । तुम सुबह जल्दी उठा करो । यह गरीबों की मदद करें ।

(4) **प्रश्नवाचक** : जिस वाक्य से प्रश्न पूछने का बोध हो; जैसे–
क्या आप बाजार जाना चाहते हैं ? शेर कहाँ रहता है ? वह लड़का कब लौटेगा ?

(5) **इच्छावाचक** : जिस वाक्य से इच्छा, कामना, सुझाव, आशिष आदि का बोध हो; जैसे – भगवान तुम्हारा मंगल करें । तुम्हारी उन्नति हो ।

(6) **विस्मयबोधक** : जिस वाक्य से विस्मय, हर्ष, सुख-दु:ख आदि भाव अभिव्यक्त हों; जैसे – तुमने इतना बड़ा वजन उठा लिया ! हाय, वह कितना कष्ट झेलता है ! शाबाश ! तुमने बड़ा अच्छा काम किया !

(7) **सन्देहवाचक** : जिस वाक्य से सन्देह या संभावना का बोध हो; जैसे–
क्या वह अब तक पहुँच गया होगा ? शायद आज बारिश होगी ।

(8) **संकेतवाचक** : जिस वाक्य में कोई शर्त (संकेत) पूरी होने की बात कही गई हो; जैसे–
वर्षा होती तो अन्न उपजता । तुम पढ़ोगे तो पास होगे ।

अभ्यास

1. वाक्य की परिभाषा देकर एक उदाहरण लिखिए ।
2. पदबंध कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक का एक एक उदाहरण दीजिए ।
3. **निम्नलिखित वाक्यों में से आश्रित उपवाक्यों को छाँटकर लिखिए और बताइए कि वे किस प्रकार के उपवाक्य हैं–**
   (i) उसने कहा कि मैं स्कूल नहीं जाऊँगा ।
   (ii) वह स्कूल नहीं गया क्योंकि वह बीमार था ।
   (iii) जब विपत्ति आ जाए, तब घबराना नहीं ।
   (iv) मोहन कहता है कि मैं गलत काम नहीं कर सकता ।
   (v) जो लड़का परीक्षा में प्रथम आया, उसे पुरस्कार मिलेगा ।
4. **इन वाक्यों को जोड़िए :**
   (i) दीदी ने भींडी काटी । माँ ने सब्जी बनाई ।
   (ii) मुझे एक मकान मिला था । वह रहने लायक नहीं था ।
   (iii) यहाँ काफी वर्षा होती है । इस साल कम वर्षा हुई है ।
   (iv) मेरे पास पैसे नहीं थे । मैं मेले में नहीं गया ।
   (v) उसकी ममी की तबीयत ठीक नहीं थी । वह विद्यालय नहीं गई ।

5. **उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :–**

उदाहरण – वह झूठ बोला था, वह उसकी मजबूरी थी ।

वह झूठ बोला था, क्योंकि यह उसकी मजबूरी थी ।

(i) हम खेल नहीं सके । बारिश हुई ।

(ii) उसने नौकरी छोड़ दी । उसे कम पैसे मिलते थे ।

(iii) मालिक ने नौकर को निकाल दिया । उसने चोरी की थी ।

(iv) वह जल्दी सो गया । रोशनी चली गई थी ।

(v) मैं वहाँ खाना खाने नहीं गई । वहाँ मछली पकाई गई थी ।

6. **निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्यों– विधेयों को अलग- अलग लिखिए :**

(i) मैं घर जा रहा हूँ ।

(ii) राशन लेने आए लोग बहुत देर तक खड़े रहे ।

(iii) तुम हिन्दी जानते हो ?

(iv) मेहनत करने वाले लोग कभी दु:खी नहीं होते ।

(v) छोटा पौधा धूप में मुरझा गया ।

7. **निम्नलिखित वाक्य अर्थ की दृष्टि से किस प्रकार के वाक्य हैं, बताइए :–**

(i) भुवनेश्वर भारत की राजधानी है ।

(ii) इस समय किसान खेत में नहीं होगा ।

(iii) आप यह पुस्तक पढ़ें ।

(iv) किसने गीत गाया ?

(v) मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा दूसरों की सहायता करते रहो ।

●

अध्याय - 8

विराम चिह्न

वाक्यों, उपवाक्यों, वाक्यखण्डों अथवा शब्दों के बीच रुकने का नाम विराम है । लिखित सामग्री पढ़ते समय लेखक के अभिप्राय को ठीक ठीक समझने के लिए हम जहाँ रुकते हैं, वहाँ विराम चिह्न लगाते हैं । 'विराम चिह्न' निम्न प्रकार के होते हैं–

1.	अल्प विराम	,
2.	अर्द्ध विराम	;
3.	पूर्ण विराम	।
4.	प्रश्न सूचक चिह्न	?
5.	विस्मयादिबोधक चिह्न	!
6.	विवरण चिह्न	:–
7.	निर्देशक चिह्न	–
8.	योजक चिह्न	-
9.	'उद्धरण / अवतरण चिह्न	'........' "......."
10.	लाघव / संक्षेप चिह्न	०
11.	कोष्ठक	( ) [ ] { }

1. **अल्प विराम** (,)– पढ़ते समय जिस स्थान पर थोड़ा ठहरना हो, वहाँ अल्प विराम लगाया जाता है ।

   निम्नलिखित स्थितियों में अल्पविराम (,) प्रयुक्त होता है–

   (i) जब एक ही प्रकार के बहुत से पद (शब्द) या वाक्यांश एक साथ आ जाएँ तो प्रत्येक के बीच में, जैसे–

   – काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य को षड़रिपु कहते हैं ।

   – जिसका शरीर स्वस्थ हो, हृदय पवित्र हो, बुद्धि निर्मल हो, वाणी में माधुर्य हो, वही सचमुच देवता है ।

(ii) कथन में बल देने के लिए, पदों की पुनरावृत्ति करते समय–

– हाँ, हाँ, आप पुस्तक ले सकते हैं ।

(iii) सम्बोधन, बस, सचमुच, वस्तुतः , अतः, हाँ, नहीं, अच्छा आदि शब्दों के बाद

– अरे मोहन, इधर आ जा ।

– वस्तुतः, वह धोखेबाज है ।

– हाँ, मैंने यह कहा था ।

(iv) पर, किन्तु, परन्तु, क्योंकि, इसलिए, नहीं तो, फिर आदि अव्ययों के पहले–

सच बोलो, नहीं तो दण्ड मिलेगा ।

मैं आ नहीं सका, क्योंकि मैं बीमार था ।

(v) उद्धरण के पूर्व

उसने कहा, ''मैं आज नहीं खेलूँगा ।''

(vi) किसी पत्र में अभिवादन, अभिनिवेदन करने के बाद

सम्मानास्पद पिताजी, भवदीय,

(vii) एक ही पंक्ति में नाम और पता लिखते समय–

माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा, कटक

(viii) वाक्य में शब्दयुग्मों को अलग-अलग दिखाने के लिए–

सुख-दुःख, यश-अपयश, जन्म-मृत्यु सब विधि के अधीन हैं ।

2. **अर्द्धविराम (;)** : जहाँ अल्प विराम की अपेक्षा कुछ अधिक समय तक रुकना पड़ता है, वहाँ इसका प्रयोग होता है ।

(i) मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों के उपवाक्यों में विरोधात्मक कथन प्रकट करते समय

– देश का विकास तो हुआ; पर बेरोजगारी आज एक चुनौती बन गयी है ।

– जो तुमसे नफरत करता है; तुम उससे प्यार करो ।

(ii) किसी नियम के उल्लेख के बाद आनेवाले उदाहरण सूचक 'जैसे' शब्द के पूर्व

– वचन के दो भेद होते है; जैसे – एकवचन, बहुवचन

(iii) एकाधिक उपाधियों का उल्लेख करते समय, बीच में–

– एम.ए.; पि-एच.डी; चित्रकला डिप्लोमा ।

(iv) एक ही मुख्य विषय से संबंधित उपवाक्यों के मध्य में–

– वह पगली कभी हँसती थी; कभी रोती थी; कभी आसमान की ओर देखती थी ।

3. **पूर्ण विराम (।)** : जहाँ किसी बात को कहने का आशय या अभिप्राय पूरा हो गया हो, वहाँ 'पूर्ण विराम' लगाया जाता है । प्रश्नवाचक तथा विस्मयबोधक वाक्यों के अतिरिक्त, अन्य वाक्यों की समाप्ति पर पूर्ण विराम लगता है । जिन स्थितियों में इसका प्रयोग होता है, वे हैं –

(i) वाक्य के पूर्ण होने पर– तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखा है ।

(ii) किसी व्यक्ति/ वस्तु / घटना / क्रियाव्यापार का सजीव वर्णन करते समय वाक्यांश के अन्त में, जैसे–

– सुसज्जित मंच । मंचपर दो कुर्सियाँ । कुर्सियों के सामने मेज पर गुलदस्ते ।

(iii) दोहे आदि कविता के पहले चरण में पूर्ण विराम की एक पाई (।) और दूसरे चरण की समाप्ति पर दो पाई (।।) लगती है–

– मंगल भवन अमंगलहारी ।

द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी ।।

4. **प्रश्नसूचक चिह्न (?)** : प्रश्न पूछने के लिए प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में

– क्या तुम बीमार हो ? तुम्हारा भाई कौन है ? तुम कौन हो ?

5. **विस्मयादिबोधक चिह्न (!)** : यह चिह्न विभिन्न प्रकार के भावों (हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय, भय, कामना) को व्यक्त करने के लिए लगाया जाता है–

वाह ! तुमने अच्छा किया !

राम ! राम ! मेरे सामने उसका नाम न लो !

हाय विधाता ! यह क्या हो गया !

हे ईश्वर ! उन्हें सद्बुद्धि दें !

6. **विवरण चिह्न (:–)** : जब एक सामान्य बात कहकर, उसके बाद उसका विवरण क्रम से दिया जाता है तब यह चिह्न लगाया जाता है ।

लिंग के दो भेद हैं :– पुंलिंग और स्त्रीलिंग

7. **निर्देशक चिह्न (–)** : वाक्य में किसी पद का अर्थ अधिक स्पष्ट करने के लिए निर्देशक चिह्न का प्रयोग होता है ।

(i) किसी कथन की व्याख्या के लिए–

मनुष्य कम से कम दो चीजें चाहता है– सुख और शान्ति ।

(ii) वार्त्तालाप में किसी के कथन को उद्धृत करने के पूर्व–

शिक्षक – पृथ्वी सूर्य के चारों और क्यों घूमती है ?

(iii) शब्द विशेष पर बल / जोर देने के लिए–

ये नेता – अपने उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन नेता – देश को अंधकार में ढकेल देंगे ।

(iv) किसी अवतरण के बाद लेखक के नाम के पहले–

''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।'' – लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ।

8. **योजक चिह्न (-)** : निम्नलिखित स्थितियों में इसका प्रयोग होता है–

(i) द्वन्द्व समास में – फल-फूल, तन-मन-धन, जीवन-मरण ।

(ii) एकार्थक शब्दों के बीच – समझ-बूझ, भोग-विलास, खाना-पीना ।

(iii) (का/ की / के) के बदले दो शब्दों के बीच – राम-लीला, कहानी-संग्रह, भाषा-कौशल ।

(iv) शब्दों की द्विरुक्ति में – घर-घर, चलते-चलते, कभी-कभी, धीरे-धीरे ।

(v) पुनरुक्त शब्द के मध्य आए का, न, ही, से आदि के पहले एवं बाद में – ज्यों-का-त्यों, कोई-न-कोई, मन-ही-मन, कम-से-कम ।

9. उद्धरण / अवतरण चिह्न (‘....’ / “.....”) इसके दो रूप होते हैं - एकल (‘....’) और युगल (“......”) निम्नलिखित स्थितियों में इनका प्रयोग किया जाता है–

(i) किसी व्यक्ति का उपनाम या पुस्तक का नाम एकल उद्धरण चिह्न के भीतर लिखा जाता है–

सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ ने ‘तुलसीदास’ खण्डकाव्य लिखा है ।

(ii) किसी व्यक्ति का कथन ज्यों-का–त्यों उद्धृत करने के लिए युगल उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है–

गाँधीजी ने कहा था, “करो या मरो ।”

10. लाघव या संक्षेप चिह्न (०) – जब संक्षेप करने के विचार से पूरा नाम या शब्द न लिखना हो, तो उसका प्रतीक रूप आदि वर्णों का प्रयोग करके प्रत्येक के बाद इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।

‘मास्टर ऑफ आटर्स’ के लिए एम.ए. (M. A.)

‘बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजूकेशन’ के लिए बी.एस्.ई. (B.S.E.)

11. कोष्ठक ( ) [ ] { }

उक्त सभी प्रकार के कोष्ठक चिह्नों का प्रयोग सामान्यत: गणित में होता है । भाषा में इनका विशेष व्यवहार है ।

(i) विकल्प या अर्थ को सूचित करने के लिए–

मारुतनन्दन (हनुमान) राम के अनन्य भक्त थे ।

राम ने लंकाधिपति (रावण) को बाण से मारा ।

(ii) क्रमसूचक अंकों या अक्षरों के दोनों ओर–

(१) (२) (क) (ख)

अभ्यास

1. विराम चिह्नों का प्रयोग क्यों किया जाता है ?
2. अर्द्धविराम चिह्न का प्रयोग करके एक वाक्य बनाइए ।
3. उद्धरण चिह्न का प्रयोग कहाँ होता है ? दो उदाहरण दीजिए ।
4. **निम्नलिखित गद्यांश में उचित स्थानों पर विराम चिह्न लगाइए :**

   मोहन – सोहन मैंने सुना है तुम्हारे घर में चोरी हो गयी है

   सोहन – नहीं नहीं चोरी तो मेरे पड़ोसी की हुई थी हमारी नहीं

   मोहन – तुमने क्या पुलिस चौकी में रिपोर्ट लिखवाई

   सोहन – मैं क्यों लिखवाऊँ चाचाजी तो गये थे

   मोहन – राम राम कैसा जमाना आ गया

5. **'क' स्तंभ में दिए गए विराम चिह्नों के साथ 'ख' स्तंभ के उपयुक्त नामों का मिलान कीजिए ।**

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
( )	अल्पविराम
;	विस्मयादिबोधक चिह्न
,	कोष्ठक
-	निर्देशक चिह्न
!	अर्द्धविराम
०	योजक चिह्न
?	उद्धरण चिह्न
' '	लाघव / संक्षेप चिह्न
–	प्रश्नवाचक चिह्न

●

अध्याय - 10

निबन्ध लेखन

निबन्ध का अर्थ है - अच्छी तरह बँधा हुआ । इसमें लेखक अपने भावों और विचारों को अच्छी तरह बाँधकर यानी सुसंगत और सुगठित रूप से अपनी भाषा-शैली में प्रस्तुत करता है । इसमें उसे अपनी बात खुलकर कहने की छूट रहती है । निबंध विषय और स्तर के अनुसार छोटा या बड़ा हो सकता है, किन्तु अपने आप में पूर्ण होता है ।

निबंध की भाषा विषय के अनुकूल और व्याकरण सम्मत होनी चाहिए । वाक्य संक्षिप्त, सरल और बोधगम्य होने चाहिए ।

स्तर की दृष्टि से निबंध दो प्रकार के होते हैं - (i) वस्तुपरक, (ii) वैयक्तिक या आत्मपरक ।

'वस्तुपरक निबंध' में लेखक अपनी ओर से कुछ नहीं जोड़ता । बिना पूर्वाग्रह या पक्षपात से जैसा देखता है वैसा ही घटना या दृश्य का वर्णन करता है ।

'वैयक्तिक निबंध' में लेखक के व्यक्तित्व की छाप रहती है । वह अपने ढंग से विषय की समीक्षा करता है । वह विषय के अच्छे गुणों को उभारकर रख सकता है या कमियों को खोलकर सामने ला सकता है । वह विषय की प्रशंसा करके उसकी महत्ता बढ़ा भी सकता है । ऐसे निबंध साहित्यिक कोटि में आते हैं और उच्चस्तर के माने जाते हैं ।

शैली की दृष्टि से निबंध चार प्रकार के होते हैं - (i) वर्णनात्मक (ii) विवरणात्मक (ii) विचारात्मक (iv) भावात्मक ।

'वर्णनात्मक निबंध' में देखे-सुने गए स्थानों, त्यौहारों, वस्तुओं, या प्राकृतिक दृश्यों आदि का वर्णन होता है । 'विवरणात्मक निबंध' में घटनाओं' या व्यक्ति के जीवन का क्रमबद्ध विवरण दिया जाता है । 'विचारात्मक निबंध' में विचार या चिन्तन की प्रधानता रहती है ।

इसमें लेखक किसी समस्या पर तर्क सहित अपनी सहमति या असहमति प्रकट करता है । इसमें लेखक अपनी विश्लेषण क्षमता, बुद्धिमत्ता का परिचय देता है । निबंध की भाषा गंभीर होती है और विचारों की तर्कसंगत पुष्टि की जाती है । 'भावात्मक निबंध' में भावों की प्रधानता रहती है । इसमें लेखक की आत्मीयता झलकती है । वह पाठक के हृदय को प्रभावित करने का प्रयास करता है । वह अपनी कल्पना और अनुभूति के आधार पर विषय के प्रति अपना दृष्टिकोण रखता है ।

निबंध में मुख्यत: तीन भाग होते हैं - (i) प्रस्तावना (ii) विषय प्रतिपादन (iii) उपसंहार ।

(i) **प्रस्तावना** : प्रस्तावना या भूमिका में विषय का सामान्य परिचय दिया जाता है । घर के द्वार से या शरीर के सिर से इसकी तुलना की जा सकती है । प्रस्तावना का आरंभ रोचक, प्रभावशाली, संक्षिप्त और प्रासंगिक होना चाहिए ।

किसी कविता की पंक्ति, कहावत या महान लेखक के दृष्टांत से निबंध प्रांरभ किया जा सकता है । इनमें विषय का अर्थ, उसकी परिभाषा और महत्व बताया जाता है ।

(ii) **विषय प्रतिपादन** : विषय प्रतिपादन के सोपान पर विचारों को विभिन्न इकाइयों में विभाजित करके, क्रमबद्ध रूप से और तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है । प्रतिपादित विषय को पुष्ट और प्रमाणित करने के लिए प्रसंगानुकूल विभिन्न उद्धरणों, तर्कों और प्रमाणों का उल्लेख किया जाता है । प्रत्येक इकाई को अलग अलग अनुच्छेदों में रखा जाता है । विचारों का पल्लवन संतुलित रूप से किया जाना चाहिए । उसमें अनावश्यक विस्तार या तथ्यों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए ।

(iii) **उपसंहार** : यह निबंध का अंतिभ सोपान है । इसमें लेखक सारे विचार विमर्श के उपरांत ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचता है, जो पाठक को संतोषजनक लगे । एक अच्छा निबंध पाठक पर स्थायी प्रभाव छोड़ जाता है ।

निबंध लेखन एक कला है । इसके लिए सोचने-समझने वाली बुद्धि, निरीक्षण करने वाली पैनी दृष्टि और अनुभव करने वाले हृदय की आवश्यकता होती है । इसलिए विद्यार्थियों को बड़े मनोयोगपूर्वक निबंधलेखन का अभ्यास करना चाहिए ।

अध्याय - 11

अपठित अनुच्छेद

जिस पाठ को पहले कभी न पढ़ा हो या न देखा हो, उसे अपठित पाठ या अनुच्छेद कहते हैं । अपठित अंश को पढ़ने से उसके मुख्य मुद्दों को आसानी से समझा जा सकता है । उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए जा सकते हैं । नीचे ऐसे अपठित अनुच्छेद दिए जा रहे हैं । आपको उसमें से उत्तर लिखना पड़ेगा । इससे आपकी बोध-शक्ति और भाषाई क्षमता की जाँच हो जाएगी ।

अपठित अनुच्छेद के उत्तर देने से पहले :

आपका काम :

(i) मूल अवतरण को दो-तीन बार पढ़ लेना चाहिए ।

(ii) मुख्य विचार-बिन्दुओं को रंखांकित कर देना चाहिए ।

(iii) प्रश्नों के अनुसार उत्तर ढूँढ़ लेना चाहिए ।

(iv) कहीं-कहीं शब्द-जाल में फँसे उत्तर को पहचान लेना चाहिए ।

(v) उत्तर सरल, संक्षिप्त और अपनी मौलिक भाषा में देने चाहिए ।

(vi) अनावश्यक शब्द-प्रयोग से बचना चाहिए ।

(vii) अवतरण में आए शब्दों को छोड़ अपने शब्दों में ही लिखना चाहिए ।

(viii) प्रश्न के काल के अनुसार उत्तर होने चाहिए ।

उदाहरण

कुछ लोग सामान्यत: विज्ञान का समर्थन करने के साथ-साथ धर्म की उपेक्षा करते हैं । वे वैज्ञानिक सत्य का गुणगान करते हैं । धर्म को अंधविश्वास कहकर उसकी हँसी उड़ाते हैं, पर वास्तव में दोनों का क्षेत्र अलग-अलग होते हुए भी दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं । धर्म मानव के हृदय का विस्तार करता है; मानवीय गुणों और आदर्शों के प्रति उसे आकर्षित करता है; उसे कर्त्तव्य के प्रति सजग कर देता है । विज्ञान मानव की बुद्धि का विस्तार करता

है; सत्य का अन्वेषण करता है; प्रकृति के रहस्य का उन्मोचन करता है । धर्म शांति देता है । विज्ञान सुख देता है । दोनों मानव का कल्याण करते हैं ।

प्रश्न :

(i) लोग सामान्यत: क्या करते हैं ?

(ii) लोग किसकी हँसी उड़ाते हैं ?

(iii) धर्म क्या-क्या करता है ?

(iv) विज्ञान क्या-क्या करता है ?

(v) मानव का कल्याण कौन करते हैं ?

उतर :

(i) लोग सामान्यत: विज्ञान का समर्थन करने के साथ-साथ धर्म की अपेक्षा करते हैं ।

(ii) लोग धर्म को अंधविश्वास कहकर उसकी हँसी उड़ाते हैं ।

(iii) धर्म मानव के हृदय का विस्तार करता है; मानवीय गुणों और आदर्शों के प्रति उसे आकर्षित करता है; उसे कर्तव्य के प्रति सजग कर देता है ।

(iv) विज्ञान मानव की बुद्धि का विस्तार करता है; सत्य का अन्वेषण करता है, प्रकृति का रहस्य खोल देता है ।

(v) धर्म और विज्ञान दोनों मानव का कल्याण करते हैं ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) कुछ लोग मानते हैं ाक सदाचार का पालन करने से कोई लाभ नहीं है । भ्रष्टाचार करने से कोई नुकसान नहीं है । उनके मन का तर्क है कि भ्रष्टाचारी को कोई दंड नहीं मिलता, अपने किए पर शर्म नहीं आती । वे पाप से नहीं डरते ऐसे लोगों का मन नास्तिक है, सदाचार मानव जाति का गुण है, भ्रष्टाचार दोष है । गुण से प्रेम और दोष से भय होना चाहिए । दोष से आज भय नहीं हुआ तो कल अवश्य होगा ।

उस दिन विवेक दु:खी होगा । अपनी गलती के लिए पछताएगा । उसकी चिंता बढ़ेगी । चिंता से रोग उत्पन्न होगा । रोग से अकाल-मृत्यु होगी । अब यह प्रश्न है कि आज विवेक की सलाह मानें या मन को खुला छोड़ दें ।

प्रश्न :

(i) कुछ लोग भ्रष्टाचारी के पक्ष में क्या तर्क देते हैं ?

(ii) मानव-जाति के गुण-दोष कौन-कौन हैं ?

(iii) कब दोष से भय होगा ?

(iv) चिंता बढ़ जाने का परिणाम क्या होगा ?

(v) आज हमारे सामने क्या प्रश्न है ?

(ख) हम सामाजिक प्राणी हैं । हम अपना जीवन अकेला बिता नहीं सकेंगे । हम घर से निकलते ही विभिन्न लोगों से विभिन्न मौके पर मिलते हैं। हम जिनसे अधिक मिलते-जुलते हैं, उन्हें अपना मित्र बना लेते हैं । बड़ी सावधानी से मित्रता करनी चाहिए, क्योंकि हम पर उनकी संगति का प्रभाव पड़ता है । इसलिए किसी को मित्र बनाते समय उसकी आदतों और पूर्व आचरण पर विचार करना चाहिए । किसी का हँसमुख चेहरा, चापलूसी बात, कार्यों में चतुराई देखकर मोहित होकर उससे मित्रता करने से बाद में पछताना पड़ता है । मित्र का विचार, संस्कार, आचार, व्यवहार और रुचि हमारी तरह होनी चाहिए । सच्चा मित्र निर्लोभ, विश्वास-पात्र, प्रेरणादायक तथा सहायक होता है; वह जीवन-संघर्ष में साहस दिलाता है । सफलता पाने से खुश होता है ।

प्रश्न :

(i) हम किन्हें अपना मित्र बना लेते हैं ?

(ii) हमें क्यों सावधानी से मित्रता करनी चाहिए ?

(iii) किसी को मित्र बनाते समय किस पर विचार करना चाहिए ?

(iv) हमें कब पछताना पड़ता है ?

(v) सच्चा मित्र कैसा होता है ?

●

अध्याय - 12

मुहावरे और कहावतें

मुहावरे पदबंध होते हैं । ये अभिधामूलक अर्थ प्रकट न करके लाक्षणिक अर्थ प्रकट करते हैं । अपने कथन को सटीक और सशक्त बनाने के लिए भाषा में इनका बड़ी मात्रा में प्रयोग होता है । इनसे भाषा में सौंदर्य बढ़ जाता है ।

कहावतों को लोग परंपरा से कहते-सुनते आते हैं । कहावत के पीछे कोई कहानी होती है । इसमे अनुभूति की राशि संचित रहती है । उदाहरण के द्वारा किसी को सजग करने के लिए इनका प्रयोग किया जाता है । इनसे कथन असरदार बन जाता है ।

यहाँ कुछ मुहावरों और कहावतों के उदाहरण दिये जा रहे हैं ।

मुहावरे

मुहावरे	अर्थ	प्रयोग
अंधे की लकड़ी	एक मात्र सहारा	बुढ़िया के लिए उसका बेटा अंधे की लकड़ी है ।
आँखों में धूल झोंकना	धोखा देना	तुम मेरी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते ।
आकाश पाताल का अंतर	बहुत बड़ा अंतर	उसकी कथनी और करनी में आकाश-पाताल का अंतर है ।
आग बबूला होना	बहुत क्रोध करना	पिताजी किसी का दोष देखते ही आग बबूला हो जाते हैं ।
ईद का चाँद होना	बहुत दिन के बाद दिखाई पड़ना	शादी के बाद तुम तो ईद के चाँद बन गए हो ।

कलेजे पर साँप लोटना	ईर्ष्या से जलना	किसी की उन्नति देखकर तुम्हारे कलेजे पर क्यों साँप लोटता है ?
कानों पर जूँ तक न रेंगना	अनसुनी करना	मैंने उसे पढ़ने के लिए बहुत समझाया, पर उसके कानों पर जूँ तक न रेंगी ।
खरी-खोटी सुनाना	भला-बुरा कहना	तुम किसी को खरी-खोटी मत सुनाओ।
खाक में मिलाना	बर्बाद करना	कुपुत्र वंश-मर्यादा को खाक में मिला देता है ।
गुड़ गोबर करना	काम बिगाड़ना	तुमने सारा काम गुड़ गोबर कर दिया ।
गोबर गणेश	मूर्ख	वह तो गोबर गणेश है , उसे क्या समझाओगे ?
घाव पर नमक छिड़कना	दु:खी को और अधिक दु:ख देना	उसकी नौकरी चली गई, इतने में साहूकार ने रुपये माँगकर घाव पर नमक छिड़क दिया ।
छाती पर पत्थर रखना	बहुत बड़ी हानि होने पर दिल को कड़ा करना	बेटा मर गया तो माँ को छाती पर पत्थर रख कर सब कुछ सहना पड़ा ।
टेढ़ी खीर	कठिन काम	मेरे लिए रस्सी पर चलना टेढ़ी खीर है ।
डींग मारना	बढ़ बढ़कर बातें करना	डींग मत मारो । मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ ।

दाँतों तले अंगुली दबाना	आश्चर्य-चकित रह जाना	जादूगर का जादू देखकर मैं दाँतों तले उँगली दबाकर रह गया ।
दुम दबा कर भागना	डरकर भाग जाना	पुलिस को देखते ही चोर दुम दबाकर भाग गया ।
नाक कटना	बदनामी होना	ऐसा कुछ न करो, जिससे परिवार की नाक कट जाए ।
पानी-पानी होना	लज्जित होना	बेटे ने चोरी की तो पिताजी पानी-पानी हो गए ।
फूला न समाना	अत्यधिक प्रसन्न होना	बच्चे खिलौने देखकर फूले न समाए ।
बीड़ा उठाना	जिम्मेदारी लेना	मैं इस काम का बीड़ा उठाता हूँ ।
लकीर का फकीर होना	पुरानी प्रथा पर चलना	जो लकीर के फकीर होते हैं, वे नई बात स्वीकार नहीं करते ।
लोहा मानना	अधीनता स्वीकार करना	महाराणा प्रताप ने अकबर का लोहा नहीं माना ।
श्री गणेश करना	आरंभ करना	मैं आज इस काम का श्रीगणेश करूँगा ।
हाथ धो बैठना	खो देना	ईमानदारी से काम करो, नहीं तो नौकरी से हाथ धो बैठोगे ।

कहावतें

अँधा क्या चाहे, दो आँखें	– मनचाही वस्तु का बिना प्रयत्न से मिलना
अँधों में काना राजा	– गुणहीन लोगों में अल्प गुणवाले का आदर होना ।
अधजल गगरी छलकत जाय	– ओछा आदमी बहुत इतराता है ।
अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत	– अवसर बीत जाने पर अफसोस करना व्यर्थ है ।
अपनी गली में कुत्ता भी शेर	– अपने क्षेत्र में निर्बल भी शक्ति-प्रदर्शन करता है ।
आगे कुआँ, पीछे खाई	– दोनों ओर विपत्ति ।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे	– अपना दोष स्वीकार न करके पूछनेवाले को दोषी ठहराना ।
ऊँची दुकान, फीका पकवान	– केवल बाहरी दिखावा ।
एक पंथ दो काज	– एक ही साधन से दो-दो काम होना ।
काला अक्षर भैंस बराबर	– अनपढ़ आदमी
चोर-चोर मौसेरे भाई	– एक प्रकार के स्वभाववाले जल्दी ही मिल जाते हैं ।
जल में रहकर मगर से वैर	– किसी के अधीन रहकर दूश्मनी नहीं करनी चाहिए ।

जिसकी लाठी उसकी भैंस	– ताकतवर की ही विजय होती है ।
डूबते को तिनके का सहारा	– असहाय को थोडा-सा सहारा भी बहुत होता है ।
दूर के ढोल सुहावने	– दूर की वस्तु अच्छी लगती है ।
धोबी का कुत्ता न घरका न घाट का	– कहीं का न रहना, सभी में असफल
नाच न जाने, आँगन टेढ़ा	– काम में खुद अयोग्य, पर दूसरे पर दोष लगाना ।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे	– दूसरों को उपदेश देना आसान है ।
बंदर क्या जाने, अदरख का स्वाद	– अयोग्य व्यक्ति अच्छी वस्तु का महत्व समझ नहीं सकता ।
बिल्ली के भागों छींका टूटा	– संयोग से पारिस्थिति अनुकूल होना ।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत	– मन की दृढ़ता या दुर्बलता पर सब कुछ निर्भर है ।
मुँह में राम बगल में छुरी	– दिखाने के लिए मित्रता, पर वास्तव में शत्रुता ।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते	– नीच लोग डरने से ही काम करते हैं ।
हाथ कंगन को आरसी क्या	– प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं है ।
होनहार बिरवान के होत चिकने पात	– महान बनने के लक्षण बचपन से ही प्रकट होने लगते हैं ।

◆ ❖ ◆

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त' के बारे में

'उरतृप्त' उपनाम से व्यंग्य जगत में प्रसिद्ध डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा अपनी भावनाओं और विचारों को अत्यंत ईमानदारी और गहराई से अभिव्यक्त करते हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण उनके लेखन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान से मिलता है। वे न केवल एक प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं, बल्कि एक कवि और बाल साहित्य लेखक भी हैं। उनके व्यंग्य लेखन ने उन्हें एक विशेष पहचान दिलाई है। उनका व्यंग्य 'शिक्षक की मौत' साहित्य आजतक चैनल पर अत्यधिक वायरल हुआ, जिसे लगभग दस लाख से अधिक बार पढ़ा और देखा गया, जो हिंदी व्यंग्य के इतिहास में एक अभूतपूर्व कीर्तिमान है। उनका व्यंग्य-संग्रह 'एक तिनका इक्यावन आँखें' भी काफी प्रसिद्ध है, जिसमें उनकी कालजयी रचना 'किताबों की अंतिम यात्रा' शामिल है। इसके अतिरिक्त 'म्यान एक, तलवार अनेक', 'गपोड़ी अड्डा', 'सब रंग में मेरे रंग' भी उनके प्रसिद्ध व्यंग्य संग्रह हैं। 'इधर-उधर के बीच में' तीसरी दुनिया को लेकर लिखा गया अपनी तरह का पहला और अनोखा व्यंग्य उपन्यास है। साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान को तेलंगाना हिंदी अकादमी, तेलंगाना सरकार द्वारा श्रेष्ठ नवयुवा रचनाकार सम्मान, 2021 (मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के हाथों) से सम्मानित किया गया है। राजस्थान बाल साहित्य अकादमी के द्वारा उनकी बाल साहित्य पुस्तक 'नन्हों का सृजन आसमान' के लिए उन्हें सम्मानित किया गया है। इनके अलावा, उन्हें व्यंग्य यात्रा रवींद्रनाथ त्यागी सोपान सम्मान और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों साहित्य सृजन सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। डॉ. उरतृप्त ने तेलंगाना सरकार के लिए प्राथमिक स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर कुल 55 पुस्तकों को लिखने, संपादन करने और समन्वय करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बिहार, छत्तीसगढ़, तेलंगाना की विश्वविद्यालयी पाठ्य पुस्तकों में उनके योगदान को रेखांकित किया गया है। कई पाठ्यक्रमों में उनकी व्यंग्य रचनाओं को स्थान दिया गया है। उनका यह सम्मान दर्शाता है कि युवा पाठक गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी लेखन की पहचान कर सकते हैं।

सरल, सुगम, संक्षिप्त

व्याकरण

सुरेश कुमार मिश्रा